

हिमाचल ज्ञान कोष माला

हिमाचल प्रदेश के
घटना और श्रम प्रधान गीत
(मूल गीत हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादन

एम भार ठाकुर
डा बशीराम शर्मा
रमेश जसरोटिया



हिमाचल कला सस्कृति और भाषा अकादमी
शिमला

हिमाचल प्रदेश के
घटना और श्रमप्रधान गीत

प्रकाशक सचिव, हिमाचल कला, संस्कृति
और भाषा अकादमी
क्लिफ एण्ड एस्टेट शिमला-171 001

प्रकाशकाधीन
प्रथम संस्करण 1986
प्रतिया 1 000
मूल्य रु 15 00

Himachal Pradesh Ke Shram Aur Ghatnapradhan Geet a collection of songs on true incidents & dignity of labour of Himachal Pradesh with Hindi translation Published by the Secretary, Himachal Academy of Arts culture & Languages Cliff end Estate Shimla 171 001 and Printed at M/s New Printers Green Field Cottage (Near Ice Skating Rink) Shimla 171 001

प्राक्कथन

हिमाचल प्रदेश सस्कृति की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध भूत है। ऊची पर्वत श्रृंखलाओं से घिरे इस भूखण्ड में प्रागैतिहासिक काल के सांस्कृतिक अवशेष जीवन्त रूप में सुरक्षित हैं क्योंकि 'ग्राम देव प्रथा ने ग्रामीण मायताओं को बदलने की स्वीकृति नहीं दी। प्रदेश का इतिहास लिखित रूप में सुरक्षित रखने के प्रयत्न नहीं हुए परन्तु लोक मानस ने उस गीतों तथा गायनाओं का माध्यम से अमर बना दिया।

लोक मानस को सही ढंग से पहचानने के लिए लोक गीत मशकत माध्यम है। एक पुरानी कहावत है कि एसा मनुष्य नोज पाना असम्भव जिसने कभी दुःख में न तो आसू बहाए हो और न प्रमत्तता में गाना गाया हो। लोकगीतों का विषय कुछ भी हो सकता है परन्तु मानव जीवन में प्रेम घटना तथा श्रम का सर्वाधिक महत्त्व है।

हिमाचल कला, सस्कृति और भाषा अकादमी की स्थापना प्रदेश की सस्कृति साहित्य तथा कलाओं के संरक्षण के उद्देश्य से मन् 1972 ई० में हुई थी। अकादमी द्वारा प्रदेश की सस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर 20 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। सस्कार गीतों की एक पुस्तक 1982 में प्रकाशित हुई और उसी कड़ी में घटना तथा श्रम प्रधान लोक गीतों का यह दूसरा पुष्प आपके सामने है।

श्रम तथा घटनाएँ पंचतीय जनमानस की नियति हैं। इन दोनों विशेषताओं का अभाव में यहाँ का सामाजिक जीवन नीरस हो जायेगा। घटनाएँ सुखद तथा दुःखद किसी भी प्रकार की हो सकती हैं। प्रस्तुत संग्रह में शीघ्र प्रधान गीत यथा—होकरावत, सिंगा वजीर नोतमाम नेगी, कौरव पाठव युद्ध जगता आदि सती गीत यथा—महासती कुड़ी, महासती लोता, महासती नरजी आदि और प्रमगीत तथा श्रमगीत संकलित हैं। इन गीतों में से अनेक पाठकों तथा श्रोताओं के लिए बिल्कुल नए हैं जिन्हें पहले कभी भी प्रकाशित नहीं किया गया है।

इस संकलन में संगृहीत लोकगीत मात्र घटनाओं तथा श्रम से ही सम्बन्धित नहीं हैं बल्कि इनके माध्यम से स्थानीय जन विश्वासों की झलक भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो जाती है। किन्नौर से प्राप्त पितौराम पतिराम गीत में शिखरो पर निवास करने वाले देवी-देवताओं से सम्बन्धित विश्वासों की झलक मिलती है। लाहल से प्राप्त 'दुसीग' गीत में विभिन्न वस्तुओं में सौन्दर्य भावना तथा श्रमगीत 'खुई कोर ये' गाय ता सदर्भ, बिलासपुर क्षेत्र के गीत 'भूली जाया दिलडुआ में

गावि द सागर के बाता स माण्डू
हमरू वाला' तपा 'ही लाम्बू लाह
सुन्दर ढग स सामाजिक व्यवस्था क

— अकादमी द्वारा प्रदान के —

निवेदन

लोकसंस्कृति मानवाकुल का भाष्य है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन का आधोपात संगम रहता है। यहाँ पुराना कुछ नहीं है, सभी कुछ नया तथा ताजा। घटनाएँ बदलती हैं पर मोत अपन नए स्तर में पुरानी धुनों पर आते जाते। लोकसंस्कृति सज्जी सामूहिक धरोहर है उन पर किसी एक का अधिपत्य नहीं है। अतः सम्पूर्ण समाज अपना हितो रचिये तथा उद्देश्य का रक्षा के लए उसे ग्राह्य तथा उपयोगी बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

अलिखित सामाजिक घटनाक्रम का नाम ही लोकसाहित्य है। लोकसाहित्य आवाणी है राग लय तथा ताल है। जब लोकसाहित्य चिंतन-पक्ष को भी साथ मिला कर चलता है तब उसका नाम लोकसंस्कृति हो जाता है। हिमाचल जिला मस्वति और भावा घाटमी प्रदेश की लोकसंस्कृति के प्रलेखन तथा संरक्षण की दिशा में अनेक यात्राओं पर काय कर रही है। लोकगीतों के क्षेत्र में संस्कार गीतों की पुस्तक का प्रकाशन सन 1982 ई० में हुआ। इसके पश्चात् अतः हरि से सम्बंधित साङ्गयाया का संकलन तथा प्रकाशन किया गया। अतः तथा घटनाएँ इस प्रदेश के लोकमानस तथा सामाजिक जीवन की दिनचर्या हैं। अतिथि घटनाएँ घटती है। मानव शक्ति के अधिकारिक उपयोग के लिए यहाँ मशीनीकरण का विकल्प नहीं है। किस प्रकार बड़ी स बड़ी वस्तु को सामूहिक बल से एक से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है, उसके लिए पुरातन का प्रयत्न करने से सम्भवतः वर्षों लग जाए पर तु लोकगीतों का कुछ शक्ति का वायव्य व्यक्तियों में लय के अनुसार धार्य करने के लिए प्रेरणा ही देनी देनी रलिक उनकी शक्ति का अनेक गुणा बढ़ा भी देनी है।

हिमाचल प्रदेश में सम्पूर्ण ज्ञान का आभाव किमा एक पुस्तक में समाहित किया जाना सम्भव नहीं है। इसके लिए हिमाचल ज्ञानकोष योजना तयार की गई है। इस योजना के अंतर्गत सात भागों में विभिन्न विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित की जाएगी। इस योजना के अंतर्गत मातृशिक्षण का प्रकाशन हिमाचल प्रदेश की संस्कृत प्रथम सूची के नीचे से किया जा चुका है। संस्कार गीत तथा घटना और अतः प्रधान गीत इसी विशद योजना के अंग हैं।

इस प्रदेश में लोक कवि बहुत सम्बन्धनशील तथा प्रतिभा सम्पन्न रहा है। एक समालोचक ने ठीक ही कहा था कि सरलता सिद्धहस्त साहित्यकार का सबसे बड़ा गुण है। कर्मों छैला के गीत में कवि कहता है —

हाय वो मेरेया कर्मोंआ छला हे
तेरे साही मणू भी नो हूणा हे
ब्रिफु गले बटरी बलोरी हे
आई मामे भाणजे री जोडो हे

अर्थात् 'कर्मों तुम कितने सुन्दर हो। आप जैसा कोई मनुष्य नहीं हो सकता। ब्रिफु मोड़ पर टाच जल रही है। मामा भा जा की जोड़ी आ रही है।

श्रम के प्रति आहवां हेमरू बोला— हे सार में कितना सटीक है—

हेसह घोला हे सार
रौई रा दार— हे सार
जोर नो लादा— हे सार
देउआ री कार हे सार

अर्थात् 'हेमरू बालिए। रई वश का सहतीर है हे सार। (तुम) जोर नहीं लगाते हे सार। देवता की सीप घ (जोर लगाने के लिए), हे सार। जिसने श्रम का जीवन जीया है उसे पता है कि सामूहिक शक्ति के लिए ये शब्द कितने प्रेरक होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इस प्रकार की सहजता तथा सरलता के अनेक उदाहरण मिल जायेंगे।

घटना तथा श्रम प्रधान गीता के संग्रहको ने उन लोकगीतों को एकत्रित करने के लिए मेहनत की है। अकादमी के भूतपूर्व सचिव श्री एम० आर० ठाकुर ने इन्हे वर्तमान रूप में प्रस्तुत करने के लिए योजना बनाई तथा काय किया। कुमारी विद्या शर्मा ने प्रस्तुत पुस्तक के लोकगीतों के संग्रह का काय मनोयोग से किया है तथा मै० प्रिंटिंग शिमला के मालिक ने इस मुद्रित करने में यागदान दिया। इन सभी महानुभावों का ये पवाद ज्ञापन हमारा कतव्य है।

शिमला 25 दिसम्बर, 1986

डॉ० बशीराम शर्मा

क्रम

गीर्षक

	पृष्ठ
1) मिषा हाबूरावन	1
2) मिषा वजीर	10
3) नोत राम नगी	15
4) नौरव पाडव युद्ध	20
5) न ग्रज माहव	21
6) मेहदी	22
7) जगता	24
8) चरणु	26
9) मामती (महामती कुजी)—I	30
10) महासती कुजी —II	38
11) माई और रूपू	46
12) महासती लोता	52
13) मिषा दाऊद और महासती नरजी	59
14) घनू लोमिषा	65
15) फूला तेई वाहाणीय	66
16) मिषाणिण	68
17) चिडूआ	69
18) आबूआ—ओज रूहणी म्हारे	72
19) हमरू बाला—हे सार	75
20) हा लाम्बू लोहरा	78
21) घुघती (घुघी)	80
22) क्षीऊ चलीए	84
23) डाला राम	86
24) नैणु लाडिए खगटीये	87
25) दिर राम	89
26) पारू मिषा तथा गायता	91

तरी घिया जा हुआ प्रनाम	94
माटना	97
परगु	98
भूली जाया दिग्दुआ	100
घात्रण पाणिय जो मेईए	103
ताल म्हीने दिया हरिया रानी	107
चुक्कया जी घडा	110
शिव गौरजा का विवाह	112
लका दा दान	116
राजा गोपी च द	118
सम्सू बगडा रचाय	121
बली राजे न जग	125
उजारे त आई राणी देवकी	127
घमू सूरमा	132
बुडिया ना माइया	134
कीधर दसे दी आइणी घोबन	137
गञ्जा लो बहणे	139
चैत्र मास का गीत	140
वारा ता बरिया	143
गुरमा गीत	146
नुयीग का गीत	148
खुइ कोर थ	152
होग चर थे	156
कर्मो छेला	158
दजा मरा विजलु एराट	161
ठिडलु पुहाल	164
लुडडी ब्रामणी	165
बुटि सेइ छिक्कणु री काड्डी	166
मेडा दिया पाहलणु आ	167
कलुआ मजुरा दूर तरा डेरा	169
पितीराम पिराम फुआल	173

मिया होकूरावत

वर्तमान सिरमौर हिमाचल प्रदेश का एक जिला है। यहाँ पर हजारों वर्ष तक राजतन्त्रीय शासन रहा है। जब कभी राजा अल्पायु या निबल होता तो राजकर्मचारी उस पर हावी हो जाते थे व प्रजा पर मनमाना शासन थोपते थे। गिरीपार के वासियों ने इस अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध समय समय पर आवाज उठाई। यद्यपि शासन के नूर हाथों ने उसे कुचल कर रख दिया पर शहीदों की यादगार लोक गीतों के माध्यम से सदा अमर रही। इन शहीदों और अन्याय के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने वालों में घण्डोरी निवासी मिया होकूरावत का प्रथम स्थान है जिसने १६८० ई० के लगभग अन्याय को सहन करने के स्थान पर अपने प्राणों की आहुती देना श्रेष्ठकर समझा। उसकी याद में आज भी गीत गाया जाता है।

संग्रहण व अनुवाद

प्रो० रूप कुमार शर्मा

मिया होकरावत

पानी गाणी ठाहरी देवी दुरिगा माई
भूले देणे विसरे यादो दिलाई ।
बोहता देणा शादडा पाछडे पाई
आतरो देणे होकू रे, दो चारो गाई ।
दोलू रुप मोहते घुण्णो खाई
खुमली थोई सीणाए चोतरू री मानलो पाई ।
खुमली दी बाता थोई ली होकूवे लाई
जुभ देणे मारे राजा नोइणे खे लाई ।
खुमली खे उचले कोटी शा मुपलिया गनाग शा सुदामा
रजाणा शा घरता पजवाणा चौरास शा सामा ।
नोहरे शा मागतू सगडाह शा सघडई, सेज शा बाजो,
शोड शा खेना, घामला शा महाटा भूटली मानल शा जावो ।
देउठी मुलो थोई खुमली पाई,
पाची शो नोइया देणे नाइणी मिजाई ।
खुमली दी रुपो मरोली गुणा
ऐका चेई रोझा पाई लोवे लोटे दा लूणी ।
टिका रोझा छुटी राजे रा व्याणा
नोइणी होई रोधा भीतरा दोलू माहते रा जाणा ।
मोहते लुण दोलूवे कुशी कुशिए खाई
मामला लुझा राजो दा दुजा लिए उगाई ।
होकू लागी सिगटे तोवे नोइणी री बाई
हाडो भाउणो एकियो नोइणी खे जाई ।
नोइया देणे गाव रे मेरे सिते पोठाई
दोलू देणे मोहते री गुजो कोटाई ।
देव थोझा शरगुल शाउना लाई

जुधो देवा मोहते सात देणा जीताई ।
 जीती जाउ भारती सीसे मोने पाछु भाउ,
 खाडे लिभाउ काने बकरा देउठी दाभाऊ ।
 ऐथे गाई लागा बुलादा मिया तेरा बारू,
 वाईडा पाझो छेवडियो मढारो रा दारू ।
 पोख रोझो नोइया री घडोरी ठाहरी दो घाई,
 एक लाई दुजे खे रामा रूमोणी घाई ।
 फौजजो चली होवू री कण्डारी री धारो,
 कण्डारो शो मिया घुडोउरी खे हेरो ।
 मात छुटो जीरी भीभणी रो भूटडी रो दूधा
 ठाई छूटी घुडोउरी री कालीमो री सेरा ।
 तेरी वे राउता खाई केमिए बुधो
 चली रमा जुभों खे, चीत कारा दूधो ।
 जादा लागा बादा जामटे री वाटो,
 घादी भेटो घाटी दो दुडे उलिमा रो हाटो ।
 मोनी दे राउतिघा घाडा ला घाटो,
 लादे केयू ने हाटियो नोइणी री बांता ।
 बातो जाणी नोइणी री जाई रोई खोटी,
 नाइणी पाकी रोई भीतरी दौलू मोहते री रोटी ।
 फुलो कोरो फुलीदू, ढालिटी दाई,
 फौजजो रोई राउतो री जामटे घाई ।
 जामटे सोई देवी मोनी दिखो खे घाई
 भरजो थोई देवी खे हाथों जोडियो लाई ।
 देवी थोई जामटे री गरणे लाई,
 माता तुए देखिए हरती न लाई ।
 मडखे नोइणी पाडिडा चेली,
 जीता लिमाउवा भारतो तो देउवा छेली ।
 जामटे री देविए घुणो ने घुणो,
 लोटा बाला पाणीरा बकरा ने घुणों ।
 तादी मिया राजपूती घाई,
 चौडाई जुते राउतिघा देवी दी लाई ।
 से जे कारे देविए मुना भाउले तेरे,
 राजे सिती भारीता जीती लियाउणो मेरे ।

फौजजो लागी हाकू री शिया पुरी जाई,
 शिया पुरी याई गादी सातू लुए याई ।
 जुठे निजठे सातू लुए बाई उदे पाई,
 बाई एजी राणरी, भुटीणी लाई ।
 घाही घुघ्रा दोलूए मुनी दे घाटों,
 उधी लगी फौजजो मियां रा नाइणी री बाटा ।
 नोइणी थोई चुगाना दी चोकमी पाई,
 चिटा थोघ्रा झडा सुदामे घोगाना गौडाई ।
 बाता मिया सितीबुला ला ज्वाला,
 बीचो कौरणा चुगानो, राठतिया मोहाला ।
 होकू घाघ्रा मिया मोहते खे बाजु लाई
 काजु थोघ्रा बातों सीता मोरमाई ।
 मानो ने दालू मेरे मौना रा जाणा
 राज हूघो चेई राजे शो जु घासो इयाणा ।
 दोलू दियो माहतू होकू खे काजी
 तेरे सीते ऋगडे खे हा भाजिए भाजी ।
 दोतिया कौरणा मिया मोहलो रा फेरा
 भोगडा देणा वोसाए जेशा जी चाउला तेरा ।
 भाजी लोणी मिया भण्डारा री रोटी,
 बकरा दिते काटणो खे सुतनो खे कोठी ।
 भाई गिघ्रा मिया दोलू रे फरो
 गेगो खाई मिया जेरे कुडो रे फेरो ।
 खोटा मोहता दालू कारना वेने घिजा
 राजे सीता जुझो ता कोवे ने सीजा ।
 भागी लोई सासो दी कालजे दे दागो
 भाज की कोटली रातुटी दुती खुली भागो ।
 रातो थोई रोइणा, बोडी ठाइए काटो
 होकू रोवे मिंगटे जिशी बरादुवारी दे जाई
 भेट राजे खे मुरो पाई जयदेवा धाई ।
 पोडी गिघ्रा होकूघ्रा बिचो दा गेरी
 भेटा पाई होकू मियां पीठ दोलू फेरी ।
 होकू घीमो सिगटे उडो पुडो हेरो

जाणी पाई होक् मियां दोनू रे फेरी ।
 तानी रोई होक् रोजपूती घाई,
 खाडा लोभा चाकरो गाहे हेराई ।
 दोलू हेर चाकरो बुझोणी जाई लाई बुझाई,
 मो धी जोई रोई चाकरो री होवू सीती फेराई ।
 बुलो ने दोलू मेहतिया नामुमझी, री बातो,
 गाली देशला षाटी मारुवा तेरी जाता ।
 तिनी तोवे चाकरे थोभा घेरिया लाई,
 दोले थोई मोते खे खाडे री पाई ।
 दोलू हाले मोहते रे बाडिये भागो
 धा तेरा होक्घा, खम्भे दा लागो ।
 लाडो रोघो चुटी मानजे सिगटे खे मोत थोई लाई
 मानीजए बाइडा जाईवे, सावी खे रामा दमणी मेरी घाई ।
 खाडे री लागी गोइरी शाटो, मारो चाकरा तैरो,
 बारा गुरजा दुमारी दा, हाकू जिया दुणी दा शरा ।
 होक् थामा राढा, खेलणा लाई,
 कोठे गाई थोई इट तरे माथ दी लाई
 मुक्ड छूटे लोहू रे, उवे भोसमानो खे जाई,
 होक् थोभा चाकरे घेरो दा पाई ।
 भाइडी शा बाघ थोभा पाछणा लाई
 हेर मेरिया मिया, मागणी ने खाई ।
 जोउदे सांसे थोभा छेउडी देखाई
 भूई दा पाडा घोनिभो, सासो उडाई ।

मिया होकरावत

जन्म भूमि तथा दुर्गा माता तुम्हें शत शत प्रणाम
 भूले बिसरे तुम्हें याद दिला देना ।
 बढ़त सा विवरण पीछे छाड़ कर,
 दो चार शब्द होकर के प्रस्तुत है ।
 दालू मेहता ने प्रजा पर प्रत्याचारों का कहर डाय है
 निवारण हेतु ग्राम-मुखिए मानल की बठक में शामिल हुए ।
 पचायत में होकर मिया कहने लगा
 भाइयो हमने नाहन में मेहता के विरुद्ध विवाह करना है ।
 पचायत में कोटी घिमान में मुगलिया गनोग से मुदामा
 रजाणा से घरता पजवाण चौरास से मामा ।
 नोहरे से मगतू मगडाह से सगदई सैज से बजो
 गौड से खेना घामना में महटा नूटली से जावा शामिल हुए ।
 मन्दिर के नीचे पचायत का आयोजन हुआ
 पाच सौ नौजवानो को नाहन भेजने का निश्चय हुआ ।
 पचायत में बड़ी गर्मा गम बहस हुई
 एकना बनाय रखने के लिए लोटे लूण वाली कमम दिलाई गई ।
 राजा का युवराज छाटी घबस्था है
 नाहन में दालू मेहता का मनमाना शासन है ।
 दालू मेहता का शासन कसाई से कम नहीं
 राज्य का भूमिकर दोवारा एकथिन किया जा रहा है ।
 होकर और सीगटे को नाहन जाने की उत्कठा थी
 एक बार नाहन घबदय जाना है ।
 गाव के युवको को घर में मेरे साथ भेजो
 नो दालू मेहता की मुछें मुडवा कर रहगा ।
 देव शिरगुल से सलाह मागी गई,

श्रीर नाहन के भ्रमियान की सफलता के लिए प्रार्थना की गयी ।
 भ्रगर नाहन से लड़ाई जीत कर वापस आऊ,
 हे देव ! बडे बकरे के साथ तेरे मन्दिर मे भ्राउ गा ।
 इस पर मिया बार-बार कहने लगा,
 मण्डार से सुसाने को बारूद बाहर डालो ।
 युवा सेना घ डोरी के मन्दिर प्राणण मे भाई
 एक दूसरे को भ्रमिवादन का भादान प्रदान करने लगे ।
 होकू की सेना कण्डारी की पवत चाटी से होकर निकली
 कण्डारी से मिया (होवू) घ-डोरी की हरसत भरी नजर स देखता है ।
 जीरी भीभणी (लाल रग के उत्तम चावल) व युवा भंस का दूध छूट गया
 घ-डोरी की ज-म भूमि व कलम के उपजाऊ खन बिद्युड गए ।
 रावत तेरी बुद्धि पर मोह माया, का पर्दा क्या पड रहा है
 जा रहा युद्ध के लिए व याद कर रहा है दूध को ।
 जमटे की श्रीर चलते-चलते
 प्राध रास्ते मे उसे दुडे उलिया का हाट मिला ।
 मन ही मन होकू रावत सोचने लगा,
 हाटिए नाहन के समाचार क्यों नही सुनाते ।
 नाहन की बातें तो बडी छोटी हैं
 नाहन मे तो दोलू मेहते की तूती बोल रही है ।
 दाई के फूल खिल गए ह
 होकू मिया सेना सहित जमटा ग्राम तक पहुच गया ।
 हाथ जोड कर देवी से भ्रज करने लगा
 श्रीर देवी से परामश की प्रार्थना की ।
 जमटे की देवी की प्रार्थना करने लगा
 माता हार का मुह न दिखवाना ।
 इस श्रीर नाउणी उस पार ग्राम चेली
 भ्रगर विजयी रहा तो बकरे की बलि चढाउगा ।
 जमटे की देवी मे कोई हलचल नही हुई
 लोटा पानी का गिराने पर भी उसने बकरा स्वीकार नही किया ।
 मिया (हाकू) की राजपूती भाई (खून खोल गया),
 उसन जूते सहित देवी को लात मारी ।
 दबी जो तेर मन प्राये करना,
 राजा के विरुद्ध मैं भ्रवश्य युद्ध जातू गा ।

होवू की सेना शियापुर बाउड़ी के पास पहुँच गई,
 शियापुर बाउड़ी के ऊपर सत्तू राने लगी ।
 मुँचे तथा जूँटे सत्तू बाउड़ी के घाँवर डालने लगा,
 रानी की बाउड़ी का जूँठन से घपवित्र करने लगा ।
 जब होवू की सेना नाहन की झार झपंगर हुई,
 ता दोलू ठमे निपटने की योजना बनाने लगा ।
 नाहन चौगान में घाकर सेना टहर गई
 सुलामा ने चौगान में सफे भूँडा गाड़ दिया ।
 मियाँ के साथ ज्वाला विचार विमर्श करने लगा
 बीच चौगान में हमने व दूँको से हप नाद करना है ।
 हावू ने दालू मेहता को स दग भिजवाया
 स देश वाहक में यह सन्देश प्रेषित किया ।
 दोलू तेरी मनमानी नहीं चनेगी,
 राजा की इच्छानुसार राज चाहिए चाहे वह भले ही छोटा है ।
 दोलू मेहता हावू को निमन्त्रण भेजता है
 मैं तुम्हारे साथ कतई लडना नहीं चाहता ।
 मिया तुम कल राजदरवार में घाना,
 जैसा तुम चाहो तुम्हारी इच्छानुसार फैसला होगा ।
 मिया आज तुम सरकारी भोज स्वीकार करा,
 काटने को बकरा दिया व रहने के लिए विश्राम गृह ।
 दालू के फेर में मिया घा गया
 मिया तेरी बुद्धि पर पर्दा पड़ गया है व वह फेर क मवर में उलझ गया ।
 दोलू घोलेबाज है, उसका विश्वास करना भूल होगी
 राजा से भगडा शायद तुम्हें रास नहीं आयगा ।
 सास में भाग सी मडक रही है और कालेज में दद
 आज की रात घगर बीत गई कल माग्य-द्वार खुलेगा ।
 मिया ने रात बड़ी कठिनाई से बितवाई
 रात बीतते ही राज दरवार की घोर खाना हुआ ।
 हावू और सिगटा राजदरवार में पहुँचे
 राजा को सोने की मोहरें मँट की घोर जयदेव कहा ।
 मियाँ तू दोलू के वहकावे में घा गया
 होवू के अभिवादन के पत्तुतर में दोलू पीठ फेरकर बठ गया ।
 हावू व सिगटा इधर उधर देखने लगे

उह दोलू के फँसाए जाल की मनक पड गई ।

तब होक् को राजपूती जोश आया

तलवार को दरवारिया के ऊपर धूमने लगा ।

दोलू मेहता ने दरवारियों की धार इशारा किया,

दरवारी होक् के चारो ओर ऐसा इकट्ठे होने लगे

जैसे शहद के चारो ओर शहद की माखियाँ ।

दोलू तू नासमझी की बात मत कर,

वरना मैं तेरा सिर काट कर रख दूँगा ।

उन दरवारियों के घेरे का शिकजा होक् के चारो ओर बसने लगा,

होक् ने दोलू मेहते पर तलवार का वार किया ।

दोलू मेहता के बड़े माग्य थे

तलवार का प्रहार दोलू के बजाय खम्बे से टकराया ।

तलवार टूट गयी, अपने मानजे सिंगटा को शिक्षा देने लगा,

तू जान बचाकर भाग जा सबका मेरा भक्तिम प्रणाम कहना ।

होक् की तलवारो के प्रहारो से दरवारी बिल्लाने लगे

होक् उनके बीच ऐसा गज रहा था जैसे दून में शेर ।

होक् की तलवार करतब दिखा रही थी

कोठे पर से एक ईंट होक् के माथे पर जा टकराई ।

लहू को घारे निकल कर ऊपर का फव्वारे की तरह जाने लगी,

दरवारियों ने होक् को पूरे घेर में ले लिया ।

बाध के समान होक् का आखेट किया जा रहा है,

धय मिया, तू रण-क्षेत्र से नहीं भागा ।

जब तक सास रही वीरता दिखाई,

जब सास उड़ी तभी भूमि पर गिरा ।



सिगा वजीर

१८६६ ई० से पूर्व सिरमौर रियासत १२ वजीरियो (परगनो) में बटी हुई थी। प्रत्येक वजीरी का अधिकारी एक वजीर होता था जिसका कार्य कर एकत्रित करना तथा अपराधियों की सूची राजा को देना होता था। ये वजीर क्रूर ऐश्वर्यपरस्त तथा भ्रष्टाचारी होते थे उनमें से गिरीपार के क्षेत्र लादी कागडा का वजीर सिगा था जिसके अत्याचारों व भ्रष्टाचार के खिलाफ इस क्षेत्र के २७ भोजी (ग्राम समूह) के मुखियों ने ग्राम टीटीयाणे में एक बैठक की और अत्याय के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा करने का निणय लिया जिसका श्रीगणेश ग्राम कोटी बीच से हुआ जहाँ अत्याचारी वजीर को उचित सबक सिखाया गया। बैठक में जेल, मेहल और लादी कागडा परगनो के ग्राम मुखिया शामिल हुए केवल कठवार का मुखिया नहीं आया जिसके स्थान पर पत्थर रख कर उसे अपमानित किया गया। यह हारून (युद्ध गीत,) जनता की इच्छा की अत्याचार पर विजय है।

संग्रहण व अनुवाद
प्रो० रूप कुमार शर्मा

सिंगा बोजीरा

बानी लोई सिंगाए सिरो दी पागो
 दौउरे मे चला बोजीरा साइवो वा लागो ।
 बानो पागो सिंगा रोटी रो गिको
 दियोली लुपदे बाहे बकरे छोको ।
 छोिक बाचो किकह माट साचें से कोरे,
 जे जाइला सिंगीए आए ने बोटे घोरे ।
 चुपा रो माटिया दिए ने सिंगा दा ताव
 फुनी देउवा, जाणे ने सू मेरा नाव ।
 तेरी रोई माटिया आलो भवरी जाई
 छोिक ओसो पूर्वो खे हाड भूई न जाई ।
 तिनो थोई सिंगरोउवे खुमली पाटी
 उवा भावला सिंगा बोजीर उदा मारणा काटी ।
 सिंगा चला बोजीरो, कीरी लबडी केरो
 सिंगडाट लिघावो बकरा, बोजीरो रा बोरो ।
 रास्तो रे भोजोड होले डोराडो
 घोर छोडे सिंगा खे भयी भावे उराडो ।
 जांदा लागो बोदा सिंगा कोटी खे जाई,
 आए मेरिया सिंगाया तुए घोवे धुनिणो खाई ।
 फुली कोरी फुलटी डालटी दाई
 वेगारी एए सिंगा क बीनो खे भाई ।
 फुली कोरी फुलहू डाली फुलो री कोउ,
 धुना घोर डरे खे देणा, हरणु री बोहू ।
 नोरगू सिपाणा, रोए ने रीला,
 बकरे सिता चेई बोजीरो खे ठीला ।
 नोरगू लामो बातुडी घोडो मुनी दे घाटो
 एइशा लाणा ठीला भाजो, देऊ गुलटी जाटो ।

ढाई बोइसां बोजीरा, घुट लोई तुमासु री साई,
 खोटे ए तरे करमो, मीख रोई बाइरी जाई ।
 नोइयां रोझों सिगटोउ, शीस घोरो दे जुली,
 बेटा लुभा तेरा बाजीरा, बाउटी सा तुली ।
 बारिये घोवे तुए सिगाम्रा वारिए माणशो भूनी,
 बाहे जुगा एजा छेलटा, मुली देईदा बुली ।
 ढोली रोई सिगा तेरे टाटी री केरो,
 भाखी भोरी भासुए देघा ला लेरो ।
 भाई वेने बोजीरो इटे शी उबी घाडी,
 हालो का तेरा बोइलो बेटा देणा मेरा छाडी ।
 घररो कोटा होली चिकनी माटी
 फोटी पाई सिगरोउवे छावहे री टाटी ।
 चुना लु लोभा छेटे रो सिगा रे जाती उदा डाकी
 खाए सिगीया चुनालुटा ऐजी घोसो तेरी फाकी ।
 लोडी घररो च दपुरा होला चिकना माटा
 ठारी बुइचो, सिगारा, बकरा सा काटा ।

सिगा बजीर

सिगा बजीर तैयार होने लगा, सिर पर पगडी बाधने लगा
 अपने बजीरी के दोरे पर राजा सा लगता था ।
 सिगा ने कंधे पर रोटी का शीका (धैला) उठाया
 कि तु द्वार लाघते ही बकरे की छोिक ने भिक्कावा ।
 साधे की गणना से, किबर भाट ने छोिक की व्याख्या की,
 अशुभ बताया छोिक को मृत्यु के सशय से उसे डराया ।
 चुप रह भाट सिगा को अघित न कर
 जो अगुली उठेगी सिगा पर, उसका सबस्व जला दूंगा ।
 तेरी तो, भाट आखे कमजोर हो गई हैं,
 यह छोिक पूव की ओर से आई याता अशुभ नही होगी ।
 सिगटोउ ने योजना बना रखी थी,
 अगर सिगा बजीर इधर आया तो उसे समाप्त करना है ।
 सिगा बजीर अकड कर चलता है ,
 लम्बे सिगो वाला बकरा काटो यह सिगा का भाज है ।
 रियासत के अोजोउ (राजपूत) बडे ही डरपोक हैं
 सिगा के लिए घर छोड कर स्वय गुफाओ मे चले गए ।
 चलते-चलते सिगा बोटी (गाव) मे पहुचा,
 अच्छा हुआ तू आ गया तूने हमारा खून चूसा है ।
 दाई की टहनी पर फूल खिले हैं
 सिगा के बेगारी बोच (गाव) मे पहुच गये ।
 काहू की डाली पर फूल खिल है,
 अकेला घर विश्राम के लिए चाहिए साथ हरगू की बहू ।
 हे वूडे नरगू तुम सुस्त मत रहो,
 बजीर (सिगा) के खाने हेतु बकरा व अ य खाद्य सामग्री भी चाहिए ।
 नरगू बातें करते करते उघड बुन मे पड जाता है,
 भाज ता सादा भोजन करें बल मन पसन्द का मास परोसा जायेगा ।

दीवार के सहारे बैठ थजीर ने तम्बाकू का पश बा लगाया,
 पर तेरे माग्य फूट गए है तू रास्ता मटक गया है ।
 कोटी के युवक मकान के भीतर उमड पडे,
 तेरा बेटा बाजू से उठाकर तोल रह है ।
 सिगा तूने युगो युगो से हमारा शोषण किया
 तेरा बेटा तो बकरे की तरह है, इसका भोल तो बत्ता ।
 सिगा के चहेरे पर हवाइयां उड़ने लगी
 आस मर आई, उच्च स्वर से राने लगा ।
 सिगा तुम्ह पर इससे अधिक विपत्ति कभी नही आई,
 मैं तुम्हारे हल का बैल बनूंगा अगर तुम मेर बेटे को छोड दो ।
 लेकिन शत्रु पर दया का समय नही था
 सिगा के पुत्र की गदन घड से अलग कर दी गई ।
 जबरदस्ती उसका मास सिगा के भूह में ठूसा गया,
 ले इसका कलेजा, मिला न रहे कि माम नही खिल गया ।
 च दपुर की खडी धार (पहाडी) जहा की मिट्टी चिकनी है
 (वहा) सिगा को बकरे की तरह काटा ।



नोतराम नेगी

भारतीय तथा सिरमौर क्षेत्र की महत्वपूर्ण घटना जिसे इतिहासकारों ने नज़र अन्दाज़ किया है। यह घटना गुलाम कादिर रोहिता की सिरमौर की भूमि पर करारी हार है। दिल्ली के मुगल बादशाह शाह आलम को अघा करने व भारत के बड़े भूभाग पर लूटमार करने वाले रोहिला का घमण्ड इस पावन धरती के लाल ने चूर-चूर कर दिया। सिरमौर के कटासन में जहाँ रोहिला की हार हुई, विजय की यादगार में कटासन देवी का मन्दिर बना दिया गया किन्तु उस वीर को भुला दिया जिसके सिर पर विजय-सेहरा बघना चाहिए था, जबकि राजा व सभी राज कर्मचारी कुछ करने में असमर्थ थे। नोतराम नेगी स्वयं तो जमना नदी पार करते समय धोखे से मारा गया किन्तु शत्रु को सिरमौर की भूमि से बाहर कर दिया।

सप्रहृष व अनुवाद
प्रो० रूप कुमार शर्मा

नोत राम नेगी

दूणी लोई पावटे री मुगीले खाई
याई उदे पाई लाई मोहिगी दे गाई ।
नागी तारवार राजे मुजीरे पाई,
तिआ भी कुए चाकरो दिया मीयाना भोराई ।
वाद तिनी चाकरो दी घुत वेने आई
देसी तारवार थोई तिनिए टाटी नाई ।
तेटी बाणा भूपसिगा राणिए भाई
मेरी जाणो काजिए मोलोते खे जाई ।
छाकरा नोती राम धुणा वीरो रो शिरो
सी नी सोको मुगला ली लिरो ।
भुखा हाडला नोगिआ रोटो नोइणी खाए
मालाते धा छिटका देशो राती जाणो नाइणी आए ।
तेने भूपसिगे ढिल वेने पाई
घोटे दी लोई काठी चोडाई ।
नोइणी छिटका रोआ मोलाते खे जाई,
गगी येई नात राम खे रामा रूमीणी घाई ।
ता थोआ नेगिआ शीघडा नोइणी बुलाई
तेने नेगिए डीन वेने पाई शिमा लागे जमन गाई जाई ।
नाव रे मेरे नावरिआ नाव देणी लाई,
इयो देणा घोडिए जमना पाढा कोराई ।
जमना धा छुटका नातराम राजे आगे जाई
भेट राजे बि मुरा पाई जयदेव गाई ।
बुला राजा साइवा मुदो का लागी र ई
विघा थाघा राई दा, मु नोइणी बुलाई ?

दुणो लोठ पाउटे री मुगीले खाई,
भाई उदी पाई लोई मोइशी दे माई ।

बातो लामो राजा, नेगी ने शुणो,
नेगीणो मेरे नेगट्ट घाचला वूणा ।

केइखे ढाली नोगिघा तेरे टाटी री केरो,
नेगीणो खाले नेगट्ट भु डारो रा सेरो ।

जु काटी लियाइला मुगलो री गिरी,
कालमी देऊ सासलो दी बँठी वोजीरी ।

जे लिमाइला नेगिघा मुगलो रा ठाना,
खेडा देऊ सीया रा सुमराडो रा लाणा ।

दुणो खेली पाउटे नेगिघा सूरमे री मारो
चाटे लाए टाटी रे, लोऊ रे धारो ।

एजा भ्राया मुगलिया नोतरामो रा शोटाका,
भूटी गिघा दुणो, एजा भ्राया तिदे रा साटा ।

फोउजो धोई रोहिले रे नागणी खाई
हेट मेरा नेगिघा हेट तेरी माई ।

काटी लुए बाइरी जिघो दाचीए सागो,
वोइरी पोडा भितरी जिघा बकरी माजे बोरगो ।

नोत राम नेगी

पावट की दून घाटी मे मुसलमान बिनाश कर रहे हैं
। बहिषों में गाये य भीतों को बाट कर डाल रहे हैं ।

राजा ने राज कमचारियों को तलवार उठाकर धुतीती स्वीकार के लिए कहा ,
किन्तु सभी दरबारिया की गर्दनें घम से मुक गयी ।

इसलिए रानी ने भूप सिंह को घम भाई बनाया,
उसे शीघ्र मलोते जाकर नोतराम को बुलाने भेजा ।

नोतराम बीरता के लिए काफी प्रसिद्ध है
वही दून घाटी की रक्षा कर सकता है ।

अगर तू भूखा होगा तो भोजन माहन घाकर करना ।
पर दिन रात एक करके शीघ्र नाहन पहुचा ।

भूपसिंह ने तनिक भी विलम्ब नहीं किया
बिना देर किए घाहे पर काठी घढाई ।

नाहन से चला मलाते जाकर रुका,
नोतराम को नमस्ते की शौर कहने लगा ।

नातराम तुम्हें शीघ्र नाहन बुलाया है
नेगी ने विलम्ब नहीं किया, घोड़े पर सवार हाकर यमुना तट पहुचा ।

नाविक तुम शीघ्रता से नाव चलाओ,
व मुझे जल्दी से नदी पार करवा दो ।

यमुना से सीधा चलकर नेगी नाहन पहुचा
राजा को मोहर भेंट की शौर जयदेव कहा ।

महाराज! मुझे से क्या अपराध हुआ,
मुझे किस अपराध हेतु दरबार में उपस्थित होने को कहा गया ?

मुसलमान पावटे की दून का बिनाश कर रहे हैं

बावडियो मे गाये जैसे ढाल रहे हैं ।

राजा बात कर रहा है किन्तु नेगी साच रहा है
मेरी पत्नी और बच्चो को कौन पालेगा ।

नेगी तुम्हे निराश नही होना चाहिए
तेरी नेगण और नेगट्ट सरकारी खच पर पल्लेगे ।

अगर तू मुसलमान सरदार का सिर काटेगा,
तुम्हे कालसी तहसील की बजीरी दूंगा ।

अगर तू मुसलमान की दुकड़ी का मुखिया मारेगा,
ता तुम्हे सीया व सुमराडी की जागीरें दो जायेंगी ।

पावटे की दून मे नेगा ने वीरता से युद्ध लडा,
सिर बट कर डेढ लग गये खून की नदिया बहने लगी ।
मुसलमानो तुम्हें मोतराम नेगी की वीरता का पता नही,
जो तुमने दून को अपवित्र किया यह उसका बदला है ।

रोडिले की सेना भागने लगी,
नेगी तू धय है तेरी माता धय है ।

शत्रु को तूने गाजर मूली की तरह काटा
शत्रु के बीच तू इस तरह घुसा जैसे बकरियो के बीच बाघ ।



कौरव पाण्डव युद्ध

सिरमौरी पहाड़ी क्षेत्र में जलसो व त्यौहारों के समय में मनुष्य अपनी खुशियाँ मनाने के लिए ऐसे गीत अक्सर गाते हैं। क्षेत्रीय जलसो में सारे लोग इकट्ठे होकर अपने मनोरन्जन हेतु एक दूसरे से मिलकर नाचते गाते हैं। इस गीत के केवल दो ही पद्यांश हैं जिनको दो-दो बार नृत्य के समय गाया जाता है।

साम्बोडा घोणुको घूटीडा कूमाणो
हूणो दे मामा नारीणा पाडु कौडरू रा नाहू णो ।

जिस समय महाभारत का युद्ध छिड़ा हुआ था वे पकितया उस समय की याद दिलाती है। भगवान श्री कृष्ण को उपसेन महा राज कहते हैं कि हे नारायण कौरवों और पाण्डवों का युद्ध होने दो।

राजी रोउगे प्रजा कोरो आपणी तानो,
राम ओसो लोखणो एकी थली रा खानो ।

जब उपसेन श्री कृष्ण भगवान से इस इस प्रकार की बातें कर रहे थे तो उन्होंने कहा कि अगर पाण्डव कुशलता पूर्वक युद्ध जीत लेते हैं तो प्रजा उनकी सारी बातें मान लेगी। जबकि कौरव और पाण्डव एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं जैसे कि राम और लक्ष्मण।



२. 'अग्नेज साहब'

रेणुका तहसील (सिरमौर) के अन्तिम कोने में नौहरा नामक गाव है वहा पर अग्नेज वादशाही के समय में जब कोई बड़ा अधिकारी आता था तो उस समय पहाडी क्षेत्र के ये भोले-भाले लोग उनके स्वागत के लिए दूटी-फूटी भापा में इन लोक गीतों का प्रयोग करके उनका स्वागत करते थे। यह उस समय का गीत है जब अग्नेज साहब उनके गाव में प्रवेश कर रहा था।

धुआं दे जाणा धीया भुलाणे के दिन, रोई हवा धूआं दे

आपने भुलाणा नाम के गाव में पहुंचना था पर अब दिन चांदा रह गया है।

भेली दे उठी दे विजया, मेरी गूडो री भेली दे

विजय नाम के नौजवान से गुड की भली मांगते हैं जिग खाते खात कुत्र रास्ता तय हो जाएगा।

जाणा धिया भुलाणे के मेरे हाडी चा तेली दे

अग्नेज के साथ जो उसका नौकर था तेली आ रहा था वह तेली वही पीछे रह गया। अग्नेज कहता है कि उसने भुलाणा गाव को जाना था पर तु उसका तेली गुम हो गया।

रेलुवा चाओइयां लाई दे सूनो वा आरा दे

वह साहब फिर उसी गांव के रेलुवा नाम के बडई को वही रहने को कहता है तथा बोलता है कि हे रेलु बडई तुम अपने श्रीजारा को तैयार रखो क्योंकि कल हमारे साथ चलना होगा।

साहिबा बुलो अग्नेजो मेरा तेली कूणीए मारा दे

अग्नेज साहब कहता है—मेरा तेली का किसने कल किया है? मेरे तेली का कहीं मार दिया।

मेहदी

यह गीत मेहदी नाम लडकी तथा उसके प्रेमी का है । हिमाचल प्रदेश के जिला सिरमौर के पहाडी क्षेत्र में त्यौहारों व विवाह इत्यादि में अपने मन को प्रसन्न करने के लिए पहाडी गीत गाए जाते हैं । इन गीतों में प्रेम-रस की प्रधानता होती है ।

मोहोदीए रो हारे लाडो रे पाडे तूए चोके मारुके ।

महती नाम की लडकी अपने प्रेमी से कहती है कि हरे घास का बाभू अत्यधिक मारी हा जाता है ।

मोहोदीए रो धीयला ने राडे तेरी जाणा धारलिए ।

महदी जिम बियूल प्रकार के पड में छेद डाला जाता है उसी प्रकार तेरी आँखों में भी मुझ छेद डाला है ।

मोहोदीए रो धुके काटलो दे छाडे धुका मेरा जीयो दा ।

महती का प्रेमी मेहदी में कहता है आपने मुझे सूखी नदी में छाड़ दिया है तथा आपके दिल में मेरे प्रति छल कपट है ।

मोहोदीए रे उदी बिदरा वूणो उबी माता रेणुका ।

नीचे बीहड़ तथा अत्यधिक घना जंगल है और ऊपर माता रेणुका

मोहोदीए रो ता लागना वूणो म्हारे चूडी लोकेडे ।

महती यदि तरी मलाई हा जाती है तो बेशक तुम चाहे मेरा त्याग कर दो ।

मोहोदीए रो बाजो गोइरा वाणा बाजो जादी बाजणो ।

विशेष उत्सवों में विभिन्न बाज तथा नगारे इत्यादि बजने से लडके-लडकियों का आपस में घनिष्ठ प्रेम हा जाता है ।

मोहोदीए से बोरी मूनो रा जाणा, उमी वेणा मोरोणी ।

मेहदी का प्रेमी कहता है कि जो तेरे दिल में आए वो कर ले पाहे
मुझे कितनी भी तबलीफ हो ।

मोहोदीए रो साईं कुबडी कागे घान खाया खीडीए ।

मेहदी की मक्की की फसल बीया ने खा ली है और घान चिड़ियो ने ।

मोहोदीए रो बोचे आपणे भागे, तूए थाये मारणे ।

मेहदी तूने ता मुझे मारने की सोच रखी थी परतु परमात्मा की कृपा से मैं
बच गया हूँ ।

मोहोदीए रो साईं रे पारशी ताके, वान बोरी सूनयो ।

मेहदी तेरे प्रेमी का सदेव आया हुआ इसे वान कर मुन ले ।

मोहोदीए रे तेरे नाको बी तीली खोरी सोजी घोणिया ।

मेहदी तेरे नाक में तीली बहुत सजी हुई है ।

मोहोदीए रो घाते आदमी मिली उमी तेरा आसरा ।

मेहदी का प्रेमी मेहदी से प्रेम भरे शब्दों में कहता है—हे मन को
अच्छी लगते वाली मेहदी भले ही तू मुझे आधे रास्ते में मिली फिर भी
मुझे तुम्हारा बहुत सहारा है तथा तुम्हारे प्रति अत्याधिक प्रेम है ।



जगता

यह गीत किसी गाव के जगता नामक व्यक्ति जो कि खच्चरों लादन का काम करता है, उससे सम्बन्धित है। रास्ते में जाते समय उसे चोर मिलते हैं जिनसे वह अपनी जान बचाने की प्रार्थना करता है। गीत इस प्रकार से है —

लाईने द्विगीरो वीची नीता जोगता रे

खच्चर पालन करने वाला जगता नामक व्यक्ति जब रास्ते में से गुजर रहा था तो गाव से थोड़ी दूर आगे जाकर उसे चोर मिल जाते हैं और कहते हैं कि पत्थर में लाली लगानी देकार है अर्थात् तेरी जिन्गी देकार हो जाएगी क्योंकि इस समय तेरे पास बहुत पैसा है और हम तुम्हें मार देंगे।

देशो व भाव कुमारों साफा गोलो वा रो पौची नीता जोगता रे

जिस तरह मैदानी क्षेत्रों से तूफान पहाड़ों की तरफ बढ़ता हुआ आता है उसी प्रकार देश में भाए हुए चोर उस नीता जगता नामक खच्चरवान व्यक्ति को गले में कपड़ा बांध देने हैं।

शिमला जाणो बुईजारो दी कौए टीपी, लोई लो रुडी नीता जोगता रे

हे जगता शिमला बाजार मे रोडी की दुलाई करनी है ।

नो शो देऊगा रुपिया ज मेरी जिन्दगी छूडे नीता जोगता रे

नीना जोगता (खच्चरवान यवित) उन चोरो से कहता है यदि आप मुझे छोड दोग तो मैं आपका नो सी रुपये दूगा ।

नो शो देऊगा रुपिया उको खेवर री जूडो नीता जोगता रे ।

खच्चरवान चोरो से फिर प्रार्थना करता है कि अगर तुम मुझे छोड दोगे तो मैं तुम्ह नो सी रुपया व प्रतिरिक्त खच्चरो की एक जोडी भी दूगा ।

सग्रहण व अनुवाद
बालक राम ज

चरणु

लोकगीत हिमाचल प्रदेश के भोले-भाले लोगों के लोक जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं। यहाँ के लोक-गीतों में यहाँ की घरती, पहाड़, जंगल, नदी, नाले, खेत, खलियान गाते नजर आते हैं। यहाँ के लोग शांति प्रिय हैं परन्तु इसके साथ ही जब कभी भी इनके शांतिमय जीवन को ललकारा गया है, इन लोगों ने अपने प्राणों की परवाह किये बिना चुनौती को स्वीकारा है। प्रस्तुत गीत शिमला जिला की रामपुर तहसील के सुगरी क्षेत्र से सम्बन्धित है। इस क्षेत्र में लोग बाघ द्वारा दिन प्रतिदिन किये गये पशु तथा मानव सहार से काफी तंग थे। एक दिन बाघ ने चरणु नामक बहादुर व्यक्ति की भेड़ तथा मेमनों को अपना आस बनाया जिस पर चरणु को अत्यन्त क्रोध आया और वह बदला लेने के लिए बाघ की खोज में निकल गया। बाघ तथा चरणु के मध्य घोर युद्ध हुआ और अंत में चरणु ने मलयुद्ध में बाघ को मौत के घाट उतार दिया —

मुलमा लाईया न केरेमा लाए
 मार की घामा चरणु रो हेडुला गाए
 भिजिआ चाणा माऊडीआ लऊटी घीआ
 भूखुओ बेटो चरणुआ हेडी रो जीआ

दुधा मदा खीरी लण्डा पाका रसोए
 मीतरा भासा चरणुभा हाथडु घोए
 भाशिभो गो वउचो डाम्फीभा बोठो
 भाणकले छाजर ना पाणी रा लोटो
 सुगरी बागी खदराला साबा रा तावू
 दूधा भाणा कडणा खे चरणु रा लाम्बू
 भापु गो बेटा चरणुभा घरा खे भाए
 साबा सपाए देणा सुगरी समाए
 देवा री घारा चरणु खे टयालिमा ला कुणा
 बोटी बराल्टीभा तगा दे शूणा
 बोटे हले चरणु रे बडे कजाणा
 चवला चाणा भासा रो न चरणु खे माणा
 भेरे खाए मोमले बादरे जटाए
 तेभो री ताई चरणु दे रोपा र भाए
 भेरे खाए मोमले गावू रे जाडे
 सेजा रोपा चरणुभा राफला शाडे
 भोरू दे मेरो दोस्ताना दारू रो पीपो
 सिभा सगा लडनो कमाई दा लिखो
 भागुभा तगा चरणुभा भरे बडूका
 साथी चाला मईरामा परमासुखा
 गाचिभा माले डागरो चदरा भ्रीका
 काना गाशे राफला न सापणा सीका
 घणा लागे जागला दे नादे बरूरा
 साथी सगी भाईया मेरा नेडा के दूरा
 देवारी घारा चरणुभा देएडो नाभो
 तू थो मूई सिऊणी रो खशणी रो हाभो
 लडिभो डेईला मिडिभो नई का भाभो
 छिम्बरू मेरो कुकरा न घर्मा रो भाए
 सिभा री भाशे साबा दे मेरे दाईए बाए
 भापुगो बेटा चरणुभा घरा खे भाए
 सिभा रे देणे हिभा दे गीले चलाए

हम चरगु का गीत गाते जा रहे हैं
 मां ने प्यार से धी तया सौटी (घाटा फोलकर बनाई गई रोटी) बनाई
 मेरे बेटे को भूख लगी है लगे भी क्यों नहीं आसिर बन्धा ही है
 बेटा तुम हाथ धोकर घर दर घा जाओ
 दूध तथा गहद युक्त गीर का स्वादिष्ट भोजन बना है
 चरगु घाते ही डाम्फी स्थान विशेष पर बैठ गया
 उसे प्यार से ठण्डे पानी का लोटा दिया गया
 सुगरी बागी तथा सदराना में घ घोजा ने अपने तम्बू लगा दिये
 दूध काढ़न के लिए चरगु के बड़े-बड़े बतन मगवाये गये
 चरगु स्वयं घर पर आ गया
 साहब तथा मिवाहिया का सुगरी भेज दिया
 देवी के टीले पर स चरगु का आवाज किसने लगाई है
 बराल वाली घरवाती ने यह आवाज अपने बरामदे में सुनी
 चरगु की पत्नी बिल्कुल अनजान है
 उसने चावल तथा माग मिलाकर चरगु की खाना बनाया
 सलेटी रंग की भेड तथा भूरे रंग का भेमना खो गया
 इसी बात पर चरगु का क्रोध आ गया
 मोने रंग की भेड तथा तया भेमनो की जाड़ी खो गई
 इसी क्रोध में चरगु ने ब'दूक खेंच ली
 उसने अपना दस्ताना तथा बारूद की पीपी मगवाई
 मेरे माग्य में शेर के साथ लडना लिखा है
 चरगु ने आगे वाले बरामदे में ब'दूक मरी
 उसके साथ परैराम तथा परममुख भी चले
 कमर में बधा फरसा चाद की भाति चमचमा रहा था
 कंध पर रखी ब'दूक सापिन सी लग रही थी
 घने जगल में धीमी धीमी वर्षा होने लगी
 हे मेरे साथिघ्रा ! तुम पास हो या दूर
 दवा की धार पर पहुंचते ही चरगु ने बुनौती दी

यदि तू तेरी का बंधा है तो मैं भी ताज्जी का पुत्र हूँ
 लड़के लड़कें ही तुम्हें मनी तक मे जोड़ना
 है सिर्फ़ तुम्हें मुझ मेंरे पग क मर्द हा
 फिर क मुझ क मरा बाजू का मर्द है
 धन मे पानु त कर की ताजा में पाली काग की पीर
 उम मोत्र क पाट उतारकर पर पट्टा गया

सप्रहण व अनुषार
 ध्यात सिंह भागटा



मास्ती (महासती) कुजी

देश के अग्र भागों की भाँति हिमाचल प्रदेश में भी सती प्रथा का प्रचलन रहा है। इसी परम्परा के अन्तर्गत शिमला जिला के जुब्बल क्षेत्र के 'ठाणा' नामक गाँव में 'कुजी' नाम की महिला ने अपने पति के साथ जिंदा जलकर पतिव्रता का परिचय दिया है। इस क्षेत्र में आज भी 'मास्ती कुजी' का नाम आदर सम्मान से लिया जाता है और प्रस्तुत लोक गीत भी अत्याधिक प्रचलित है

ताला रीगे माच्छले न गणे शीणे
 काला बारा अम्बिआ न पागडे दीणे
 चुली री पठाए मेरे सौड छाया
 भीठो आहो ठणका मु ना'दो शिआआ
 छोटिआ कुजिआ तू नेडडे आए
 कौला मु दे हायतुआ मशणो लाए
 लाआ कुजे मशणो न लागे ले ह दे
 श्रीरे कमाण मेरे कियणे हु दे
 जोटी एकी आदमी पजारली जाओ
 देवा तेस कुला रा न उवे च्छराओ
 ओलरी देओ कुला रो न गाडा ला राशा
 मेरा नाई अम्बि खे न दाई न दोशा
 ओतरो देओ कुला रा न लागे ली र'दो
 माता रो चावला न अम्बे न हू दो
 देवा देआ कुला रा न आखरा चोडे
 आटा करा माऊला न आरका लोडे

जोटिमा एकी भादमी भटवडी जाओ
भाटा तेस शकरा न भाए बदाओ
भासा भाटा शकरा न साम्बिमा लाग
भातेमा भम्बिमा नू बोला लो काए
गोला भाटा गकरेमा चुडक सोचा
मरणा रा जीवणा रा भाखरा बांचा
एकी भासा चुडकुमा खडिमा खडो
भासा दूजा चुडकुमा मास्ते महा
बेते गोए खण्डिमा रे खडिभारए
भाटा तांऊ शकरा रे पतरे दए
घरेमा देमा कुजिमा न दाईणा हाषा
जबे भम्बे मरालो तो जू ले साषा
छोटिमा कुजिमा नू नूदे न छला
भायो गाणे पाशहे नू लाग न बला
छोटिमा कुजिमा यारू ला ताऊ
जेवा महा सांया तेबा मानू न हांऊ
जलना नाई मरना खे बासी रो डरा
जिणो तेरा सूचिमा लो तियणो करा
जौंभा पापी बोरी रे भाणे टियाले
दाया मामा गढा रा न खाओ बियाले
गढा दिणे नगरा दे फूके टियाले
डाकी बाडी सोई भाणो जोखटी जाले
गढा जाली नगरा दे हुए नजाणा
चोठी बियाली दूमा भम्बि रा प्राणा
जोटी एकी भादमी न मादला जाओ
डाकी बाडी सोई तुम्हा मोह बलाओ
डाकिया न्णे माऊभा नगरा रे जोटे
भीतरा करा खबरा न सचे के खोटे
सचे खोटे बाडिमा न पूछि का तेरा
महा साथी मास्ते न जलणे मेरा
कुणता सहारा शौरा गडाईका कोले
पारा भलाही खे थे छाडने जोले
कोल्टु भासा भागमते साम्बिमा लाग
भातेमा भम्बिमा न बोला ला काए

बाल्टुघा मागमन पूजे न बोला
 सोजा बाला गुरती का घरा रा घोला
 बाल्टु देघा मागमल पूजे टियाले
 जलासे मला रूघा पियार्ईणा रहार
 माची मलाडू घागा गूटा ती घडी
 दाह रा घाणा जुगचा न केवला री घडी
 माची मलाडू घागा दाह र द्वाण्टा
 बादा ठणायका री मरवी पाण्टा
 माची मलाडू पूजा राटिघा रघा
 मुघा साधी जीवद तू कासरे दघा
 हाव भी भूरो देघा सो न भडा नी घडी
 रूदा री सुट्टी न ठाणा का जमी
 सोजा लेरा गुरती न जुगा रा घोला
 ठाठा के चाइता तू घामू का बोला
 ठाठा न चाइतो हाऊ मुखा रे जसू
 माची मलाडू रे न उजसे बरू
 सोजा लेरा गुरती न जुगा री बाई
 चाला मलाडी से तू दूघा ले गाई
 गाई मेरा बाइदु रा हुघा न भागा
 तेरे बोला बाटे, न शांकिणा डागा
 गाबी तेरा बाइदु रा मुए का जेडा
 अम्बि साधी जसू ले न पशा रो पेडो
 देवरा बोलू रामच दा सूची का तेरा
 मडा साथे मास्ते न जलने मेरा
 रेशमा कीमू खापा दा न गाडा ला रेजा
 बोल बी मेरी भावजा तू बामा ले केजा
 एजो न चोगो बामणों एजा रघा लो ताले
 चोगो सेजो बामू जि दे सूना रे माखे
 जूगा गाशे बामवेगे चडके राणे
 ठाणा से भूरा ठडा न बाबी रो पाणे
 जुगा गाशे टाडुएगे चडके कूजे
 हले मेरी लौकी रे जला ले दूजे
 नागा री लाए ढोली दे न कुजिघा लाता
 हौली मेरी लौकी री जलिघो साथे

निघो मेरी जुगटू न थापला पारा
 घाण्डा पुजारली रा दिंदा भलारा
 मरो निघा जुगटू कलोटी री घारा
 बाढ घीसा घुणसो न बादे भलाडा
 निघो मेरा जुगटु न मोडा री छाई
 दखा मेरा माईचा न भाषा बी नाई
 मोरू बोदो गरभा घगे रा बापा
 बेछ कछे साई वूगू कथरी रा छापा
 एक बा छापो साणो न नागा री ढोली
 दूजो छापा साण। बनाडा री खाली
 भागतु बाडी जगला न लडिमा ऊजा
 कसके चाणी पलगे न कसखे जूगा
 भम्बो खे चाणा पलगे न वूजी खे जूगा
 इण। चाणी जुगटू न भाफी लो हाण्ड,
 परा दिया करू चोऊ घूरा दे घाण्डा
 एणी घाणी दाडिमा बडेदु से तेरा
 बाठे लाए भागला सूवे हिया दे मेरा
 कुजीरा लिभा जुगटु दे किम्बली वाली
 भम्बि री लिया पलगी दे मुशा बराली
 डाल बी करा देवठी का ठोडी का मुए
 गडा री बादी नेगणी का रामा रामा हुए
 जुगा मासे टाण्डुएगे चहके राणे
 ठाणा रे भूरा ठडा न बाबी रो पाणे
 विवले चाणे पलगे न सांगडे बाटा ।
 डाकी रा ढाली रा न लगा ला साटा
 सोलठ लाए साणी भा कुजे लदारे
 पांचा लामा पाण्डुभा न भम्बे महारे
 मोडे का दूस मासा देएगा घरा
 भाग न बोई लांदो फिरंगी रा डरा
 जेती तुफा शेवरेभा घरा खी भागा
 जती हीला देवरा न लाइभो भागा
 सास बी रींग। सरगा मास भोगा ले भागा
 हाडा री लागे जुहू न भाटी रा भागा

तालाब में मछली तथा आकाश में पपीहा घूमने लगा
 इस प्रकार की अशुभ घड़ी में अम्बि बीमार हुआ
 मुझे अत्यधिक ठण्ड लग रही है और बुगार भी आ रहा है
 चुल्हे के निकट मुझे विस्तर बिछा दो
 प्रिय कुजी तुम मेरे निकट आ जाओ
 अपने नम हाथों से मेरी मालिश करो
 कुजी मालिश करते-करते रोने लगी
 न जाने मेरे भाग्य में क्या लिखा है
 दो आदमी पुजारली गाव जाओ तथा
 अपने कुल देवता से पूछ ताश्च करो
 कुल-देवता गुस्से में आकर बोला
 मरी और से अम्बि को किसी प्रकार का दोष नहीं है
 कुल देवता बोलते बोलते रोने लगा
 भूत को चावला में परिवर्तित नहीं किया जा सकता
 अर्थात् अम्बि का बचपाना असम्भव है
 कुल देवता ने स्पष्ट रूप से कह दिया वह कुछ नहीं कर सकता
 तुम अथ किसी पंडित आदि से उपाय करवाओ
 एक जोड़ी आदमी पंडित के गाव भेजो
 शकर नाम के प्रसिद्ध पंडित को बुला लाओ
 शकर लम्बे-लम्बे डग मरता हुआ पहुंच गया
 अम्बि से पूछा कि उसके योग्य क्या सेवा है
 शकर ने अपनी विद्या की पाथी खाल ली
 वह जीवन तथा मृत्यु के सम्बन्ध में निणय करने लगा
 एक प्रश्न के उत्तर में कुछ गडबड नजर आई
 दूसरा प्रश्न नगाने पर मौत तथा जिंदा जलने का योग सामने आया
 खण्डिया की बेटी कुजी यह सुनकर हैरान रह गई
 हे शकर तुम्हारी पाथी को भाग लग जाए
 कुजी ने अपने दायें हाथ से अम्बि को घम दिया
 यदि तुम्हें कुछ हा गया तो मैं साथ जलूंगी
 प्रिय कुजी तुम दिल रखने के लिए ध्यय छल न करा
 जलती भाग पर तुम अपना शरीर नहीं रख पाओगी
 मैं तुम्हें परामश देता हूँ कि तुम यह विचार छोड़ दो
 यदि तुम मेरे मृत शरीर को लाय लाओ तो फिर तुम्हें जलना ही पड़ेगा

वैसे जलने और मरने में किसी का डर नहीं है
 तुम्हें जो उचित लगता है तुम वहीं करो
 भास-गडोस के सभी लोगों को कहा गया कि जल्दी से रात्रि का भाजन कर ले
 क्रूर यमराज का अम्बि का बुनावा घा गया है
 पूरे गाँव में खुली आवाज दी गई
 बाजा बजाने वाले बढई तथा दजा का जासटी (लकड़ी विशेष जिसमें तेल
 राशनी के लिए जलाया जाता है) की राशनी में बुला लाओ
 सारे गाँव में यह खबर फल गई
 रात्रि के प्रथम पहर में अम्बि की मृत्यु हो गई
 दो आदमी जल्दी से मा दल आया
 डाकी बढई तथा दर्जी को बुलाकर ले आया
 माऊ नामक डाकी ने नगारे की जोड़ी बस ली
 अम्बि के घर से मालूम करो कि यह खबर सच्ची है या झूठी
 कुजी बोली ' तुम सचच भूठ क्या पूछ रहे हो
 मैं अपने पति के साथ जिंदा जल रही हूँ
 हूँ ससुर जी ! आपके परिवार का कोली (सवात्तार) कौन है
 मोलाड (मायके) को सूचना भेजनी है
 कोली का बेटा भागमते जल्दी जल्दी आ गया
 अम्बि माते की ओर से क्या आदेश है
 भागमते तुम यह सूचना खुले आम मत देना
 मरे भाई सौजे तथा सुरती को अकेले में सूचना देना
 कोल्टु भागमते ने खुले तौर से आवाज दी
 हे मोलाड वालो तुम्हारे गाँव की लडकी जिंदा जल रही है
 मोलाड वाले मरी सख्या में आये
 वे अपने साथ बरुद तथा केबला लाय
 मोलाड वाल मोला की बोझार की तरह पहुँच गये
 सभी ठाने वालों के मकान उनसे भर गये
 मोलाड वाले पहुँचते ही हैरान रह गये
 तुम मृत व्यक्ति के साथ किसे जला रहे हो
 भूरे ने गुस्से में आकर कहा
 हमारे गाँव में कई वीर महिलाएँ जल चुकी हैं
 भाई सौजा तथा सुरती जुगटु (अर्थात्) के निकट जा कर रोने लगे
 तुम वास्तव में जल रही हो या मजाक कर रही हो
 मैं मजाक नहीं अपितु खुश होकर जल रही हूँ
 अपने मायके वालों का नाम रोशन करूँगी

मौजा तथा मुरती जुगटु की यात्रा व पाग रोकर बाले
 तुम मोलाड चला यहाँ बेबल गाय दाहने का पाग करना
 गाय तथा बछड़े पालना मरे माग्य म वहाँ
 तुम्हारी परती मुझे दाकनी तथा डायन कहगी
 मुझे तुम्हारी गाय तथा बछड़े स वाई वास्ता नहीं
 मैं अपने पति के साथ जलकर सती होना चाहती हूँ
 नू ऐवर रामच द ! तुम किम साच मे पूवे हो
 मैं अपने पति के साथ सति होन जा रही हूँ
 रामच द ने रेशम और किमलाप के धान सामने रग लिए
 मेरी मामी तुम कौन सा कपडा पहनना चाहोगी
 मैं यह चागा नहीं पहनुगी यह तुम्हारे लिए रहेगा
 म गोने की मक्की जडित चोगा पहनुगी
 कुजा जुगटु पर घासी न हो गई
 यह देव कर घाणे की कुल देवी और यहाँ तक की घावली का पानी भी
 ध्याकूल हा उठा
 जुगटु पर चढकर कुजी ने घोपणा की
 यदि तुम म भी मुझ सा खून होगा तो अपने पति के साथ जल कर देखना
 नाग के बडे पत्थर पर पाव रखकर कुजी ने फिर कहा
 यदि तुम भी मुझ जैसा नाम कमाना हो तो अपने पति के साथ जल कर मरना
 मेरा जुगटु कलाटी घर पर ले चलो
 जहा से पुजारली मन्दिर पर लगा स्वर्ण कलश चमकता हुआ नजर आता है
 मेरा जुगटु कलाटी घर पर ले चलो जहा से
 ढाडी घु सा तथा मोलाड के गाव नजर आते है
 मेरा जुगटु घर की छाया मे ले चलो और देखो
 मेरे मायके वाले (मोलाड वासी) आये है या नहीं
 समुर जी थगी के पिता जी (गाव का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति) को बुलाकर लाभो
 आपके रीति-रिवाजानुसार कहा कहा कू गू तथा कस्तूरी क तिलक लगाये जाते है
 एक छापा नाग के बडे पत्थर पर लगाया जाना है
 और दूस नू ऐवता बनाड (कुल देवता) के मन्दिर के प्रवेश द्वार पर
 आगतु तथा जेगल बाडी (बढई) हैरान होकर पूछने लगे
 किस के लिए पालकी बनाई जाए और किसके लिए जुगटु
 अम्बि के लिए पालकी और कुजी के लिए जुगटु
 ऐसा सुन्दर जुगटु बनाना है जो स्वय चले
 उसमे चारो और चोरु तथा चारो किनारो पर सु दर घटिया लगाओ

ने बढई तुम्हारे बेटे के साथ भी यही हो जो मेरे साथ हुआ है
 तुमने इतनी सरत झगला लगाई है कि मेरी छाती में दब हो रहा है
 कुजी के जुगटु के चारों ओर काली चिबटिया तथा
 अम्बि की पालकी के चारा ओर बूहे तथा विल्लिया बनाई गई
 कुजी न देवता के मंदिर का नमस्कार तथा कुल देवी को प्रणाम किया
 गाव की सभी मद्र महिलाओं को राम राम कहा
 राणी की भाति जुगटु पर कुजी सुशोभित हो रही थी
 उसे देखकर ठाणों की कुल देवी और वावली का पानी भी व्याकुल हो उठा
 पालकी चौड़ी बनी है किन्तु रास्ता सकरा था
 ढाको तथा ढोलों की भीड़ लग गई
 मोलह ने कुजी को भोजन परोसने का काम दिया
 पाचा पाण्डवों ने अम्बि को अपने मण्डार का अधिकारी बनाया
 सूर्य अस्त हो कर अपने घर चला गया किंतु
 कोई भी व्यक्ति अग्रजों के डर से आग नहीं लगा रहा था
 कुजी ने कहा रिश्ते में जितने भी समुर है घर चले जाओ
 जितने देवर हैं वे सभी हमारी चिता में आग लगा दें
 मास स्वयं चला गया और मास अग्नि को अर्पित हो गया
 हड्डियों का ढेर मिट्टी के माय में धाया



महासती कुजी

जुब्बल क्षेत्र मे मादल नाम एक ग्राम की घटना पर आधारित एक लोकगीत कुजी नाम की एक स्त्री के अपने पति की मृत्यु पर सती होने की गाथा है। उसका पति अम्बी भेड बकरियो की खरीद करने कुल्लू गया था। जब वह वापस आया तो अचानक बीमार हो गया और मर गया। कुजी उसके साथ सती हो गई। यह गीत बहुत पुराना है तथा खास-खास त्यौहारो जैसे बिशू (बंशाखी) जात्तर (एक पहाडी मेला) और देवताओ के जगराते म गाया जाता है।

बाठणीए कुजीए छोए ल छाए
 राशीए डेऊ कुल्लु री कपड घाए।
 कुल्लु री ताव राशीए छाडू न छाडू
 भोक्तै मेरै माची रै वाकरै खाडू।
 तेरै देओ माचे मोग मोल
 राशी आगु कुल्लु दू सस्तै होले।
 सोजो कौरे शाबली लोट दो धिऊ,
 हाथो किया डिगटा रोटो रो शिका।
 जोवे पुजा देवली ख बाकटुए छिको
 छिक ले मेरी छिकणीए देदे का बीरो।
 राशीए डेऊ कुल्लु खी आऊला घोरो,
 मागीं ले कुजे देओ दू ऐआ ही बीरो।
 बोयै अम्बे आणी खाडू वाकरे रे शशी
 दाई माई बादे कौरी अम्बी रे आगा।
 राव आणे कुल्लु दू महता र रोहड
 राव लाए चारण खी देवा री बागी।

भम्बी तेस महते मडौ दी लागी,
 राप प्राण भम्बीए खीर्ल री बाणी ।
 शेल री भावो ठणको गादे राग्री,
 चुल्हे री पिठीए मेरो सीडी छाव ।
 बाठणीए कुजीए तू नेडडे घाए
 कौलै हाथडूए मालसौ लाए ।
 छाए ले सीडी लागै ले रु दे,
 धौकरे कमाए मेरे किये हौले ।
 तूए मेरे बेदणो कोइये नै जाणे
 बाई मेरी कुखी दे टुबे करारो ।
 एकी जोटे भादमी मादलौ जाघी
 पुछीये देखी कुलो रँ का वताघी ?
 भौतरो देखी कुलो रा ढाली ला भौसो
 मेरा नै भम्बी खी दाए न दावो ।
 देवा बनाडा भम्बी न लाग
 चाबे रा देऊ फलीया देवठे छाएँ ।
 जबै कौरे भम्बी रो उत्तमो भोगी
 चाबे री देऊ पाटीए पीतलो ढोलौ ।
 भौतरो देव कुलौ रा लागी ला रु दा
 मातो रो चावतो भम्बे न हौदा ।
 एक जोटे भादमी बटेऊडी जाघा,
 माठ घ्राणी कुला रा ग्राह बुलाघी ।
 माठ पुजा कुलो रा घाऊली पेटे
 का हौने बोलद महत्त रँ बेटे ।
 माटे गाहो गौडी रँ चुडके साची
 मरखे भो जीऊणे री टपडो बाचो ।
 एका ग्राघो मरी दो खौरीये खौरो,
 हुजी ग्राघो हौरी दो मास्ते मीरी ।
 ठाणे री लाए ठौडी दे कुजीए लातै,
 जीबै मीरी ला महत्ता मोरु ले साथी ।

मागी ए छेउड़ीय जालो न मीमी,
 मोट तर मागे जगने ते दमी ।
 पाडी लाऊ माचा गी पाजा रा तीरी,
 जीलत नाई मरगु मी बीगी रा ठीरी ।
 गृण तर मदीए र गडाई ती बाल
 मरे द्याही माता नी उदद जोट ।
 बोलीया बोतू गोडी रे पूको नै बान
 माई पूतू रामघना घोरी रे घान ।
 बोलीए लागे गोडी र कुने टपाले,
 जीले लागे मालाहमी घ्याईएला तारे ।
 माई देवी रामघन गोडी तरांगी
 कुणजा सजा महता जू जिऊते जागी ।
 बाडी रे बडेदुघा लाम्बडी बाघा,
 एणा चाणु जुगटु जू देवी लो डमी ।
 हाव था राजे रा वनागु विषा,
 राम लिखू लखणो पोनी दे सिषा ।
 तेरे लिखू जुगटु दो पोण श्री पाणे
 सीता लीखू देणे बं रामो रे राणे ।
 द नाई दाडीये पेडे री गाली
 तेरे लीखू जुगटु री दुर्गा काली ।
 मुड तीएँ शम्बी रो गली दो कीषो
 जुगटु चालो कुजी रा व नाचदो जेघा ।
 नीघो मेरे जुगटु व कीमू री छाई,
 देखी मेरे माचे आए की नाई ।
 माचे भोलाडू पूज शृटी ली छीडी
 दाखू र घ्राणै धीन केवन री घौडी ।
 धागो मेरो जुगटु बं मोडवी श्री चालो
 ग्याईयो मेरे माची री ठालीए ठालो ।
 माए पूछो रामघोनी जुगटु र श्रीले
 टाटो मेरो बोहणीए मुख मी बोल ।
 टाटो नाई किच्छी व माईया शोकी रे जीलू
 जुगटु तीयो कुजी रा व लाई माई टेकी
 मास्ती आघो कुजी दो देवी रो तेजी ।

जेनी तूए गवरं घौरी खी डभौ,
 मेर दवरो तूए उकला लाभौ ।
 सारल री सावणीए मेरीये माए,
 सात्सा री मावणीए गगले पाए ।
 धुए र बाईंग सीरगं जाए
 मोहल लाए दावणीए कुजे मर्दर ।
 पांचे ला पाहर्व भम्मे भण्हारे
 साम डेवा सौँ मांस भोगीले प्रागो ।
 हाडो रं हडवू रोपे माटी रं भागो ●

हिंदी अनुवाद

इस गीत का नायक शम्बी अपनी पत्नी से कहता है कि हे मेरी सुन्दरी तू मेरे रूपछो को छो दे क्योंकि मैं भेड़ बकरियाँ खरीदने कुल्लू जाऊंगा। शम्बी की पत्नी कुजी कहती कि मैं तुम्हें इतनी दूर नहीं जाने दूंगी मेरे मायके वाला के पास बहुत भेड़ें व बकरियाँ हैं—तुम वहीं से ले आना। अपनी पत्नी की बात सुनकर शम्बी कहता है—

कि तेरे मायके वाले तो बहुत ही महंगे बेचते हैं। मैं तो साड़ू (मेड़े) व बकरे कुल्लू से ही लाऊंगा क्योंकि वहाँ पर य बहुत सस्ते मिलत है। अब तू जल्दी ही कोई अच्छा सा खाना तैयार कर और एक लोटा घी भी साथ व लिए भर दे। खाना लेकर वह हाथ में डडा लिए जाने के लिए तैयार हो गया।

जैसे ही वह दहलीज पर आया तो एक खेनू (बकरी का बच्चा) ने छोकर मारी। शम्बी की पत्नी कहने लगी यह अपना गुन है मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी तो वह कहता है यह तो शुभ है। यह जरूर कोई वर देगा। मन हो मन शम्बी की पत्नी अपने कुल देवता से कहती है—हे कुल देवता मेरा पति सही सलामत घर वापिस आ जाए। यही वर मैं तुम से मागती हूँ।

गद्दी शम्बी के भाई बंधु इ तजार करते हैं और कहते हैं वह बच भायेगा और बकरो को लायेगा। सब आस लगाये बठे हैं एक दिन वह दिन भी आ गया जब वह अपनी भेड़ें व बकरियाँ रोहडू ले आया और चुगाने के लिए देवता की एक चरागाह में छोड़ दिए।

धीरे धीरे उनकी हाकता वह अपने गाव की तरफ ले गया। जब वह अपने खलिहान के पास पहुँचा तो उसे सरदद व ठंड के साथ कम्पन सी महसूस हुई।

उम गैतकर उमकी परती बहूग गुदा हुई जब यह बिल्कुल पास गया ता प्रता परती को आवाज लगाई और कहा कि भूह के पास उसका लिए बिस्तर लगा ३ क्योंकि उस ठण्ड लग रही है ।

जब उसकी परती ने उमकी नाजुक हाथ देगी तो जल्दी-जल्दी बूह के पास बिस्तर बिछाया और राने लगी । कहने लगी हू परमेश्वर मेरी किस्मत न जाने कैसी होगी—मेरे पति को ठीक कर दे । उम रोता देख अम्बी कड़वा है मरी सुदरी तू अपने नम नम हाथो से मालिन कर ३ । तुम मेरी दद का क्या जाना मेरी दाई पसली के नीचे सान द हा रहा है । ज्यादा ठंड से उस निमोनिया हा गया था । परती पबराहट न कहती है कि एक जाडी आत्मी का मांदल (गांव का नाम) का आमा और देवता से अम्बी क चारे म पूछो । कुल का देवता उस चेले (गूर) म समाता है और कहता है कि मेरा काई छोट व दाप नहीं है । कहते कहते चला ठंडे पसीने से भीग गया क्योंकि उमे पता चल चुका था कि अम्बी सिंह अब ठीक नहीं हो सकता । कुछ समय पश्चात उसकी परती कुजी रोती विलापती हुई देवता के स्थान पर आती है और कहती है—हे मेरे कुलदेव मेरे पति का अर्घ्य कर दे । मैं तेरे लिए सुदर मंदिर तावे व पीतल के डाल तथा नगारे बनाउंगी—तू मेरे पति का ठीक कर दे ।

कुल देवता का चला फिर रोता है और कहता है कि जिस प्रकार मात बन जाने पर पुन चावल नहीं बन सकते उसी प्रकार अम्बी अब ठीक नहीं हो सकता । तुम चाह कुछ भी करो । इस पर भी कुजी का मन नहीं माना और दो आदमी कुल के पुरोहित का बुलाने के लिए भेज दिए । जब कुल के पुरोहित ने बात सुनी ता दौड़ता हाफना हुआ अम्बी क घर आया । उसने भी अपनी जन्त्री व साचा निकाला और अम्बी का ज-मटेवा देवा । फिर उदाम हो कर कहने लगा कि जा हाना है वह तो अटल लेकिन इसके साथ मे इसकी परती भी मर जाएगी और मारे जुबल मे महासती कुजी के नाम से प्रसिद्धि पाएगी । जब उस पंचरता की देवी ने यह बात सुनी तो उसने कुल देवता के मन्दिर के पास बने चबूतरे को पंर से ठोकर मार दी । (जब देवता पालकी मे होता है वह ठोडी (पत्थर) के चबूतरे पर बैठता है उसके चारो ओर दुर्गा मा क लाल भण्डे गडे हाते है । लोग उसके दशन करते हैं) कुजी देवी गुस्से से धरई गई और बश्मोल नाम की झाडी जिसके एक दू च के बराबर लम्बे काटे होते हैं, बैठने के लिए बिछा दी । बत धारण किए उन काटो के चुमन से उनका शरीर लहू जुहान हा गया पर होनी ता अटल थी उसका पति मौत की आखरी सासे दे रहा था । वह अपने प्राणो से भी प्रिय परती को आवाजे लगाने लगा ।

अपनी दूटती हुई सासो को इकथित करते हुए अपनी पत्नी से कहने लगा -हे मेरी मोली भाली देवी तू यह पागलपन कर रही है। मैं नहीं जानता था कि तू मुझ से इतना प्रेम करती है। तू अपनी इस सुन्दर देह को क्यों मुझ नाचीज के साथ जलाप्रागी ? अपनी हूठ छाड़ दे अगद तू जलेगी भी तो तरे मायके वाले तुझे जलने नहीं देंगे। मैं अपने राम से यही वर मागता हूँ कि तुझ जैसी पत्नी मुझे जन्म जन्मांतर मिले। सती अनुसुइया जसी वह पाक प्रौरत अपने पति से बोती जिस प्रकार लक्ष्मण ने अग्नि रेखा सीता मा के लिए खीची थी उसी प्रकार मैं भी अपनी आत्मी का पुत्र अपने मायके वाले के लिए लगाउगी। मैं अपनी मर्जी से तेरे लिए मरूंगी। जब सब कुछ लुट रहा है तो मुझे जलने मरने का कोई डर नहीं न ही मुझे कोई रोक सकता है। यह सब सुनते सुनते इसके पति के प्राण उड़ गए।

हर बड़े घराने के विदमतगार हरिजन हाते थे, जिसको कोली कहते हैं। एक तरह से वे नौकर होते थे। रोते रोते कुजी उससे कहने लगी—दो आदमी मेरे मायके चले जाओ। तुम इस तरह से जाना जैसे हवा एक दिशा से दूसरी दिशा में पहुँच जाती है। हे हमारे घर के सेवाकारो नुम इस बान की सबम मत फला देना। मेरे भाई का घर के पिश्रवाडे मे बुला लेना तभी उसको यह बातें बताना।

जब वे हरिजन (कोली) मोलाड नाम के उस गाँव मे पहुँचे तो अपने आप को राक नहीं सके और फूट-फूट कर रो पडे। सब लोग इकट्ठे हुए और उनसे पूछा कि तुम क्या मादल से आए हो और क्यों रो रहे हो ? तो वे रोते हुए कहने लगे—मोलाड वासियो तुम्हारे घ्याण (लडकी) कुजी अपने पति के साथ सती हो रही है। जैसे ही उसके भाई ने यह सुना तो उसका हृदय मानो हाथ मे घ्रा गया और वह जोर जोर से चिल्लाने व रोने लगा और कहने लगा मैं ऐसा कमी नहीं होने दूगा। महत्ता के लिए मेरी बहन मर जाए मैं ऐसा नहीं होने दूगा। कौन है जा मेरी बहन का जीते जी जलाएगा ? इस बाली उम्र मे ही अपनी सुन्दर देह को एक आदमी के लिए खत्म कर देगी ? मैं उसका प्रौर विवाह कराउगा। यह कहते वह फूट फूट कर रोने लगा और पागलो की तरह कहने लगा नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूगा।

कुजी बढई से कहती है—हे बढई तू मेरी पालकी इतनी सुन्दर बनाना जैसे उडता हुआ उडन खटोला हो। हे सीता जनी पवित्र देवी। मैं तेरी जुगटु (लकडी) की पालकी मैं एक तरफ राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तिया बनाउगा। मैं तो राजा का बढई हूँ। उसका महल भी मेरे ही हाथो से बना है।

सोता और राम के साथ सार जीव जंतु गध्वी आकाश सब तरी पालकी में खाद कर चिहित करेगा। सावित्री राना जसी महान सती की भी मूर्ति बन उगा पर शत यह है कि वही तू इन महान आत्माओं के मुह पर थपड़ न मार दना। मेरी कारीगरी का भी शर्मिदा न होना पड़े। अगर तू अग्नि के शोला त डर गई तो तुम्हारे श्रुत पति की नाक बट जायेगी। उस मौके पर तू जलन से महमत कर देना। अभी तुम्हें सब लाग रोक रह हू। अब भी मौका है तू मान जा। पर वह न मानी और बढई स कहने लगी तू मुझ गाली मत दे। मैं मोलाड वाला की कथा हू जुबल की रहने वाली हू। मैं कभी ऐसा नहीं करूगी। तू मेरी पालकी में मा दुर्गा और काली माता की भी मूर्तिया बनाना ताकि मुझे ज म ज मा तर तक यही पति मिले।

जब पालकी बन गई ता सचमुच ऐसा लगता था जैसे मगधान ने अपना रथ भज दिया हो। कुजी ने अपने पति का सिर अपनी गोदी में लिया और जब पालकी लागो ने उठाई ता लगता था जैसे किसी देवी या देवता की पालकी नाचत हुए जा रही हो। अभी तक उसके मायके वाले नहीं आए थे। वह कहने लगी मुझे उठाने वाला मेरी पालकी कीमू की छाव में ले जाओ (कीमू एक पेड़ का नाम है)। तब तक मेरे मायके वाले भी आ जाएंगे।

जब उसके मायके वाले—मोलाड गाव के लोग आए तो ऐसा लगता था कि कोई सेना मगदह मचाती आ रही हो। उनके दौड़ने से खेतों की मट्टें टूट गई और उनके पास बारूद के थैले व देवदार के पड़ का तेल था जो जलन के लिए मिनट नहीं लगाता ताकि उनकी बहन व बेटा कुजी की चीख पुकार उनके कानों में न सुनाई पड़ें।

जल्दी से मेरी पालकी उठ आ मेरे मायके वाले आ गए हैं। जिन बजुर्गों के आगे मेरा मेरा सर झुकता था आज वही लोग मुझे देवी की तरह मान कर मेरे आगे हाथ जोड़ रहे हैं। यह मार में अपने साथ नहीं ले जाना चाहती। जल्दी से मुझे श्मशान घाट पर पहुंचा दो। कुजी का माई रोता कलापता बहन के पास आता है और कहता है कि हे मेरी प्रिय बहन तूने वह क्या किया? कही तेरे साथ जघरदस्ती तो नहीं की गई? तू मुझे बता दे मैं तुम्हें जलने नहीं दूंगा। हम तेरे बगैर कसे दिन काटेंगे? इस पर कुजी कहती है—हे मेरे माई मैं तो अपनी मर्जी से अपने पति के साथ सती हो रही हू। मेरी खुशी में तुम्हारी भी खुशी होनी चाहिए हे मेरे माई तुम सब रो रा कर मुझे विचलित मत करो। होनी तो झटल है इस काई नहीं टाल सकता।

जब मास्ती (महामती) कुजी की पालकी चिता पर रखी गई ता उसके मुँह

चेहरे पर एक देवी सा तंज उतर आया और सबसे हाथ जोड़कर विदा लेती हुई अपने इवसुर और जो गाव के इवसुर लगते थे, से कहने लगी अब आप सब घर चले जाओ और अपने भाई व देवरा से कहने लगी तुम मेरी चिंता को भ्रंति नगाओ ।

हाथ जोड़कर स्वर्ग की दैवियों को नमस्कार किया और उनसे वाली देवी माता भूके शक्ति दो और अपनी शक्ति रूपी जजोर से मुझे अपने पास खींच लो। मैं आपकी मेवा कहूँगी और उसने अपनी आँखें बन्द कर दी। जब चिंता म भ्रम लगाई गई ता ऐसा लगता था धुएँ का ऊपरी सिरा आकाश का छू रहा है। माना उसकी आत्मा स्वर्ग का चली गई हो।

इस लोकगीत क अ त म भोले ग्रामीण वासिया का विचार है कि कुजी देवी जो इतनी महान थी जट्टर उस दुर्गा व कालियो (सालह शावनी) ने अपने पास काम को रखा और उसके पति को पाचा पाण्डवो ने अपना कापाध्यक्ष (मण्डारी) बनाया है।

अ त में उन महान आत्माओं की आत्मा स्वर्ग को गई। मास का भक्षण भ्रंति न किया और हड्डियों का ढेर मिट्टी के हिस्से में आया ॐ

संग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर



माई और रूपु

जुब्बल व कोटगार्ड क्षेत्र म यह लोकगीत खास-रास पहाड़ी मेलो जैसे जागरा, विशू (वैसाखी) के दिन गाया जाता है। यह गाथा ज. गीतो मे ढली है एक प्रेम कहानी है। इसमे माई नाम की एक लडकी रूपु नाम के लडके के साथ भाग जाती है क्योंकि इसकी सौतेली मा होती है। उस सुन्दरी का प्रेमी पति जब मर जाता है तो वह सती हो जाती हैं। अपने माथे के कलक को धो वह मास्ती (महासती) माई के नाम से प्रसिद्ध हुई।

पारव चलाल दू देणु रूपुए पेढी
 माई चारो वाकरी चारै रूपुआ भडो।
 माएँ जाणौं ले के बाणी ले भेडो
 छिछर्ड री छाडएँ रूपु मौऊली सिकी।
 माई रा मुटु जिणो हारपो जेधो निरुकी
 रूपुए फारसे पाए गोरू दे चौरणे तू नेह डे घाए।
 माई रे ओ रूपु रे हौले बोले बताए
 काठी गाडौरी जातरो कौरे रूपुआ घाए।
 तेरी जातरो माईए मीए जाणी नँ जाणी
 तेरी हौली सतडी मुखी छाड बनाणु।
 डाठु घाए छोइए साबणे मुटु जीमे दूध
 कोठी गाढा री जातरो हौली मँगले बुधे।
 डे जलेया कोलटुघा मेरो पहाजी
 धिऊ देऊ ले गईडो ताखी गुड गडाजे।
 डेवदा धा डेवदा माईए तघा रा डौरा
 जाणदा न परेणदा रूपु ठीडी रा घोरो।
 वरी गौडे धारटे चुलटे मामटे फेडू

घाघो घेरें माघे गुगी भेंथो न तांघ ।
 घाणु द माघो तरें गाली नें छाडू
 माघो देऊ माघो ती याकरें गाडू ।
 घारो लागी पुढगा री लोहें मयाले
 ऊबे गीरे रूपुमा ठीठा पुपुए पंन ।
 पुपुए नें करदा ताव छेवटे पुते
 घाफी कई नें हाडडे तेरे वा बागणे चुटे ।
 पुढगी रें माणछी तांघ गादिए ताले
 गदे घाई बें हासबें ऊरें बीलें छालें
 बादे तैरणें मुगने पुछ मी नें बोलो
 करे ह्छो रूपुरी तैणें शादी रो घांघा ।
 माई हुई घाखीयो बरयो दुई
 माई री लागी बापू रा माव रा बसूमी
 ठीठा बोनू रूपुघा तेरी दाडी री बादी
 बाल धिए वारये ह व माईयो जादे
 रूपु तेम ठीठो रें पेटो दी ताली
 द्वागो तीमा माई ती एकी बोवाणी
 माईए तीए काल बडूरो दू शाआ
 काले मेरी गौडी रा कई जोगो घाघो
 बोनू ला बालने जाईयो नें डीरे
 तामू घाघो का बोद दो रूपु गा मीरे
 माए घाए बाठणी बें घारी ऐ घारी
 माई तीमा बाठणो दे बावती जे लागी
 रूपु ते ठीठो रे पीजने हाली
 पीजली देखे हाली दे माईये फाली ●

हिंदी अनुवाद

रूपु (नायक) घोल और दबदार के जंगल में भेडे चरा रहा था । ताले के दूसरी तरफ माई नामक युवती भेडे व उगरो को चरा रही थी । माई के अलौकिक सौंदर्य का दखकर इतने सीटी बजाई और जोर जोर से कहने लगा हे मु दर नारी तू अपने मवेशियों को चरने दे और मेरे नजदीक आकर बात मुन । जब युवती नजदीक आई तो एक सजीने नौजवान को देखकर हैरान रह गई । दोनों का मिलन कामदेव न करा दिया ।

पिलउगा और खाहू-बकरो का मांस गिनाउ गा ।

कोटखाई के नजदीक पुडग नाम ग्राम की धार पर जब वे चढ़ने लगे ता माई रूपु से कहती है कि अब मैं यह गई हूँ मुझे पीठ में उठा ले । उस पर रूपु कहता है — माई ऐसा मत कह सब लोग क्या कहेंगे? हम पर सब हनेंगे । तासकर पुडग गाव के नौजवान मुझ पर हसेगे और कहेंगे कि औरन को इसने पीठ पर बिठाया है । ये सब मेरा मजाक उठाएंगे । तेरी कौन सी टांग नट गई है जा तू चल नहीं सकती । जल्दी जल्दी चल नदी में पानी बढ रहा है । तदरो स भीगने समेग इसलिए तू जल्दी-जल्दी चल ।

जब वे घर पहुँचे तो उसके बाप मुगन ने कुछ भी नहीं कहा और सादी फरो का इंतजाम किया । उसने उसके मायक धाना का बुलाकर माफी मांगी । उनको शराब पिलाई गई और बकरो काट गए ।

जब माई की गान्ठी हुए दा साल बीत गए तो वह अपने पति में कड़वे लगी — मुझे अपने मा बाप व माई की बहुत याद सगाती है । मैं दो तीन दिन के लिए जाना चाहती हूँ उसकी ठोडी को पकड़ उम प्यार से मनाने लगी कि मुझे जाने दो । उस पर रूपु कहता है कि आज और बलक दिन तू वहीं रहना और तीसरे दिन वापिस आ जाना । तू बेगन चली जा ।

माई अपने मायक जाती है । वहा उसे दोतीन के बजाय चार दिन लग गए । चौथे दिन जब वह वापिस आ रही हाती है तो उस दूर से आता हुआ रूपु का नौकर दिखाई देता है । जब वह पास आता है ना उमसे पूछती है — तू क्यों आया है ? क्या तुम्हें मर रूपु ने बुलाने का लिए भेजा है ?

उपर उसके गाव का बह हरिजन कहता है कि हे माई अब तो मुझे बोलना पड़ेगा । तुम अपने मन को धाम लेना । तुम्हारे प्यारे पति अब इस ससार में । उन्हें पेट के दण्ड न मार डाला । यह सुन कर माई पागल सी हो गई । (पद्मावती) स दूसरी धार का पार करती हुई जब वह शमशान में तो रूपु की लाश को चिता पर रख दिया गया था और तब आग आकाश की छू रही थी । उस प्रचंड अग्नि में माई ने छलांग लगा पात के साथ जल कर सती हो गई । अपने माथे के कलक का

संग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर

बयाधा कि तहो पर पानी बड़ा है मुझ पापी पाना है । यह मयमूर घनि मूँ
 था । पर उसकी बाग बाई नहीं जान सका यह ना गाई का घान पाम बुना
 पाहना था । तब कही जाकर माई घाई घोर चानी क साटे में ११ रूप क नि
 घरी पाएर ग टक कर पापी न घाई ।

माई अपने प्रेमी रूपु न कहते सगी—हे रूपु घाज की राग तुम यहीं रहा । त
 घाटे क तिन हरा घाग, पन घोर घानी मेरी क त्री दूगा । उमक बा न
 घानी गीतली मा क पाम गई घोर बडत लगी नि मा में तेरी साइली हू न
 घाज का मेहमान है उम गूब दूय घी निलाना । माई घानी सीतली मा न
 साइ जताये सगी । उमकी मा ने गुम्ने ग कहा

क तू साइली होगा अपने बाप की घोर माई की मरा कुछ नहीं उही बोला ।
 मैं बाई का नहीं द सक्ती । जितन भी तुम्हे मायन घायन उनक लिए मैं कहा स
 अच्छा अच्छा राना साऊ ?

उस पर माई का भो गुस्सा आ गया घोर कहने लगी हे घम्मा तेरा क्या लख
 हागा ? घनाज तो मर बापू की सेती का है घोर घी मैंने अपने घाप इकटठा
 किया है ।

फिर उसने मन म विद्राह की भावना जाग उठी घोर अपने प्रेमी रूपु से कहन
 लगी कि हे सु दरता मैं अनुपम रूपु तू मेरे बापू के घर के बरामदे म लगे लकडा
 के बच पर बैठा रह । अगर मेरी गानी नहीं कराएगे ता मैं तरे साथ माग
 जाऊगी ।

उमकी सीतली मा नहीं चाहती थी कि इतना रूपवान और अच्छे घर का लडका
 माई को मिले । फिर उसकी मा उसे चीड के पत्ता को लाने के लिए भज
 देती है और साथ मे बयुप्रा की रोटी बाघ देती है ।

जब माई जगल म पहुचती है तो उसे दूर मे आता दुप्रा रूपु खिलाई देता है
 जा उसकी तलाश मे होता है । जब दोनों मिलते हैं तो जीवन भर साथ निभाने
 की काममे खाते है । रूपु उस वही म ले जाना चाहता है । माई अपना रस्मा
 और दराटी गाव की एक हरिजन लडकी के पास देती है और खुद रूपु के साथ
 भाग जाती है और प्रेम विवाह कर लेती है ।

माई अपने प्रेमी से कहनी है कि हे रूपवान रूपु तू जल्दी जल्दी चल मेर मायक
 घाले आ गए तो तुम्हे मारेंग । उस पर रूपु कहता है कि उनको घाने दा उनक
 लिए मैं पूरा इतजाम करुगा और उनको खाली नहीं रखूगा । उ ह बराब

पिलउगा और खाड़ू-बकरो का मास खिलाउ गा ।

कोटखाई के नजदीक पुडग नाम ग्राम की धार पर जब वे चढ़ने लग ता माई रूपु से कहती है कि अब मैं थक गई हू मुझे पीठ में उठा ले । उस पर रूपु कहता है — माई ऐसा मत कह सब लाग क्या कहोगे? हम पर सब हसेग । खासकर पुडग गाव के नौजवान मुक्त पर हसेग और कहग कि औरत को इसन पीठ पर बिठाया है । ये सब मेरा मजाक उठाए गे । तेरी कौन सी टांग टट गई है जो तू चल नहीं सकती । जल्दी जल्दी चल नदी में पानी बढ रहा है । लदरो से मीगने लगेंगे इसलिए तू जल्दी-जल्दी चल ।

जब वे घर पहुंच तो उसके बाप मुगल ने कुछ भी नहीं कहा और शादी फेरो का इतजाम किया । उसने उसके मायके बाबा का बुलाकर माफी मागी । उनका धाराब पिलाई गई और बकरे काटे गए ।

जब माई की शादी हुए दा साल बीग गए तो वह अपने पति से कड़ने लगी — मुझे अपने मा बाप व माई की बहुत याद सनाती है । मैं दो तीन दिन के लिए जाना चाहती हू उसकी ठोड़ी को पकड़ उम प्यार से मनाने लगी कि मुझे जाने दा । उस पर रूपवान रूपु कहता है कि आज और कल क दिन तू वहीं रहना और तीसर दिन वापिस आ जाना । तू बेगक चली जा ।

माई अपने मायके जाती है । वहा उसे दो तीन के बजाय चार दिन लग गए । चौथे दिन जब वह वापिस आ रही हाती है तो उसे दूर से आता हुआ रूपु का नौकर दिखाई दता है । जब वह पास आता है ता उससे पूछती है — तू क्यों आया है ? क्या तुझे भरे रूपु ने बुलाने क लिए भेजा है ?

उस पर उसके गाव का यह हरिजन कहता है कि हे माई अब तो मुझे बोनता ही पडेगा । तुम अपने मन को धाम लेना । तुम्हार प्यारा पति अब इस ससार में नहीं है । उ ह पट के दद न मार डाला । यह सुन कर माई पागल सी हो गई । एक धार (पहाड़ी) से दूसरी धार को पार करती हुई जब वह शमशान घाट पहुंची तो रूपु की लाश को चिता पर रख दिया गया था और तब आग की लपटें आकाश को छू रही था । उस प्रचंड अग्नि में माई ने छलाग लगा दी और अपने पति के साथ जल कर सती हा गई । अपने माये के कलक का धा डाला ।

सग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर

महासती लोता

महासती (माम्नी) लोना अपने पति भागचन्द के साथ सती हुई थी। भागचन्द जुवल के शील गाव का निवासी था और उसकी पत्नी लोता का मायका (पोहर) मढोल, सनतालनी में था। लोता का पति भागचन्द, पटवारी था और पमाइश के लिए किन्नीर गया था वही से चोमार होकर घर आया और भरी जवानी में उसे मृत्यु में अपने शिकजे में ले लिया। उसकी पत्नी लोता उसके साथ सती हुई गई। आज भी जागरा (देवता के जगराते), बीन्ना (बैशाखी), के मेले आदि में इनकी पवित्रता के गीत गाए जाते हैं।

चचुआ कदुआ बाघा दे बाघो
 ऐबं मेरं करणो गार्की रो घाघो ।
 काठी दू दणो गाडीयो सुतागणो बाघो
 शीई कीरे बेटिया शादी रो घाघा ।
 कोठी दू देणा गाडीये किनीकाफो रो ढाठू
 तिरणे आणे बेगणो तू जिणा अप्पू ।
 टाऊ हाडा चेऊडा नावरी न ले
 केईने बाके मिलदे मू चौजी रे डाले ।
 एक बै ठेवे नेगदुआ छौंऊ चुहारे
 तीनो साथी मितरी डौवो न म्हारे ।
 एक न बाणे नेगदुआ टोपुऐ आली
 कामो री मूई मटुऐ देमो गाली ।
 लोटे पौडा चुटियो चिव री बाटो
 रोपा रूबी खिमटै रा देवी रे हाटो ।

पावणा नाई बोलना प्राया हाव वित्त
 गाव ता मीए बणजी लागो भो चित्त
 एक नै देई बापूमा भूठा भरोसा
 पाकडे छाडा बापूए करासू रा साथा
 साथा करासू रा देईयो पाळू
 शीलौ मरं ठारु रो गावटू भाछो
 बीतर भाए नेगटुमा खाए लो खाणौ
 पिपौ देऊ बदरी रे कन्या दानो
 क या तेरे नि दा नाई पापो रा पिण्डा
 बीशो गाई चालशा आगले देदा
 बीतर भाए नेगटुमा हायडू घोए
 दूधो पिऊ मो रं पाके रसोए
 भागी रे काकडे जुडी फसादे
 हीए भौदें छोटे चोरी बं जादे
 तौगें लाए भागुए छौले बशीशे
 तोले लाई तोले री मुगडी मापे
 मुख न लाए नेगटुमा इतरे कागी
 मोड मेर माच सनागणौ भागी
 कागणो देऊ माची सुनागणो ताव
 शीलं मेरे ठारु रा घरं ले नांव
 काले पाखे दगला देऊ सोद खो ताव
 देभो खी चाणू देवट्टे गौणे ताव
 लाए गावा जौपियो घरी खी भाए
 ताव घाहू बोदद घरी रे दाए
 पारो भाप्रौ सतानली दू गाडरी मेसो
 कूटो पिशौ बापूमा भौसो भी तेरे
 कुट्टे री मेरे मानवी पिश रं खादे
 भाए दे मतानलू पिऊ सिहकू खादे
 लोतं रो ढैलो गाडरी शिलौ री सेरी
 मुए पापी जी रे जिऊदे तेरे
 लोतं हई भाणीयो बरशो दुई
 धुधो भी पिऊ री मोहवी कुई
 लोते हई भाणीयो बरशौ चारो
 पाया करो पितलू बाभो उधारो

उगही ऋतो दे बागा पलागो
 बालो बनायरी द ब्रीर्न पामशो
 एषो नै नीर नेगटुमा घोरो र भागा
 नगटु घाए भाग चीदी घोरा र पशो
 कुलु र द मिष्टा घरी री छूटो
 मां री लागी बापू री लातै री बमू सी
 पाडा पूजा साईं सो पाछुई बागी
 लात तिघी बाटणी द बावली नाग
 कौटू रा भाघी नेगटू बनाए मुड
 सिरं साये सिरती जादे घयाए
 चुली काई लोतया मरो सीढी छां
 बाठणीए ध्रषहीय ताडू छुटेगा हाव
 छाए ले सीढी लागे ले रु द
 भौऊरे कमाए मेरे किये ह्योदे
 लोतै री घाडो गली दो नेगीए मुडी
 लागी ली ग्याणी तू जब ले हए
 हणो नै बोले तू सो ज मो रा साये
 जाघी लो नेगटु नी जीलू ल साथ
 फिमटी चाल लउडे जाछती जाले
 भौह दघो शवरीयो स्टूकी र लाल
 नारे वेटो नेगटु एव पां जाए
 बापूए कौटु दणी लाम्बी तरागा
 पापी पूवे जोरें हाव जिऊदा जागा
 जुगटु चालो लानै रा देघो डैघो
 सोहल लाखी सावणी व बादे देघो ●

हिंदी अनुवाद

इस लोकगीत का नायक अपने चाचा कटु से कहता है हे मेरे चाचा मुझे कोई सोने की चीज दे द अब मैं जवान हो गया हूँ। मैंने अपनी शादी का इंतजाम करना है। उसका चाचा यह सुनकर घृति प्रसन्न हुआ और अपने सटूक से सोने के वजन निकाले और कहा — हे मेरे बेटे तूने तो मेरे मन की बात कही है तू बेशक अपनी शादी का इंतजाम कर सकता है। माम चंद (नायक) के पिता ने अपने सटूक से किनीकाफ नाम का

कपडा (मिर पर बाघने वाला डाठू पहाड़ी औरतो का पहरावा!) निकाल कर दिया (जिम पर साने चौड़ी का मुहम्मल काम होता है) और कहा जिनना सुन्दर तू है उसी प्रकार तेरी नेगण (नेगी की औरत) भी सुन्दर होनी चाहिए तभी तेरी सुन्दरता में चार चाद लगेंगे। वह चार पांच गाव घूमकर आ गया पर उसे कहीं भी सुन्दर डाली नजर नहीं आई। गाव हाऊ, चैवडी नावर पर उस कोई भी लडकी पसंद नहीं आई।

जब घर पर वापिस आया और तब उसके बापू ने कहा कि बेटा एक बार फिर कोशिश कर। जब वह जाने का फिर म तैयार हुआ तो उसके पिता कहने लगे कि चुहारा (जा छोटी सी रियासत थी जिसे अब रोहडू भी कहते हैं) कि कोई भी लडकी नहीं लाना क्योंकि वे बड़ी जुवान तरांग हाती है टापियाँ पहनती है इनके साथ किया हुआ रिश्ता कभी सफल नहीं होता। उसके बाद वह जुब्बल के एक गाव चिवा के रास्ते होना हुआ हाटेश्वरी माता के मंदिर के पास पहुंचा। थक कर विश्राम करने बैठ गया। जो नेगी के साथ उसका हरिजन नौकर (कोली) था उसने अगुली के इशारे से एक लडकी को दिखाया जो कि खीमटा खानदान की थी। वह अपने गाव को सहेलियों के साथ घान की रोपाई कर रही थी। वह उन सबसे सुन्दर दिखाई दे रही थी—जैसे तारो म चंद्रमा। वह (नौकर) अपने मालिक से बोला हे मालिक वह देखिए सबसे बीच में जा खडी है वहाँ आपक लिये ठीक बठेगी। इसकी और आंखों जोड़ी सोने पर मुहागा जैसी बन पडेगी।

वह देखो जिसने नाक में साने का कोका और कानों में सोने की बालिया पहनी हुई है। उसके बाद वह एक खेत से दूसरे खेत में आया और खेत की मेड़ पर बठ गया। क्या वह जिसने छोटे छोटे फूला वाला कुर्ता और काला वास्कर पहना हुआ है? सच यह ता बहुत हा सुन्दर है। अब किस तरह इसके साथ बात करेंगे?

नौकर धातों का बड़ा माहिर था उसने ना जान क्या क्या कहा और बीच खेत में खडी लोता को खेत की दूसरी तरफ बुला लिया जहाँ पर भाग्य चंद नेगी बैठा था। वह हैरान हो कर उस सुन्दर गबरू जवान को देख रही थी जिसके सलीने मूह पर पसीने की नही नही बूंदे मोती के समान चमक रही थी।

मेरे गाव का नाम शील है क्या तू मेरे गाव में चलकर घर की शोभा बन सकती है? हे सुन्दर लडकी! क्या यह बात मैं तुम्हें पूछ सकता हूँ? लोता की आंखें शम और गुस्से से लाल हा गई और कहने लगी मैं तुम्हें यहा खेत

खलिहान म क्या बाल सकती हू मेरा घर सतानली गाव मे है तुम वहा भा जाना तमी बात हागी ।

गाव की औरतें और बच्चे आपस म फुसफुसाने लगे । धीरे धीरे बात करने लगे कि लोता के साथ यह मु दर परत्सी लडका कौन है जो इगसे बातें कर रहा है ? वह घर जती है और अपन बापू से क०ती है कि पिता जी आप बाहर जाइए और दलिये कई मेहमान आया है । पना नहीं यह आपसे क्या बहना चाहता है? जरा सुनिये तो सही ।

मागच द नेगी कहता है कि मैं कोई महमान नही हू ना ही मेरी कई बुग्गे नीयत है । मैं तो अपने लिए रिशना खाजने आया था । खोजते खोजते मैं जब इधर आया ता मैंने इस लडकी को देखा जो मेरे मन को भा गई । फिर लडकी अपने बाप स कहती है कि इस आदमी का भूठी नसस्ली मत देना इसको साफ साफ कह द कि मैंने करासा के गाव में इसकी बात की हुई है । उ होने मगनी भी कर दी है ।

तुम इसकी मगनी की सब चीजें वापस कर दा मेरा शील गाव बहुत हो अच्छा है । लाता का पिता कहन लगा कि हे नेगिया के लडक तू अपने हाथ धोकर खाना खाने घ दर आ जा फिर कोई भी बात बाद म हा जाएगी । मैं अपनी लडकी क क यादान कर दूगा ।

मैं तेरी क-या को चाहता हू । तेर दहेज मे दी हुईचीज लूगा । तो मैं पाप का भागी बनूगा । मैं तो उल्टी तेरी मदद करुगा जहा तू बीम रुपये लगायेगा मैं तुम्हे चालीस दूगा । एक तो मा बाप अपन मास का पिण्ड देते है उपर मे अपना सब कुछ दे दे । मैं अपने लिए गप नही बमाना चाहता । मुम्हे तू बस लडकी ही दे देना ।

लोता का बाप बातों का टालता है और कहता है कि तू घ दर तो आ जा इस गरीबखाने मे दूध पी और शहद की ही रसाई पकी है । पहले तू हमारे घर का रूता सूखा खाना खा ल फिर देखी जाएगी । उस पर नेगी कहता है कि आप तो टाल मटाल कर रहे है जैसे ककडी की बेल मे ककडी नही घुस सकती वैसे ही घर की क-या भी छिपकर नही रह सकती । वह आते जाते को दिखाई पड जाती है ।

घर मे लकडी के दरामदे मे मागच नेगी लोता से कहता है जो तू कहेगी मैं तुम्हे दू गा । ताले तोले की बालिया तेरे मु दर कानों के लिए बनाउ गा तुम्हे सोने चादी से भर दू गा । तू एक बार हा कह दे । लोता गुस्से से बढती है कि हे नेगी

लडके तू मेरे कान मत खा। मेरे मायके वाले बहुत खराब हैं वे तुझे टालन के लिए बहुत कुछ मांगेंगे तुम कहा से दोगे ?

नेना कहने लगा तूमें मैं भ्रमो कागन और सुनागन (सोने के बड़े बड़े कगन) तेरे पीहर वाले को दूंगा। सोने से जडिन (दगला) चोला तरे सुन्न के लिये दूंगा और तुम्हारे कुच देरता का भी मंदिर बनाऊंगा तथा तुम्हें गहनो स भरपूर कर दूंगा। इस पर लोता कहने लगी मुझे तरे गहनो की भूख नहीं है पर मेरे पीहर वाले नहीं मानेंगे।

किसी तरह लोता के बापू का शादी के लिए राजी कर दिया और भागचद (नायक) खुशी खुशी अपने घर पर चला गया। जब वह अपने घर पर पहुंचा तो अपने बाप से कहने लगा कि मैं अपनी शादी पक्की कर आया हूँ क्या शादी का पूरा तजाम है? मैं बहुत बड़ी धाम दूंगा। आटा चावल किन्ने है भागचद के पास? इस पर भागचद के पिता ने जवाब दिया बेटे अनाज के मण्डार है तू किसी बात का फिकर न कर। मेरे घर में सब कुछ है।

जब लोता को यहाँ बरात पहुँची तो ऐसा लगता जैसे पूरी सना चल रही हो। डोल-नगारों, शहनाइयो की गूँज से आकाश गूँज उठा जब शादी का हो हल्ला खत्म हुआ तो लोता अपने पति भागचद से कहने लगी कि जब मैं मर जाऊँगी तब तो मुझे यमदूत ले जायेंगे पर जीते जी तुभम मुझे कोई अलग नहीं कर सकता। मेरा जीना व मरना तेरे ही लिए है।

दिन पर दिन बीतत गए। लोता को शादी हुए दो साल हो गए थे। मचमुच वह लक्ष्मीरूप थी। सबसे वह उस घर में भाई थी तो दूध घी की कमी नहीं रही थी और शहद स कुएँ भर गए थे। उनके घर से लोग अनाज व पैसे उधार ले जाते थे। उसके घर से किनी भी चीज की कमी नहीं रही थी।

वशाख का महीना था। पक्षी चहचहा रहे थे। भागचद को घर की याद सता रही थी। वह किन्नोर में पंपाइश के काम लगा हुआ था और उसे घर जान की छुट्टी नहीं मिल रही थी। कुछ दिन बाद उसने अपने अफसर से छुट्टी मांगी कि उसे अपने माँ बाप की व प्राणों से भी प्यारी पत्नी की याद आ रही है। पर उसे छुट्टी नहीं मिली।

वह किन्नोर में ही बीमार हो गया। उसके अफसर ने उसका एक घाड़ा दिया साथ में एक आत्मी भी उसके साथ भेज दिया। जब उसका घोड़ा घर के नजदीक पहुँचा तो वह बुखार से तप रहा था। दद के मारे सिर फटा जा रहा था। माँ को मफसर से बधा देल उसकी पत्नी लोता पागल हो उठी कि यह क्या हो गया? वह अपने पति की तरफ भागी।

हे मेरी सुन्दर पत्नी! अब तेरा मर साप छूट रहा है। जरा जल्दी के लिए बूढ़ के पास बिस्तर लाया दे क्योंकि मुझे बहुत ठंड लगी है। यह सुन कर लोता रोती हुई कहने लगी—हे मेरे भगवान मैंने एमा कौनसा पाप किया है जिसकी तू मुझे ये सजा दे रहा है? मेरे पति को भञ्जा कर दे देने में मेरी जान से से। प्रभु तू क्या मुझ मासूम की जिन्दगी बर्बाद कर रहा है? लोता के पति ने अपना तिर उसकी गोदी में रथ दिया और बुलार से हुई बोझिल हुई पलंग को उठा उसके आसुषो ग नरे मनीने मुह को देखकर कहने लगा—तुझे मेरी बमम अगर तू रोए। मेरे मन हो और दु-बो मत बना। हे मेरे प्राणो से भी ध्यारे ऐसा मत कह। तू तो मेरे ज म-जम का साथी है। अब तू मर जाएगा तो मैं भी तेरे साथ मर जाऊंगी।

अपनी बात पूरी भी न कर पाई थी कि उसकी गोद में मागचन्द के प्राण निकल गए। फिर लोता ने चुपचाप उसका सर नीचे रखा और अपने श्वसुर से कहने लगी आपका बेटा यह दुनिया छोड़ चुका है। बाप ने जैसे ही सुना जार जोर से रोने लगा और कहने लगा पापी यमदूत ने मुझे जीते जी मार डाला मैं कहाँ जाऊ क्या कह ? लाता ने चाबिया ली और अफीम खाने चल पड़ी।

जब लोता की पालकी शमशान घाट को जाने लगी तो लगता था जमे किसी देवी का रथ उड़ रहा है। उसमें सारे देवी देवताओं का बिहित किया गया था। अपने पतिव्रता होने का प्रमाण देकर मौली माली प्रामीण बाला स्वर्ग का दरवाजा खोल गई और मास्मी (महासती) लोता के नाम से अपनी लाक गाथा प्रमर कर गई। आज भी हर बच्चा ब बूढ़ा यह लोकगीत सुनसुनाता सुनाई देता है ●

अनुवाद व संप्रहण
कु० सुमित्रा ठाकुर

मिया दाऊद और महासती नरजी

मिया दाऊद और उनकी पत्नी नरजी का लोकगीत रोहड़ू और जुब्बल क्षेत्रों में अधिकतर मेलों और त्यौहारों में गाया जाता है। एक पहाड़ी गाव की सीधी सादी यह राजपूत कन्या अपने छ महीने की बच्ची को छोड़, अपने पति के साथ सती हो गई थी। और अपना नाम मास्ती के रूप में प्रसिद्ध कर गई (मास्ती का अर्थ महासती है)। इसलिए इन देवियों की कुर्बानी को लोकगीतों में टाल दिया गया और ये लोकगीत न जाने किस काल से गाए जाते हैं। आज भी इनके गीत बड़ी श्रद्धा से गाए जा रहे हैं। अपने पति के प्रति उनका आगाध प्रेम पवित्रता का प्रमाण देता है।

मुला मलाए श्रीले बेरे मलाए
मारण आम नरजी हेडू ल गाए
जो पाके चोऊकी बागी लोए पाए राती
हाथे किए नरज ए शणुवादे दाचे
बेटू देए बमणा जो लऊद लाए
आपू गोए नरजे लाडे धोरी खी आए
धूप धूप छेडूओ तूए क ग भी नै लाओ
पारो बेथी धुणीयो मिये दाउदी रो नाव
उगी देडी नरजीए सेरे दी फाली
हाथे भाई मोलुईया जो गेहू री डाली
चाडीयो नै नरजीए गेहू री डाली
गौडी री छेवडी दमो भाई री गाली

लाडो तीऐ नरजीए तबडे पो जाणा
 बाघ जिणो बानीये खाली घांगणो घ्राणो
 नेरे ला था दाऊदा मिया नेरे जा राऐ
 किदी म्हारे करणो नाई बण सुगरी रो मासो
 मोकते थे पीइतो म्हारे मोकते थे छासो
 समझी ले नरजीए बोले बताए
 बोले बताए पाऊ मौडै ख तेरे
 छ महीन रे वेटकी रे पाईदे नै मेरे
 छ महीन री वेटकी रे कौरोयो न भौरे
 नाना बूडू दाचो धीऊ शाकरै कोरे
 छ महीने री वेटकी रा कौरोपो नै घाका
 दादा बूडू धाचो धनी देवरो वाका
 कुण तेरे गौडी दा गडाईतो कोले
 छाहो मेगी बरासली खी उढदे जाई
 कोलीया गडाईत फूको नै बोले
 माई पूछे खऱडकू नव घीरे रे ओचै
 माई तैणै खोडकुए दूरी दू शामो
 बेठू मेरी वीहणा कई जोगो ग्रामा
 बावू ला बोल गी जार्यो नै ठौरे
 लाडो टाडूए जीलदे मिया दाऊदो गा पीरे
 माए मानी ला खोडकू मुकीयै हीमो
 एट देवा मातीया का दाऊदो दो कीयो
 सुगरी रो सुगटु गी सीऊ को फीरे
 मीयां हेडा दाऊदो दुई बील चोरे
 एक लाए कराडीये लागे लोहू रे फीसो
 दूजो लाए कराडाए लाटो ताकडा घीसो
 गौडी र लाए गडाईनै फूके टयाले
 जोले गोए बरासतुयो घ्याणो तारे
 धनीया बानू देवरा सूची वा तेरे
 मोडै भा मास्ती र कौरे सकेरे
 बाडी रे बडहुमा तू सो राजे री फीया
 तीणो त्याणा जुगटु चाणे सते सीया
 गौडी री छेबडीया मेरीयो माघो
 एक घोघ पाणी रो मुसै नाईणो खी साघो

गीही री छेवहीयो कीरी सकेर
 रुदे कई ने नरजीये सुधी का तेर
 रुदे ने झुरदे झीलए नं भागु
 री छेवहीयो हांव मास्ते मीसू
 श्वुरा बोलौ तांथ बऊए जलने नं देऊ
 घीने मेरे साफहा ताव तेसखी फरऊ
 एक बोलने बोलीया दुजे बोलीयो ऐती
 घने दौंग देवरो भाई सोडवू जेतो
 बादे चाने बरासलू मावला माहू
 गिने देऊ मानजी खो दगयो वाहू
 चुपी मेरी जुगटु पीउहं खाली
 माचि घाए नरी रं घोर रे जे छासो
 माए पूछी खोडवू जुगटु रं मोलं
 टाटी मेरी बदणीए मुईलं बोलं
 टाटी तेरी भाईया बुद्ध खो की रे जीवू
 जुगी गाघो नरजे बाही धाकरो गुहो
 पोर निमो इमो बेटकी खीरे पोहं रहो
 शाशू तूए सोवरं घरो खी जाघी
 घनीया बोलू देवरा तूए उकला साघी
 घागी री लागी लऊकं दागली पाघी
 सोलह बालू दावणीयो तूए मरीयो माघी
 सांस डवा मंगे मंगे भोगी ले घागी
 दाही रं रहवु रीए माटी रं मागी ●

हिंदी अनुवाद

मेले में घाए हुए लोग घबड़कट्टे हाकर नाचते गात हैं और देवी नरजी
 का मरप (कहानी) गाते हैं। जो की खेती पक गई थी और नरजी अपने
 नौकरा को साथ ले हाथ में धुंधघमो वाली दराटी ले जी काटने खेत में गई।
 नौकरों को खेत दिखाकर उनको काम देकर खुद घर की ओर चल पड़ी।
 नौकर जो काटने लग पड़े। जब वह वापिस आ रही थी तो उसे कहीं से घीमी
 भावाजें सुनाई पड़ी और फिर वह नौकरो से कहने लगी तुम जरा चुप हो जाओ
 मुझे अपने पति दाऊद का नाम सुनाई पड़ रहा है कोई बायद उन्हें पुरार रहा है।

नरजी पबराई हुई एक रेत से दूसरे मत में छलागे लगती हुई पर एक तरफ भागी कही हाथ म जो की ओर कही गहू की डालियां उखाड़ कर घा गई गांव की ओरतें यह सब दख रही थी और उस गालियां देने लगी कि गेहू और जो वे रेतो वे बीघो बीघ जा रही है और भनाज सराब कर रही है।

नरजी जब घर पहुची तो उसे मालूम हुआ कि शेर जस बलवान उसके पति बाघ की तरह बाघ कर लोग घर लाए गाव के लोगो ने उसके जटमी वरीर प्रांगम मे रण दिया। रोते रोते नरजी कहने लगी कि मैं तुम्हे इतना रोक रही कि हमने जगली सुघर का भास क्या करना है हम रूखी सुखी ही खा लेंगे। हम घर मे घी दूध लस्सी दालें सब कुछ तो था, फिर भी तुम नहीं माने। मियां दाद अपनी पत्नी की ओर देखता और हाथ बढ़ाता है तो नरजी कहती है मैं अपना धायदा नहीं भूली। जीना भी तुम्हें सग था मरुंगी भी तेरे ही सग। मियां अपना छोटी बेटी की तरफ देखता है। नरजी उसकी बात का समझ गई और कहने ल कि हमारी नहीं बच्ची को उसके दाद दादी और नाना नानी दूध घी शक् से पालेंगे।

तुम छ महीने की बेटी को छोड़ने का गम न करो अपनी आत्मा पर बोझ मत जाभा इसका चाचा धनी राम इसे अपनी बेटी की तरह देखेगा। मैं इससे बच लेती हू। नरजी यहा बैठी गाव वालो से कहने लगी कि अब आप मेरे मा बा के घर गाव बरासली को दो आदमी भेजो और उ ह पता दो कि उनकी लक्ष सती हो रही है।

जब उनके गाव के दो हरिजन जाने लगे तो उनसे कहने लगी कि तुम शोर न मच ना चुपके से मेरे भाई को नए बने हुए घर के पास बुलाना तमी उसे सब बात कहना। नरजी के भाई ने उ हे दूर से आते हुए दख लिया और कहने लगा कि मेरे बहन के काम करने वाले क्यों आये हैं और उनसे पूछने लगा कि तुम क्यों आये हो उस पर एक ने कहा कि अब बालना ही पड़ेगा पर आप डर मत जाना अपने आप पर काबू रखना। आपको बहन नरजी ने मती होने की ठानी है क्योंकि उनका पति अब इस ससार मे नहीं रहा।

भाई खडकू अपनी छाती पीट लेता है और कहता है कि मियां दाऊद को क्या हो गया था। हे भगवान तूने यह क्या कर दिया।

उस पर नौकर कहने लगा कि मिया दाऊद सुघर का शिकार खेलने गये थे आचानक उहोंने एक आदमी की परछाई देखी और थोड़ी ही देर मे एक सुघर उन पर झपट पडा पर मियां दाऊद ने उसे कुलहाडी से मारा उतने मे एक सूरनी आई।

जैसे ही वह उसे मारने दीड़े तो उन्हें एक सकेतपोष घादमी दिखाई दिया और
मियां दाऊ ने सोचा कि यह जरूर कोई देव है और उनका धर्म हुआ ।

सारे गांव वाले इकट्ठे हो गए उनसे बोली (हरिजन) ने कहा कि हे बरासली गांव
के लोगो तुम्हारी महान लडकी नरजी अपने पति के साथ मास्ती(महासती) हो रही
हे आप सब धन्य हैं ।

दूसरी तरफ — नरजी अपने देवर से कहती है कि अब मायो मन गव यात्रा की
तैयारी मे लग जाओ और मेरे लिए भी सुंदर पालकी बनाओ ।

उसके बाद वह बड़ई के पास जाती है कि तू ता रात्रा के महलो का बनान
वाला है मेरी पालकी को धति सुंदर बनाना लगे जैसे कोई बारात आ रही हो ।
हां देवी में वसा ही बनाऊंगा । उसमे सारे देवी-देवताओ और राम की पत्नी
सीता देवी की मूर्तियां भी बनाऊंगा ।

उसके बाद वह गांव की औरतो से कहती है हे मेरे गांव की मां और बहनो अब
मुझे नहलाओ मेरा पूरा श्रु गार करो ।

गांव की औरतो कहती हैं कि तुझे क्या हो गया है तू तो रो भी नहीं रही है । क्या
पागल हो गई है जो तुझे रोना भी नहीं घाना हमारा तो कलेजा फटा जा रहा
है । उस पर नरजी हम कर कहती है मैं न रोऊंगी, और न मुझे कोई गम है । हे
मेरे गांवकी औरतो! मैं तो अपने पति मग जल जाऊंगी । उसके साथ सती हो
जाऊंगी । फिर रोना घोता क्या ।

नरजी का समुर नरजी से कहने लगा कि -हे मेरे घर की शोभा, मेरी बहू मैं तुझे
जलने नहीं दूंगा । तेरी शादी मैं अपने छोटे बेटे धनी राम से कराऊंगा
हे मेरे पिता समान समुर जी एक बार तो आप ने बोल दिया भगवान के लिए
अब ऐसा अवशर मुह से न निकालना क्योंकि देवर धनी राम मुझे अपने भाई
लडकू के समान है ऐसा पाप मैं साच भी नही सकती ।

उसके पीहर वाले बरासली गांव के और उसक मामा साहू राम भी आ गए । जिस
तरह से आले आते हैं उसी तरह बहुत ताण्डम । उसके पीहर वाले आए मामा
साहू पूरा श्रु गार का समान और मसहदरया नामक कपडे का ढाहू लाया । हे
मेरे गांव बदशाल के लोगो अब मेरी पालकी उठाओ । मेरे मायके वाले और
मामा भी आ गए हैं । छोटा भाई लडकू जोर जार से रोने लगा और पालकी के
पास आया और कहने लगा कि बहन तुम क्या सती हो रही? तुम्हें किस बात की
मुश्किल है जरा अपनी छोटी बच्ची का भी तो सोचो । जान वाला तो चला
गया । हे मेरे भाई! मत रो मैं तो अपनी मर्जी से अपने पति के साथ सती हो रही
हूँ तुम सब मेरी बच्ची का ख्याल रखना ।

नरजी अपनी न ही बेटी को खूब प्यार करती है और सबके समक्ष उसे
 है और अपनी सास को कहती है कि अब इसे यहाँ से ले जाओ क्योंकि तब पूरा
 मेरी यह नही बच्ची नही सह पा रही है, इसलिए इसे घर ले जाओ। अपना मन
 भा गया। घोट कर यह वहाँ से चल दी। पालकी शमशान की तरफ चल पड़ी।
 जितने भी गाँव के शय्युर और सास है वे घर चले जाओ मैं आपका अपना
 आखरी नमस्कार कहती हूँ। हे मेरे माई समान देवर तुम चिता को भाग लगाओ।
 नरजी आँसे मूँद सोसह रूपी काली माता व दुर्गा माता की प्रायना करने लगी
 कि हे माँ मुझे धरित दो। भाग की लपटें आकाश को छूने लगी एक देवी ने
 अपने आप को पति के साथ सती कर दिया अपना नाम महासती नरजी के
 रूप में धरित कर गई।

आत्मा तो स्वर्ग में चली गई और मास को भग्नि ने अपना भोजन बनाया और
 हड्डियाँ माटी के हिस्से में रह गई।

सप्रहण व अनुवाद
 कु० सुमित्रा ठाकुर

घेशू लोभिया

यह गीत एक दुखद घटना पर आधारित है। कुल्लू के कुछ लोग पुरुष, स्त्री-बच्चा में जगलात के ठेकेदार के साथ काम पर गए थे। उनमें घनू और उनकी पत्नी भी थी। सुन्दर नाम का एक युवक घेशू की पत्नी पर आशिक हो गया। वह घेशू को शराब पीने के बहाने गाव में ले गया और वहाँ उसे मार दिया। परन्तु घेशू की पत्नी उस के हाथ न आई। वह किसी तरह वहाँ से भाग कर घर पहुँची। उसी ने पति के दुख में यह गाना गाया जो लाकगीत बना -

घेशू लोभिया, जान घनी जोऊपा रे खूडा
 लामा रा हीठा धी बागा कामा व घीरे घापणा छूडा
 भूरी लोभ रीह सीदा व माणू री काया रा घूडा
 दगा छौडिया प्रदेगा वे जाणा कली रा लोडुपा बूरा
 मारदा मोत डे पापी सु दरा घीरा छुटी बुढनु मामा
 घीर छुट्टा आई भूई रा हीर छुट्टा बूढलू मामा
 हीवे छुटे घालक मेरे बाबू छुट्टा मारदा हाका
 कुली रा लोडुपा पापी सु दरा, देईरा नी धी कौसी वे धाका
 मारदा मोत डे पापी सु दरा हीपा रे कागणू देतू
 देऊपा वे देतू बौकरू देवी वे सनागणू देतू
 मारदा मोत डे पापी सु दरा लीका रे देशे
 कुण घाचला मामा बापू वे कुण जाला ति हारी मेशे

हिन्दी अनुवाद

हे पतु प्रेमी, जान दो (तूने) ओ के खुड म (पाम और पतु रखने के कर्मरे में,
बा गया था तू जगल के काम, घर म तेरे काफी था (कमी न थी)।
प्रेम- प्यार जीवित रहा है हमेशा के लिये मनुष्य के गरीर की पूति बन गई
देश छोड प्रदेश गया, किस का बुरा (काम) खडा हो गया
मारना मत हे पापी सु दर, घर में छूट (रह) गई बूढी मा
घर छूट गया तीन मजिन बा और छूटा बूढा मामा
छोटे छूट गये बालक मेरे, बाप रह गया मारता भावाजें
किस का पाप खडा हुमा (कारण बना) दिया नही था किसी को बक्का (भी)
मारना मत हे पापी सु दर हाथ के कगन दे दू
देवता को दू गा बकरा देवी को साने का कगन दू
मारना मत हे पापी सु दर लोगो के देश मे
कौन पानेगा मा बाप को कौन जाएगा उन की देख माल के लिए □

सप्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

फूला देई बाह्यणीए

भोतर मे मेला लगा था । लोग पी कर मस्त थे । विश्राम
गह मे मत्री महोदय पधारे थे । तभी एक सरकारी अधिकारी को
बाहर अपनी पुरानी प्रेमिका फूला देवी के दशन हुए । लडकी
'राउगी नाला' गाँव को विवाहित स्त्री थी । उसकी गोद म एक बप
का बच्चा था । अधिकारी ने फूला देवी को बच्चे समेत जीप म
डाला और जीप दौडा कर उसे ले भागा । साथ कुछ और मुस्टडे हो
लिए । अभी जीप बहुत दूर न गई थी कि एक खड्ड मे गिर गई ।
सभी मुरशित थे । केवल फूला देवी दुध टना का शिकार हुई ।

फुला देई बाह्याणीए, ठाडे कमरे
 ठारा पीई बोतला, ठाडे कमरे
 देके रे बोले तू सुनी नीदरे
 आपू रीही सुतिया, छोली खाई बादरे
 साभा ढीसी थी लोगडे, दोधी सादरे
 जाच लागो थी भूइए बाबू चदरे
 राउगी नाले री बाह्याणीय पाई जीपा भादरे
 तू भी बठी था बाह्याणीए, जीपा भादरे
 सडका शोटिया बाह्याणीए जीपा नाल जादरे
 आपू पूजी तू नाल' न शोहरू भीफा जोदरे
 लाश पूजी तेरी बाह्याणीए ठाणा हादरे
 सोड खाई थी बाबूए नेगी लाम्बरे

हिन्दी अनुवाद

फुला देई मेरी बाह्याणीए ठण्डे कमरे मे
 भठारह पी ली थी बोतलें (शराब की) ठण्डे कमरे मे
 खेत के किनारे साई तू गहरी नीद मे
 आप तो सोई रही भक्की खाई बदरो ने ।
 शाम को मारा था तुम्हे छण्डे से प्रात लकडी विशेष से
 मेला लगा था भूतर मे, बाबू चदरे ने
 राउगी नाले की बाह्याणी डाल दी जीप के भीतर
 तू भी बठी थी बाह्याणी जीप के अंदर
 सडक छूड के हे बाह्याणी जीप गिरी नाले मे
 खुद तो तू नाले मे पहुची लडका भाडी म पत गया
 लाश पहुची तेरी घान के अंदर
 रिश्वत खाई बाबू ने जलदार और लम्बरदार ने ।●

सप्रहण व अनुवाद
 बालकृष्ण ठाकुर

भियाणीए

भियाणी नाम का एक लोक गीत बहुत प्राचीन समय से चला आ रहा है। असल घटना क्या रही होगी अब यह मालूम नहीं है परन्तु घटना बड़ी दुःखद रही होगी यह गीत के शब्दों से स्पष्ट है। गीत की वरुणा भरी शब्दावली देखने योग्य है।

हाइये भियाणीए कोने कीए काहणी मूणी
याणी बाली बे हुई मोता चीडी डाला री रूणी
छाती लागे भौलका मना री बुभुणी कूणी
नाला घारा मोपटे नेंदीए जोते री बागरे पूणी
मुमण मोरिया केरू हडणा नाई धी रांवडी जण्णी
जेबे लागी तेरी सोठणी छाती लाई कुटणी घाणी
खीर गगा रा जायळ नीला ब्यासा रा पाणी
फूना सेही धी हालकी गाना धी वि हीया लागी
याद लागी ए दी भुभू कुणी बुडिण रहाणी
हौळ नीमे बौहया हेरिदी हौछिए कणी
तू हीठी मोरिया याद सा बिसरी आणी
हाड गुके पिडे रे, लोहू रा निरशा पाणी
कुणी बुभुणा से इसा मेरा गोला लागे हरिदा पाणी
भियाणी सियाणुई गीत रोही याणी री याणी □

हिन्दी अनुवाद

धरी भियाणी, कानो म यह क्या कथनी सुन ली
नोजवान की भीत हुई, चिडिया दास्ता पर रो दी है
छाती लगी है जलने मन की (बात) समझेगा कौन
नाले धारों में तड़फते रहे जोत की वायु न तरस। दिया
परदा डालकर किया था खलना, नहीं था अच्छी तरह पहचाना
जब लगी थी तेरी माद छाती पर लग कूटने धान
रीर वसा का चश्मा, नीला ब्यास का पानी
पूत्र की तरह थी हल्की गले में (हार की तरह) पिरो कर लगा दू
याद लगी है धाने भपक कर, किम युद्धि से भुना दू
भासू बह कर खत्म हुए, देखते हुए भी धधे हो गये हैं
तू गई है मर याद नहीं भूलने में धर रही
हड्डियों मूख गयी शरीर की लहू का (धन गया) साफ पानी
कौन समझे सशय मेरा गले में पानी नजर आ रहा है
भियाणी (की याद) वूढी हो गयी, गीत रहा अभी जवान का जवान●

सप्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

चिडूआ

यह प्रणय गीत है। प्रायः स्त्रिया और पुरुष साथ साथ गाते हैं।
गाते हुए स्त्रिया चिडूआ (हे पक्षी) का सम्बोधन करती है और पुरुष
चिडीए (हे चिडिया) कह कर गाते हैं।

पु० छोड़ी देणी गराहुजी चिडीए, चौल उयडी धारा
चौल उयडी धारा चिडीए चौल उयडी धारा
स्त्री मन लागला दूहीरा चिडूआ चौल उयडी धारा
चौल उयडी धारा चिडूआ चौल उयडी धारा

देस नी रौट् जीण्-वे चिडीए, बोणा रोहणा सारा
 जोता जोता न हुडणा चिडूभा, बाल्हा हुडणा फारा
 याल्हा हुडणा फारा चिडूभा
 छोड़ी देणा ए साधरा चिडीए, मियारू निकता तारा
 नाई छुटदा साधरा चिडूभा, सोंग सदका म्हारा
 साग सदका म्हारा चिडूभा
 पालवे घाटो पाहुणे चिडीए घोर मोरुभा सारा
 घोर मोरुभा पाहुणे चिडूभा कोखे जाईदू म्हारा
 कोखे जाईदू म्हारा चिडूभा
 जोंधे हुडणा शोमलो चिडीए, देस भालना सारा
 चिडू उडू मेरा घाउडे लोमा न, सारा मुल्क निहारा
 सारा मुल्क निहारा चिडूभा
 लोमा-शामा वे साउग चिडीए नाला तोपली धारा
 छेके मिलडे मने रे चिडूभा गोला शामिला हारा
 गोले शोमिली हारा चिडूभा
 को "होठा दूरा देशा बै चिडूभा पाणी शोकती भाला
 कोकडी मेरी लडफडाउई कालजे लाई छाला
 कालजे लाई छाला चिडूभा
 देऊभा रा सा मोहरु चिडीए तेरा मूहडू काला
 कोधी बाणना ए तो बी चिडीए मेरे गाला री भाला
 मेरे गोला री भाला चिडीए
 तेरी मेरी ए जोडी की लोभीया घुडी-मुडी रा डाला
 तेरे एई लोमा रा चिडीए बिणी सुरे मताला
 बिणी सुरे मताला चिडीए
 चिडू रा लेणा जलम लामाया दुहा रोहण डाला
 रीई तोसा रे डाला चिडूभा रीई तीसा रे डाला । ●

हवी अनुवाद

पु० छोड देनी ग्राम बादी हे चिडिया, चल ऊचे पवत पर
 चल ऊचे पवत पर चिडिया, चल ऊचे पवत पर
 स्त्री मन लगेगा दोनो का हे पक्षी चल ऊचे पवत पर
 चल ऊचे पवत पर पक्षी चल ऊचे पवत पर

देश नहीं रहा जीने के (काबिल) है चिड़िया, वन में रहा भ्रष्टा है
पवत पवत पर चनें पक्षी, मैदान का चलना अधिक (कठिन) होता है
मैदान का चलना

छोड़ देना यह विस्तर चिड़िया भोर का निकला है ताश
नहीं छूटता विस्तर पक्षी, सग हभेसा का है हमारा

सग हमेशा का

भजनबी भाये महमान चिड़िया, घर मर गया सारा
घर मर गया महमान से पक्षी, कहा है प्रियतम हमारा
कहाँ है जाईडू (एक पक्षी है जो प्रियतम का प्रतीक है)
पैर से चलना भ्रष्टा है चिड़िया देश देखना है सारा
पक्षी उड़ा मेरे अघूरे प्रेम में, सारा देश अघेश (हो गया है)

सारा देश अघेरा

प्यार और दोसा के लिये साथ (जरूगी है) चिड़िया नाले दूडेगी घर में
बीघ्र मिल अरे मन के पक्षी गले में सजेगी हार

गले में सजेगी

कहाँ गया दूर देश को पक्षी पानी जहर वाला (है वहाँ)
हृदय मेरा तडफ रहा है, कलेजा मार रहा छलागे

कलेजा मार रहा है छलागे

देवता की मूर्ति सा है चिड़िया, तेरा मुख श्याम (काला)
कब बनेगी तू भी चिड़िया मेरे गले की माला

मेरे गले की माला

तेरी मरी यह जोड़ी प्रिय, सिर से पैर तक बराबर है
तेरे इस प्रेम में चिड़िया (मैं) बिना शराब के मतवाला हूँ

बिना शराब

पक्षी का लेंगे (हम)जम प्रिय, दोनो रहने शाखा पर रई और तोस
(वृक्ष विशेष) की शाखा पर,

रई, तोस की शाखा पर●

सग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

श्रोवूआ श्रौज रहणी म्हारे

यह भ्रम गीत है। जेठ-आपाह मे जब खेतो मे धान रोपे जाते हैं तो घुटनो तक खेतो मे पानी होता है। धान की पौध एक छोटी ब्यारी से उखाह धर बडे-बडे खेतो म पुन रोपी जाती है। रोपने के श्रम-प्रधान काम की थकावट को गीत गा-गा कर दूर किया जाता है। श्रोवू और श्रोवी किसी पुराने जमाने मे प्रेमी प्रेमिका हुए हैं, जिनका प्यार इसी परिवेश मे बनपा था और अब उनके प्यार की याद लोकगीत में ताजा है। धान रोपने के कार्य को 'रहणी' कहते हैं। रहणी खेत के एक किनारे से आरम्भ होती है और दूसरे किनारे गाने के साथ समाप्त होती है।

स्त्रिया—हाडे श्रोवूआ

पुरुष—श्रोवे हो

स्त्रिया - छेता लागी श्रौज रहणी म्हारे

पुरुष - रहणी म्हारे रहणी म्हारे

स्त्रिया - हाई ए श्रोबीए

पुरुष—श्रोवे हो

स्त्री—तू बी लाडी भाई म्हारे जुमारे

म्हारे जुमारे म्हारे जुमारे

हाडे श्रोवूआ श्रोवे हो

रहानी ता लागी हौछी रे शारे

नाई जाणुदा हौछी रे शारे

हाई ए श्रोवीए श्रोवे हो

सोफा लोडी भाई पाहुणी म्हारे

सोमली भूरी, पाहुणी म्हारे
 हाडे भोवूभा भोवे हो
 भोज नामी म लदे दूवे दिहाडे
 जेठा शाढा रे लोमे दिहाडे
 हाईए भोबीए भोवे हो
 इहा छेता भोजले, गौरा चुहारे
 खीसे मीरी छाणी, गौरी चुहारे
 हाडे भोवूभा भोवे हो
 मेली लोडी तू होरी तुभारे
 भोज के बिछड होरी तुभारे
 हाईए भोबीए भावे हा
 छेता निमी एवे रुहणी सारे
 छेता रे पूजे दूजे बनारे

स्त्री पु हाडे भोवूभा हाईए भोबीए
 घौरा पुजणा, कुणी नुहारे
 पुजणा हाला कुणी नुहारे ●

हिंही अनुवाद

स्त्री घर भोवू

पु०—भोवे हो

स्त्री—खेतो मे लगी भोज रुहणी (धान रोपाई) हमारे

पु०—रुहणी हमारे रुहणी हमारे

स्त्री—भरी भोबी

पु०—भावे हो

स्त्री तू भी आ जाना हमारे जुभारे (साम्ने काम पर। हमारं जुभारे (सहायता

के लिए बुलाए लोगा द्वारा काम)

भरे भोवू भोव हो

नाजुल भाखा के इशारे लगे है

(तू) तही जानता भोवो के इशारे

भरी भोबी भावे हो

शाम को चाहिए भाई महमान हमारे

सुंदर प्रेमिका महमान हमारे

भरे भोवू भोवे हो

प्रेमी को देखते घाज, दूब गए दिन
 जेठ घापाड़ के लम्बे दिन (बीत गए)
 घरी घोबी घावे हो
 इन सेतो में उपजेंगे, गरी घोर छुहारे
 जेब में भर के लागे, गरी घोर छुहारे
 घरे घोषू घोवे हो ।
 मिस लेना तुम, भगले इतवार को
 घाज के बिछुड़ कर भगले इतवार को
 घरी घोबी - घोवे हो
 सेतो में समाप्त हुई भय रूहणी लारे (सेतो में)
 सेतो के पहुँचे, दूसरे किनारे पर
 स्त्री० पु० घरे घोषू घरी घोबी
 पर पहुँचेगे, किस शकल में
 पहुँचना होगा, किस शकल में ●

सप्रहण व अनुषाव
 दयामा ठाकुर

हेसरू बोला हे सार

यह गीत बड़े बड़े सठ्ठो, शहतीरो पर्यरो को घसीटते हुए गाया जाता है। शहतीर में लम्बे रस्से बांधे जाते हैं। रस्सों के दोनों ओर लोग खड़े होते हैं। एक आदमी गीत के टप्पे बोलता है शेष सभी कवल 'हे सार कहते हैं और उसके साथ रस्ता खींचते हैं। टप्पे बोलने वाला व्याक्त बड़ा चतुर कुशल, योग्य कवि और गायक होना चाहिए क्योंकि वह गीत में मनोरञ्जकता लाता है। एक पक्ति को कई खण्डों में बाटता है हर खण्ड को अनेक बार बोलता है हर बार लोग 'हे सार' कहते हैं और शहतीर को खींचते हैं। हर खण्ड के शब्द के बाद यह आकांक्षा रहती है कि वह क्या बोलने वाला है, जैसे—तेरे खेता मे हे सार तेरे खेना मे हे सार आज की रात हे सार आज की रात हे सार, हम मिलेंगे हे सार, हम मिलेंगे हे सार, निपट अकेले हे सार'। कई बार वह अश्लील भी बोलता है परंतु भवसर को देखकर। 'हे सार का कोई अर्थ नहीं है। सम्भवत यह शब्द आरम्भ में 'हे ईश्वर' था। बाद में हे सार बना। लाग भारी काम करते हुए ईश्वर से उस की पूति के लिए प्रार्थना करते थे।

हेसरू बोला	हे सार
रोई रा धार	ह सार
जोर नी लाला	हे सार
देऊया री कार	हे सार
मुटडी पाधे	हे सार
बैठा घुघता	हे सार
पाह्णी डीकिया	हे सार

प्रेमी वा देगते घाज, दूब गए दिन
 जेठ घाणाइ के सम्बे दिन (बीत गए)
 घरी घाबी घाबे हा
 इन रोतो में उपजेगे, गरी घोर छुहारे
 जेब में मर के सागा, गरी घोर छुहारे
 घरे घोबू घोबे हो ।
 मिस सेता तुम, घगले इतवार को
 घाज के बिछुड़ कर, घगले इतवार को
 घरी घोबी .. घोबे हा
 रोतों में समाप्त हुई अब रूहणी सारे (मेता में)
 रोतों के पहुचे, दूसरे किनारे पर
 स्त्री० पु० घरे घोबू घरी घोबी
 घर पहुचेगे, किस शकल में
 पहचाना होगा, मिस शकल मे ●

सप्रहण व अनु
 श्यामा ठाकु

हेसरू बोला हे सार

यह गीत बड़े बड़े लट्टो, गहतोरो, परपरो को पसीटते हुए गाया जाता है। गहतोर में लम्बे रस्से बांधे जाते हैं। रस्सो के दोना ओर लोग खड़े होते हैं। एक घादमी गीत के टप्पे बोलता है शेष सभी कवल 'हे सार कहते हैं और उसके साथ रस्सा खींचते हैं। टप्पे बोलने वाला ब्याक्त बडा चतुर, कुशल योग्य कवि और गायक होना चाहिए क्योंकि वह गीत में मनोरञ्जता लाता है। एक पवित का कई खण्डों में बांटता है हर खण्ड को अनेक बार बोलता है हर बार लोग 'हे सार कहते हैं और गहतोर का खींचते हैं। हर खण्ड के शब्द के बाद यह आकांक्षा रहती है कि वह क्या बोलने वाला है, जैसे—तेरे खेतों में हे सार तेरे खेतों में हे सार आज की रात हे सार आज की रात हे सार, हम मिलेंगे हे सार, हम मिलेंगे हे सार, निपट अकेले हे सार'। कई बार वह झडलील भी बोलता है परंतु अवसर को देखकर। 'हे सार' का कोई अर्थ नहीं है। सम्भवत यह शब्द आरम्भ में 'हे ईश्वर' था। बाद में 'हे सार बना। लाग भारी काम करते हुए ईश्वर से उस की पूति के लिए प्रार्थना करते थे।

हेसरू बोला	हे सार
रोई रा दार	हे सार
जोर नीं सादा	हे सार
देऊघा री कार	हे सार
बुटकी पाधे	हे सार
बेठा घुघता	हे सार
पाहुणी दीकिया	हे सार

म उरता हे मार
 रीई रा भांडा, प गिगला पाऊ बार बार
 लू पाडू गा, दिगणे म हाऊ संघार
 जार गोंडा न सांगणी गोई उघडा पार
 तगडे बाणा, भांगी गो साडी, घावणी ठार
 बेगडे मोता दावरे पारा कोम कमाणा
 रात बिहाड हेसू पारा हे मार
 छिड़ी पुत्रिया मोता री वेरी गिट कुकिया
 भीगी री छार हेसू बाला हे सार
 नू री बूटी, एम की उठी एकी मगीटद
 वोऊ हजार हेसू बोला, हे मार
 पाडू माई एह पम्माई, डोरदे मोता
 होठी दिडाड हेसू बाला हे सार
 वाटे बोटे रे, तातण बिलुए टेलीद लागे
 छोकरे पार हेसू पारा, हे सार
 हेती करिडा, लोड साऊ मिडा भांदत मूर
 वाउणी खाए हेसू बाला हे सार
 रज पीई डे तेर धीरा-न मूरा री गुषा
 एकी रे लागे हरिडे पार
 हेसू पारा हे सार । ●

हिंदी अनुवाद

हेसू बोला हे सार
 रई (वक्ष विशेष) की सहलीर है हे सार
 जार नही लगाते (तुम) हे सार
 देवते की द्रोही है (जार लगाओ) हे पार
 वक्ष पर हे सार
 बठा कबूतर हे सार
 शाखा पकड कर हे सार
 मुश्किल मे चढा हे सार
 रई का खम्बा है, घसीटना पडेगा बार बार हे सार
 तू थक गया ता रहने दे मै तैयार हू हे सार
 जाश निकालो पार करनी पडेगा, ऊची घास हे सार

गड़े बनो तोड़ मत देना, प्रपती ठार (घुटने से नीचे का भाग) हे सार
 ठो मत भरे छोकरो, काम कमाओ
 रात दिन हेसरू यार, हे सार
 पकड़ी जला कर, मसम की डेरी, शरीर जला कर
 घाग की सार हेसरू बोलो, हे सार
 दियार का वृक्ष, यह क्या हुआ, एक को घसीटने हैं सौ हजार हेसरू बोलो हे सार
 हे शाहू भाई भ्रमी पहुँचा दी, डरो मत
 बीत गया दिन हेसरू बोलो, हे सार
 बडो बडों के यतन ढीले पड गए मुबाबला हो रहा है
 (भब) छोकरो का हेसरू यारा हे सार
 हेसी (जो डोल बजाता है) कारिदा, भेडा खामा मेदा,
 (पूरा) घहा सुरा का (पा लिया), कगनी (चावल) का (पूरा) भार
 (खा लिया) हेसरू बोलो हे सार
 काफ़ी पी ली तेरे घर मे, सुरा नी घूटें
 एक के लगे हैं दिखने चार हेसरू यारी, हे सार । ●

सप्रहण ध अनुवाद
 डा० बलदेव कुमार

मसँ उकता हे सार
 रोई रा भाडा घसीटणा पोऊ बार बार
 तू थोकू ता ढिगणे दे हाऊ तैयार
 जोर खोजा डे लागणी पोई उयची घार
 तगढे बाणा मोनी नी लाडी भावणी ठार
 बेशदे मोता छोकरे पारो कोम कमोणा
 रात दिहाड हेसरू यारा हे सार
 छिडी फुकिया मोसा री डेरी पिडे फुकिया
 भोगी री छार हेसरू बोला, हे सार
 कलू री बूटी एय की उठी एकी घसीटद
 धौऊ हजार हेसरू बोला, हे सार
 शादू भाई एह पभाई, डोरदे मोता
 होठी दिहाड हेसरू बोला हे सार
 बाडे बोडे रे तातण ढिलुए टलीदे लागे
 छोकरे पार हेसरू यारा हे सार
 हेसी करिडा लौढ खाऊ मिडा भादल सूर
 काउणी खाय हेसरू वाला हे सार
 रज पीई डे तेरे धीरा-न सूरुा री शुघा
 एकी रे नागे, हरिदे चार
 हेसरू यारा हे सार । ●

हिंदी अनुवाद

हेसरू बोला हे सार
 रई (वक्ष विशेष) की सहतीर है हे सार
 जार नहीं लगाते (तुम) हे सार
 देवते की द्रोही है (जार लगाओ) हे पार
 वक्ष पर हे सार
 बठा कबूतर हे सार
 वाला पकड़ कर हे सार
 मुदिकल मे चढा हे सार
 रई का खम्बा है, घसीटना पड़ेगा बार बार हे सार
 तू थक गया ता रहने द में तैयार हू हे सार
 जोर निकालो पार करनी पड़ेगी ऊची पार हे सार

तगड़े बनो, लोड मग देना, घपनी ठार (पुटने से नीचे का भाग) हे सार
 बढी मत घरे छोकरो, बाम बमाधो
 रात दिन हेसरू यार, ह सार
 सबडी जला बर, भरम की डेरी, शरीब जला बर
 घाग की छार हेसरू बोसो, हे सार
 शिवार का बूसा, यह बया हुषा, एब को पझोटने हैं सो हजार हेसरू बोसो हे सार
 ह घाडू भाई, घमी पहुचा दी, शरो मत
 बीत गया दिन हेसरू बोसो, हे सार
 बडों बडों के यतन डीते पट गए, मुबाबला हा रहा है
 (घर) छाकरो का हेसरू यारा हे सार
 हसी (जो ढाल बजाता है) बारिदा, भेडा सामा भेडा,
 (पूरा) घड़ा गुरा का (वा लिये), कगनी (चावस) का (पूरा) भार
 (खा लिये) हेसरू बोसो हे सार
 बाफी पी सी तेरे घर में, गुरा की घूटे
 एक के सगे हैं दिसने चार हेसरू यारो, हे सार । ●

सग्रहण व अनुवाद
 डा० बलदेव कुमार

हां लाम्बू लोहरा

पिछले गीत 'हेसरू बोला हे सार' में आदमी जल्दी ही थक जाते हैं कारण यह है कि हे सार शब्द शीघ्र शीघ्र आता है और लोगो को शहतीं जल्दी जल्दी खीचना पडता है। पिछले गीत की पकितया में जहा जहा भ्रम विराम है वही हे सार शब्द कहा जाएगा और खीचा जाएगा। लिखते हैं स्थान को कम करने के लिए ऐसा नहीं दिखाया है परंतु थकने पर बठ का आराम नहीं कर सकते। यह सारे दिन का काम होता है और भ्रम-धेरा होने से पहले काम पूरा करना जरूरी है। भ्रम थकान दूर करने या सुस्ताने के लिए गीत बदल दिया जाता है। तब हा लाम्बू लोहरा गात गाते हैं। इसमें जब दो व्यक्ति एक पकित बोलते हैं तो शेष लोग पूरी पकित दाहराते हैं, और पद के भ्रम में शहतीं आदि खीचते हैं। 'लाम्बू लाहरा' शब्दों का भ्रम स्पष्ट नहीं है। परंतु इसे लटकाना, लमकाना देर करना आदि भ्रमों में जाना जाता है। दीघ-सूत्री के भाव में यह शब्द लोकाकित के रूप में प्रयुक्त होता है। खीचने में सुविधा के लिए दो व्यक्ति निर्देशन संकेत भी देते हैं।

दो व्यक्ति—हां लाम्बू लाहरा

सभी—हां लाम्बू लोहरा

दो व्यक्ति—बूटी पोई गोहरा

सभी बूटी पोई गोहरा

चेका हुमा दोहरा, चेका हुमा दोहरा
 सीघा केरा मोहरा, सीघा केरा माहरा
 रीघा केरा कोहरा, रीघा केरा कोहरा
 माडा पोऊ वाहडा, माडा पोऊ वाहडा
 खोजा डे कराहा, खोजा डे कराहा
 पोरा रोहू बनाहडा, पोरा रोहू बनाहडा

बेठा सा बनाहुडा, बेठा सा बनाहुडा
 बीता पीऊ टोहरा, बीता पीऊ टोहरा
 दऊ फिरू समाहरा, देऊ फिरू समोहरा
 बडीऐ झलीहरा बडीऐ झलीहरा
 दिहाडी दपीहरा, दिहाडी दपीहरा
 केण्डी खोजी टीहरा, केण्डी खोजी टीहरा
 कुणी पाणा पीहरा, कुणी पाणा पीहरा
 जाके जेस्हे सौहरा जाके जेस्हे सौहरा
 त कडे यार गौहरा त कडे यार गौहरा
 चौका डे फलीहरा चौका डे फलीहरा
 देऊमा रा फलीहरा, देऊमा रा फलीहरा । ●

हिंदी अनुवाद

दो व्यक्ति—हां लाम्बू लोहर

समी—हां लाम्बू लोहरा

दो व्यक्ति—वृक्ष पडा रास्ते मे

समी—वृक्ष पडा रास्ते मे

कमर हो गई दाहरी

सीधा करा मोहरा (सहतीर का अग्र भाग)

रस्ते को करो इकहरा,

सहतीर पड गया चट्टान पर

निकाला धरे कुल्हाडा

घर मे रह गया बढई

बैठा है धुनतर

रास्ते मे पड गया गडा

देवता अनुकूल हो गया

बडी हो आवांमा है

दिन दोपहरे

कसी निकाली ठाठ

कौन करे पहरा

मुस्न लोग शहर मे (रहते हैं)

तगडे लाग गाव मे

सठामो धरे ध्वजा

देवता की ध्वजा । ●

सप्रहण व अनुवाद
 डा० बलदेव कुमार

धूधती (धुग्घी)

यह भी श्रम गीत है। परन्तु वास्तव में यह श्रम नृत्य गीत है। इस में गाते भी हैं और नाचते भी। बोल, नगारा सहनाई बज रही होती है। दो व्यक्ति धूधती के बोल कहते हैं। भेष सभी लोग दो बार धू ध ती, धू ध ती कहते जाते हैं, और दानो बार रस्सा खींचते हैं। अर्थात् दो बार एक साथ धुधती शब्द के साथ रस्सा खींचते हैं। सभी खींचने वाले दो भागों में बंट जाते हैं अर्थात् 1,3,5,7,9 आदि एक टोली और 2,4,6,8,10 आदि दूसरी टोली। जब बाल बोलने वाले दो व्यक्ति बाजे के साथ गीत के टप्पे गाते हैं तो एक बार पहली टोली के सभी लोग हाथ से रस्सा छोड़ देते हैं। हवा में दोनों हाथ नाचते हुए फँसते हैं और नाचते हुए अपने आप एक चक्कर मार कर धुधती शब्द के पहुँचने तक रस्सा पकड़ते हैं और शेष सबके साथ उस खींचते हैं। दो बार साथ साथ 'धुधती' शब्द सहित। दूसरे पद बोलने पर दूसरी टोली ठीक वैसा ही नाचती है। 'धु धती का अर्थ धुग्घी पक्षी है। यह पक्षी चहचहाते हुए शरीर का हिलाती है जिस नाच रही हो।

दो व्यक्ति - धू भाईया धूधती
 सभी - धूधती धूधती
 दो व्यक्ति - धूधती 'होठी माड़ी सराजा
 सभी - धूधती, धुधती
 दो व्यक्ति - तोखा न आगू सकेतड बाजा
 सभी धूधती धूधती
 धू भाईयो धूधती
 तोखा न आगू सकेतड बाजा
 तेवे भीरी सा चुडचडादी
 उडिया 'होठी बाजा बजादी
 धूधती धूधती

सो पृहती पिती र काजा
 सुरा थी पिदा तीखा र राजा
 धूधती धूधती
 धूधती बेठी चाकटी पिदी
 छिड़ी मूले ता चाकटी सिधी
 धूधती धूधती
 माइठ मीरे धूधू पाजा
 तीखा-न भाए लहली बाजा
 धूधती धूधती
 धू भाईयो धूधती
 तीखा-न भाए लहली बाजा
 धूधती धूधती
 गुणा डे यारो धूधती घूरा
 घोरा पृहती मारदी ठोरा
 धूधती धूधती
 घोरा थी लागी मोइरी साजा
 खांदे पिदे बाजा गाजा
 धूधती धूधती
 रोटी बोडे चाकटी घूरा
 साजा थी ए की व्याह थी घूरा
 धूधती धूधती
 सीरा धराब मोजा बोडी
 पटिकदे नौचदे चेकडी चोडी
 धूधती धूधती
 डलथी केरदे बोडे जूबा
 भेड मुनी न काटदे रूमा
 धूधती धूधती
 नौचदे कोई डिसिदे होरा
 गुमादे बोहु ता खांदे थोडा
 धूधती धूधती
 पाहुणे भीरी मिलदे गीला
 लालही भागी ग्रामां रे खोला
 धूधती धूधती

धू भाइयो धूघती
 मेहू री धारणा धूगती
 धूघती धूघती
 धुघती वे हई जूगती
 सो खोडे रे पाण्हे ऊकती
 धूघती धूघती
 धूटी पाण्हेटी सां खुडकदी
 धुघती हई सो फुरकदी
 धू भाइयो धूघती

हिंदी अनुवाद

दो व्यक्ति - धू भाइयो धूघती
 सभी—धूघती, धूघती
 दो व्यक्ति—धुग्धी गई मण्डी सिराज
 सभी—धूघती धूघती
 दो व्यक्ति—वहा से लाया सुकेतड (सुभेत का बाजा)
 सभी—धूघती धूघती

धू भाइयो धूघती
 वहा से लाया सुकेतड बाजा
 तब फिर वह चहचहाती
 उठ कर गई बाजा बजाती हुई
 धूघती धूघती
 वह पहुची स्पति के काजा (राजधानी) मे
 देशी शराब पी रहा था वहा का राजा
 धूघती धूघती
 धुग्धी बठ गई चाकटी (चावल की शराब) पीन
 (वहा) लकडी मूल्य पर श्रीर चाकटी मुफ्त थी
 धूघती धूघती
 धम भाई बनाए कबूतर (श्रीर) बाज
 वहा से लाया साहुली बाजा
 धूघती धूघती
 धू भाइयो धूघती
 वहा से लाया साहुली बाजा
 धूघती धूघती

सुनो भरे यारो घूघती घूरा (ध्वनि)

घर मे पहुची भारती हुई दीड

घूघती घूघती

घर में था लगा सैरी सक्रांत (भास्विन के पहले दिन का त्यौहार)

खा रहे थे, पी रहे थे, बाजा गाजा (बजा रहे थे)

घूघती घूघती

रोटिया, बहे (खाने के) चाकटी, सूर (मुआ की देशी शराब)

त्यौहार था यह या कि विवाह था पूरा

घूघती घूघती

सौरा (देशी शराब) शराब (सब कुछ) मीज (धी) बडी

उछलते, नाचते कमर तोड (रहे थे)

घूघती घूघती

प्रणाम करते बाट रहे थे दूब (उस त्यौहार की विशेष नीति)

मेढो की ऊन कटाई (के भवसर) पर काटे जा रहे थे मेढे

घूघती घूघती

नाच रहे थे कोई लड रहे थे दूसरे

खो रहे थे अधिक खा रहे थे कम

घूघती घूघती

महमान बहुत मिल रहे थे गले

लालडी (एक नृत्य गीत) लगी थी गाव के खलिहान मे

घूघती घूघती

घू माइयो घूघती

गेहू के घाणा (भूने हुए दाने) चुग रही थी

घूघती घूघती

घुग्घी की हुई बडी मीज

वह भखरोट के टहने पर चढ गई

घूघती घूघती

टूट गई टहनी यह, कडक करती हुई

घूग्घी के हुए प्राण पखेरू

घू माइयो घूघती ●

भीऊंचलीए

यह भी नृत्य धम गीत है। यह पूगती से अधिक विलम्बित ताल का गाना है। नाचते हुए मुख्य अंतर यह है कि जहाँ घूघती घूघती स्वर बहते हुए रस्ता एक बार खीचा जाता है वही इस गीत में भीऊंचलीए भीऊंचलीए दो बार बोल बोने जाते हैं तथा रस्ता भी दो बार खीचा जाता है। एक बार जोर धीरे से लगाया जाता है मानो दूसरी बार जोर लगाने की तैयारी का संकेत है। दूसरी बार पूरी शक्ति से रस्ता खीचा जाता है। यह गीत प्रायः ऐसे रास्ते से अधिक गाया जाता है जहाँ ऊपर की खींचा जाना ही अर्थात् जहाँ रास्ता समतल और ढलानदार न हो बल्कि चढ़ाई वाला भाग हो, जहाँ भार को खींचने के लिए अधिक बल अपेक्षित होता है।

दो व्यक्ति—भीऊंचलीए भीऊंचलीए

सभी — भीऊंचलीए भीऊंचलीए

दो० — चौले उठिया कुल्लू ये जाणा

सभी — भीऊंचलीए भीऊंचलीए

कुल्लू जाया की नोऊ चा खाणा भीऊ०

कुल्लू जाया घिऊ खिचडू खाणा भीऊ०

घीऊ खिचडू नी गोला न जाणा, भीऊ०

गौला तेरे मू ता घुघरू लाणा भीऊ०

कुल्लू देशा सा पौट्ट र बाणा भीऊ०

गौला घु घरू पौट्ट मी लाणा भीऊ०

डेंगा विपू जोधा बूटडू लाणा भीऊ०

विपू पौट्ट की पलवा पाणा भीऊ०

कुल्लू जाया मू शाहुरा लाणा भीऊ०

तेरे शाहुरे की सेलरा लाणा भीऊ०

एजे दूईए घोर बसाणा, भीऊ ०
 नूघां घोर चूटा फूटा पराणा भीऊ ०
 तेरी तेइए चूटा फूटा सजाणा, भीऊ ०
 घोरा नाईए पूछू सियाणा, भीऊ ०
 कोने दूखू नाई लेखा न पाणा भीऊ ०
 मशेरना नाई कदी सियाणा, भीऊ ०
 याणा नाई ए लोमा न लाणा भीऊ ०
 एजे मांदी भासा हीप मलाणा, भीऊ ०
 जुगा जानी-जे सोग बलाणा भीऊ चलीए भीउ चनीए ●

हिन्नी अनुवाद

दो व्यक्तिभी—ऊ चलीए भीऊ चलीए (एक पक्षी का नाम)

सभी— भीऊ चलीए भीऊ चलीए

दो०— चल उठ कर कुल्लू को जाए

सभी— भीऊ चलीए भीऊ चलीए

कुल्लू जाकर क्या नया खाना है

कुल्लू जाकर घी खिचड़ी खाना है

घी खिचड़ी नहीं गले में जाएगी

गले में तेरे में तो घुघरू माला पहनाऊ गा

कुल्लू देश में पट्टू का रिवाज है

गले में घुघरू (घौर) पट्टू भी पहनाए गे

टेढा थिपू (सिर का रूमाल) पैर में बूट लगाए गे

थिपू (घौर) पट्टू क्या कुछ कर सकेंगे

कुल्लू जाकर मैं समुराल बनाऊ गी

तेरे समुराल में क्या सेलरा (चिपकने वाला बिरोडा) लगेगा

या दोनो घर बसा लें

नया घर टूटा फूटा पुराना

तेरे लिए टूटा फूटा सजाए गे

घर में नहीं पूछा सिमाना (बुजुग)

कान में सुना नहीं लेखे में लाया जाए

गुस्सा नहीं कभी सियाने (को) दिलाना

छाटे को नहीं लोम (मोह) में लगाना

या मलिए हम हाथ मिलाए

सुग (घौर), जीवन के लिए सघ बनाए

भीऊ चलाए भीऊ चलीए ●

सग्रहण व अनुवाद
श्यामा ठाकुर

डोला राम

यह गीत जिला मण्डो के बरसोग क्षेत्र के लुहरी गाव का है। लुहरी को सडक बन रही थी भुभुण नाम के ढाक की कटाई हो रही थी तो उसमें सुरग लगाने वालो में मुख्य डोला राम था— ज्यो ही वह सुरग लगाने लगा पत्थर उसके सिर के ऊपर गिर पडे और उसकी मौत हो गई। डोलाराम बहुत नम्र स्वभाव का मेहनती आदमी था। उसकी अचानक मौत से सारे गाव के लोग बहुत ज्यादा दुखी हुए। लोगो ने उसकी हृदय विदारक मौत के ऊपर गीत बना दिया और उसके अच्छे कार्यों को याद कर उसके गीत को गान लगे। गीत की पकितया है -

भुभुणा रे देका न लाग टंडला कटाए
 डोलेरामा बलास्टमना, लागे टंडला कटाए
 जोडे छुटे तेरी बालके आरा दुये छुटे मेहरबान माये
 डालेरामा बलास्टमना दुये छुटे मेहरबान माये
 एक बजे री गडी दे आया दूषा रा गलासा
 डोलेरामा बलास्टमना दूषा रा गलासा
 दुई बजे री जीपा दे आये डोलेरामा री लाशा
 डोलेरामा बलास्टमना, डोलेरामा री लाशा
 धारा गैसा रा पीपलु सूका हूगे नाला रा सूआ
 डोलेरामा बलास्टमना हूगे नाला रा सूआ
 डोलेरामा री मौत भाई कीजे गजब हुआ
 डोलेरामा बलास्टमना कीजे गजब हुआ

सुहरी स्टोरा ३ लागे, साते किस्म शाणे
 डोलेरामा बलास्टमैना, साते किस्म शाणे
 नीरता क पुलसा घाई, निरमडा का ठाणे
 डोलेरामा बलास्टमैना, नीरमडा का ठाणे ●

हिंदी अनुवाद

सुहरी गांव की जब सड़क निकल रही थी तो भुक्कण नाम के ढाक पर डोलेराम बलास्टमैन सुरग लगा रहा था। सुरग लगाते लगाने उसके सिर पर पत्थर गिर पड़े और वह मर गया। डोलेराम रास्ते की कटाई करते हुए मर गया और अपने पीछे दो बच्चे और दो भाई छोड़ गया एक बजे की गाड़ी में डोलेराम को पीने के लिए दूध का गिलास आया जब तक डोलेराम को पीने के लिए दूध आया तब तक डोलेराम मर चुका था उसकी साश को दो बजे की गाड़ी में उसके घर ले आएं उसकी मौत के पहले ही अपराधगुन हो गए। धार का पीपल सूख गया तथा डूंगे नाले का पानी भी सूख गया डोलेराम की मौत की खबर सारे गांव में भाग की तरह फैल गई। यह क्या गजब हो गया कि डोलेराम मर गया सुहरी के स्टोर में सात किस्म के ताले लगे थे जहां सुरग लगाने की बत्तिया तथा सड़क निकालने वाला अथ सामान रखा था डोलेराम की अकस्मात मौत को सुनकर नीरत से पुलिस आ गई तथा निरमड से घाना आ गया ●

घटना प्रधान गीत

मण्डी क्षेत्र

नैणु लाड़ीये खशटीये

यह गीत जिला मंडी के करसोग क्षेत्र के सुहरी गांव है। इसकी घटना इस प्रकार है कि नैणु नाम की औरत जमींदार हिमेराम की पत्नी थी। वह हर रोज गांव की अथ औरतो के साथ घास लाने जगल जाती थी। एक दिन भी वह अपने छोटे छोटे बच्चों को छोड़कर घास लाने गई। अथ औरतो की अपेक्षा जल्दी-जल्दी घास काटने लगी। घास काटते-काटते वह पहाड़ी के नीचे बहते हुए दरिया में गिरी और मर गई। उस गांव के लोग नैणु की मौत से बहुत दुखी हुए। नैणु की मौत की घटना इस प्रकार से गाई जाती है —

नैणु साढी रा मरना हुभा डूबी मजी दरयाये
 नैणु साढीय लशटीये, डूबी मजी दरयाय
 माठे माठे तेरे दारे छुटे, दुई छुटी साऊदी गाये
 नैणु साढीये लशटीये, दुई छुटी साऊदी गाये
 होरे घरेरी लो घरा ले भाई, नैणु साढी घरा न भाई
 नैणु साढीये लशटीये, नैणु साढी घरा न भाई
 बाहर निकले गा हिमेरामा, लाये न नैणु ले हाबा
 नैणु साढाये लशटीये, लाय न नैणु ले हाबा
 होरे घरे रीये भीऊणा लुणा, नैणुये लुणा मे काशा
 नैणु साढीये लशटीये नैणुए लूणा मे काशा
 मर जवानीये मरना हुभा किया जि दगी रा नाशा
 नैणु साढीय लशटीये, किया जि दगी रा नाशा ●

हिंदी अनुवाद

ठाकुर (खग) जाति की औरत नैणु घास काटते-काटते पहाड़ी से गिरकर दरिया में डूब गई और मर गई। उसके छोटे छोटे बच्चे तथा दो दूध देने वाली गायें रह गईं।

जा औरतें नैणु के साथ घास काटने गई थी वह वापिस घर को आ गई लेकिन नैणु घर नहीं आई

नैणु का घरवाला हिमेराम आने घर से बाहर आया और नैणु को प्राणों देने लगा।

जो औरतें नैणु के साथ घास काटने गई थीं उ होने भीछूणा घास काटा लेकिन नैणु ने जल्दी जल्दी में काश (घास विशेष) काटा।

नैणु जवान थी उसने घास काटते काटते अपनी जि दगी खत्म कर दी ●

सग्रहण व अनुवाद
 हेमप्रभा शर्मा

दिले राम

दिलेराम कोई अज्ञात चिरप्रचलित नायक किसी प्रेम पाश के लिये अकारण दोषी ठहराया गया। ज्ञात होने पर दिलेराम को निर्दोष समझा गया। यौवनावस्था में उस पर अकारण सशय व्यक्त किया जाता है। दिलेराम सुन्दर व्यक्ति था। जिसके सम्पर्क में आया, उसके रूप को निहारता सा रह गया। उसके लिये स्मृति वश प्रणयोदगारी का नायिकाओं का उपालम्भ इस प्रेम गीत में पूणतया झलकता है।

बहिया चहेभा दिलेरामा
 ममा खट्टिया कमाया भापेभा रे लाया
 तेरी सोह बहिया चहेभा दिलेरामा
 मुइभा तेरी सोह बहिया लाया दिलेरामा
 तेरी सोह नौ नौ बाकमा तेरी बहिया लाया दिलेरामा
 हाथा दबू रे छत्री, जाता रा तू खत्री
 पाया रा तू खत्री ओ गलाबा रे फूला ओ
 सतवाजा रे गट्टा नील वागा रेभा गट्टा
 होरनी जोवन सीजिया लोमी लोकें छुट्टेभा
 हाथा दबू रे दण्णा ओ मण्डा नी रहैण
 गुलाबा रे फुल्पा नील वाग रेभा गट्टा
 हाथा दबू रे परना ओ छुरी लाई के मरना
 तेरी सोह छुरी लाई के मरना

हाथा दबू र दाणा, जाति रा तू राणा
 तेरी सा जाती रा तू राणा
 तेरी सोह नौ सो बाकमा तेरी बहिया चडेमा दिलरामा
 जादा जादा दबू चनी भो गया तेरी साह
 म्हारे मना बसूरा पाई भो गया नी रेला चढ़ दबूभा
 जा दा जादा चनी भो गया
 सीरा रे सलूए ले दा भो गया
 म्हारी नणदा कने रमजा मारी भो गया
 कि रेला चढ दबूभा
 कि नौ सो बाकमा तेरी, रेला चढ़ दबूभा
 म्हारे माये बिदुए लैदा भा गया
 म्हारे मना बसारा पा दा भो गया
 मा छट्टेया कमाया तरी साह बहिया लाया दिलेरामा
 मा तेरी सोह, लेखे लाया शहरा रिए द्रौमतिए ●

हिंदी अनुवाद

दिलेरामा अपमानित हुआ
 कमाई मा बाप को दी
 दिलेराम कलकित हुआ
 दिलेगम अपमानित हुआ
 विस्तृत परिचय था अत अपमान मिला
 हाथ में छाता जाति का क्षत्रिय
 क्षत्रिय पथ फूल सी जवानी
 नील बाग का नीलपुष्प सा
 चिर साचित यौवन का लोभ मे अनेका ने लाभ लिया
 इस प्रकार मण्डी नहीं रहना है—वह निराश रहा
 वह गुलाब और नीलकमल सा पुरप है
 रुमाल हाथ मे देखते (हृदय मे) छुरी लगती है
 छुरी लगा के प्राण त्याग दें !
 हाथ में दाना लिये राजपूत जाति का है
 सचमुच राणा जातिय है
 विस्तृत परिचय वश कलकित हुआ
 बाखिर इस स्थान को त्याग दिया

हमारे मन को भरमा गया, रेनगाडी में बैठ चला गया

जाता जाता चला गया

सिर का सलुआ (दुपट्टा) ले गया

हमारी ननद की उपालम्भ दे गया

घर में भगडा डाल गया

रेल पर बैठा, चला गया

कई परिचिन—छोड़े चला गया

मापे को बिदिया की शान था वह

हमारे मन का विश्वास और भास था वह

कमा करके मां बाप को दिया, लामी लागे ने योवन लूटा

फिर बदनामी दिलाराम को मिली

दुमनी नायिका को सम्बोधित करके सकेत किया है ●

घटना प्रधान गीत

मण्डी क्षेत्र

भारू मिया तथा गगनों

दिलेराम की भांगि इसमें नायक नायिका का वास्तविक गाथात्मक परिचय तो नहीं किन्तु प्रणय प्रसंग द्वारा भारू का गगनू नामक औरत के सौंदर्य पर रीक कर पथभ्रष्ट होने का परिचय मिलता है। सामाजिक परम्पराओं की कुछ चिन्ता न कर भारू ने सिद्ध कर दिया इशक न पूछे जात भयवा रूप का आकषण प्रेमी को सतार की सर्वोच्च सम्पदा है।

भम्मा भी समाझादी बापू भी समझादा
भारू भी मिया छड़ी देणा चमरिया रा साथ
खूहा पर सट्टेघा जनेमो भारूमियां
पकडघा गगनू चमरिया रा हाथ
माई तेरा समझादा मामी समझादी
छट्टी देणा गगनू चमारी रा साथ
माई मामी ला दे ठोकरा भासा
पहणियां देयां तिल्लेदार
गगनू धान कूटे भात बणाया
ऊपरा ते रखेघा कट्टू रा भास,

झारू हुमा हुण भसल चमार
 भाई मती ! डयोड़ी बँठे
 झारू बँठा तजरी ल बाहर
 सासु देदी लिखेप्रा बागदी
 तेरा मुदडा होया बड्डा जवान
 झारू मियां योलदा, मेरा मुदा
 बियाह्या भाई मेरे जा
 हाऊ वणी गमा भसल चमार
 किसी भी पीणा तेरे हाथे दा पाणी
 बिस भी पीणा तेरे नरेलु तमागू
 बिस भी बिह्याणी तेरी नार
 भम्मा पीणा मेर हाथे दा पाणी
 बापू पीणा मेरे नरेलु तमागू
 मेरे भाइए ब्याहणी मेरी नार
 भम्मा मेरिए हाऊ हुमा भसल चमार
 सब सब बँठे भदर
 झारू मियां डयोड़ी ले बाहर
 छहो द गगनू रा साथ
 भम्मा भी ममभाद, बापू भी समभा दे
 छहो देणा गगनू रा साथ ●

हिंदी अनुवाद

मा भी बाप भी समभात है
 झारू मिया चमारी का सग छाड
 कूयें पर जनेऊ फँका
 झारू मिया गगनू के साथ पकडा गया
 तेरे भाई और मामी समभाए
 गगनू का सग छोड
 भाई मामी ठोकर लगाए
 —तिल्लेदार जूती बनाना
 गगनू धान कूट कर भात बनाती है
 कट्टे का भास भी रख दिया
 झारू पूरा मोची बन गया

माई मतोजे भीतर बंटे
 मारू नजरा से भी दूर
 पहली मगेतर की मा पत्र डाले
 कहै तुम्हारा वर बढा हो गया
 मारू कहता है कि
 माई का ही ब्याह हो
 मैं ता प्रेम बग माची बन गया
 तुम्हारे हाथ पानी कौन पीएगा ?
 दूकका तमाखू कौन पीएगा ?
 तुम्हारी मगेतर कौन ब्याहेगा ?
 भग्ना पानी पीयेगी
 पिता तमाखू पीयेगा
 माई मगेतर बनेगा
 मा मैं पूण मोची बन गया
 सब भ्रदर है
 मारू कमरे के बाहिर है
 गगनू का साथ छाड
 मां बाप कहते हैं—
 गगनू चमारी को छोड दो ●

सप्रहण व अनुवाद
 डॉ० काशी राम आत्रेय

तेरी धिया जो हुआ बनवास

इस लोकगीत का भावार्थ यह है कि देवरानी गोबर से घर की लिपाई कर रही थी। उसकी जेठानी जिसके हाथ मिट्टी की चपणी (अर्थात् पाव साफ करने के लिए मिट्टी की ठीकरी) थी। वह फिसल कर गिर गई और चपणी टूट गई। जिससे नाराज हो कर उसकी सास ने उसे बनवास दे दिया। उसने गगन में उड़ने वाली परियों की सम्बोधित करके अपने मायके और ननीहाल वालों को सदेश भिजवाया। अपनी बेटे की इस भूल पर वह सोने चादी की नाना प्रकार की वस्तुएं देने को तैयार हुए पर सास न मानी। अतः सास कहती है कि मुझे दौलत नहीं अपनी बहू ही चाहिए। मैं तो इसकी परीक्षा ले रही थी।

दरमणिये लिपया ओबरा
जेठाणीमा जो गई घतराठ
तेसा चपणी रा हुआ चकनाधुर
कि बहुधा जो दिला बनवास।
सूरया जो जादिये सूरमाणिघो
मेरे बापू जो देणा सन्देहा कि तुव भाई भाणा
तेरी धिया जो हुआ बनवास।
लं ले बुढमणिये मुदना चान्दी
मेरी धिया जो ने घर बार।
कुड़मा मेरे बेथी पाणा मुदना चादी ?

लै ले कुडमा सुइना चांदी
 मेरी चपणी कर्नै सौ काम ।
 मूरगा जो जांदिए सुरगणिये
 मेरे चाचा जो देणा संदेहा कि चाचा जी भाई जाणा
 तेरी मतीजी जो हुभा बनवास ।
 लै ले कुडमणिये, गाइया मैसां
 मेरी धिया जो दे घर बार ।
 मेरे केधी पाणी गार्इयां भैसा
 मरी चपणी कर्नै सौ काम ।
 मूरगा जो जांदिये सुरगणिये
 मेरे मामा जो देणा सन्देहा कि मामा जी भाई जाणा
 तेरी भाणजी जो हुभा बनवास ।
 मामे ता घडी चपणी मामीये फेरेया चाक,
 ल ले कुडमणिये चपणी चपणी
 हिक जुकणी मुड फूकणी—
 मेरी भाणजी जो दे घर बार ।
 लै ले कुडमा चपणी मो चपणी
 मेरे केधी पाणी चापणी, हिक जुकणी
 मूजा तेसा बहुभा के सौ काम

हिंदी अनुवाद

देवर की पत्नी ने निचले कमरे को लीपा,
 जेठानी उस गोबर के सेपन में फिसल गई
 उसके हाथ में पाव साफ करने की मिट्टी की चपणी थी
 वह टूट कर धूर-धूर हो गई
 इस पर सास ने बहू को बनवास दे दिया ।
 बहू ने आकाश की ओर उडती हुई परियों से कहा
 कि स्वर्ग में जाने वाली परियों ! जाकर मेरे
 पिता को यह संदेश दे देना कि तेरी बेटे का
 उसकी सास ने बनवास दे दिया है ।
 बेटे के बाप ने आकर बेटे की सास से कहा
 कि जितना साना चांदी इस चपणी के
 बदले में लेना है ले लो । मेरी बेटे को घर में बसने दे ।

कुडमा (लडकी के पिता) मैं सोना, चादो क्या कह गी ?
 मैं तो अपनी चपली से सौ काम लेती थी ।
 वह फिर उन स्वग मे उडती परियो से अपने
 चाचा को सदेश भेजती है कि चाचा जी
 आ जाना । तेरी भतीजी को बनवास हो गया है ।
 चाचा ने आकर लडकी की सास से कहा
 कि इस चपली के बदले गाय-भैंसें ले लो
 और मेरी बेटी को घर बसने दा ।
 उसका भी साम ने यही उत्तर दिया
 - मैं गाय भैंस लेकर क्या कह गी ?
 मेरी चपली से सौ काम निकलते थे ।
 हे स्वग मे जाने वाली परियो
 मेरे मामा को यह सदेश दे देना
 कि मामा जी आ जाना । तेरी भानजी का बनवान द दिया है ।
 मामे ने मिट्टी को चपली घडी मामी ने उस पर चाक
 फेरकर उसे पकाया । दानो ने चपली तयार
 करके लडकी की सास को दी और कहा—
 ले अपनी छाती पीटने और सिर फूकने के
 लिए अपनी चपली । हमारी भानजी
 को घर में बसने दे ।
 सास ने उस चपली का लौटाते हुए कहा
 कि हे नाती (कुडम) छाता पीटने के लिए यह चपली
 क्या करनी है और इस चापली से क्या लेना है ?
 मुझे तो अपनी वह प्यारी है जिससे मुझे सौ काम पढ़ेंगे ⑩

सग्रहण य अनुवाद
 कृष्ण कुमार नूतन

घटना प्रधान गीत

विलासपुर क्षेत्र

मोहणा

विलासपुर के लोकगीतो मे मोहणा का अपना ही स्थान है। इस गीत को गाते गाते अब भी लोग प्रायः रो जाते ह। घटना इस प्रकार है कि विलासपुर के राजा विजय चन्द के पास मोहन का भाई नौकर था। ये लोग मोर सिंगी गाव के रहने वाले थे। किसी कारण अपन गाव मे भगडा हो जाने पर मोहन के भाइयो ने अपने पडोसी की हत्या कर दी। भाइयो ने सीधे सादे मोहन को कहा - तुम यह मान जाओ तुमने ही खून किया है। हम राजा से प्रार्थना करके तुम्हे छुडवा देंगे। किन्तु यदि हम कहते है कि हमने खून किया तो फिर हमे छुडवाने वाला कोई नही होगा। भोला भाला मोहन भाइयो की बातो मे आ गया। कसूर का स्वीकार करना ही था कि कानून ने उसे अपनी लपेट मे जकड लिया। मोहन को फासी हुई। लोग एक निरपराध को फासी पर लटकते हुए देख कर रो पडे।

म या मरना ओ मोहणा माया मरना
तेरे माईया रोया कितिया माया मरना।
रोया करदी ओ मोहणा रोया करदी
तेरी बालक बलेसर रोया करदी।
खाई लै फुलकु ओ मोहणा खाई लै फुलकु
अपणी अम्मा रेया हत्या रा खाई लै फुलकु।
मै नो खाणा ओ लोको मै नो खाणा

मेरी घड़ी पल मरने री मैं नो खाणा ।
 बिनी रहैणा वो मोहणा बिनी रहैणा
 तेरे रगलुए बगलुए बिना रहैणा ?
 माईयें रहैणा वो लोकी माईयें रहैणा,
 मेरे रगलुए बगलुए माईयें रहैणा ।
 गह्वे घम्बडे मोहणा, गह्वे घम्बडे
 बहिया रे रेतडा थ गह्वे घम्बडे ।
 चढ़ी जा तरने भो माहणा, चढ़ी जा तरते
 दम दम दितिया चढ़ी जा तन्ते ।
 बारा बजी गए भो मोहणा धारा बजी गए,
 इस राज रीया घहिया बारा बजी गए

हिन्दी अनुवाद

हे माहन ! तुझे अब तेरे माइया की करनी के कारण मरना पड रहा है ।
 मोहन तेरी छाटी उम्र की पत्नी बलेशह, तेरे फांसी पर लटकने के दुख से दुखित
 हा कर रा रही है । लोग कह रहे हैं मोहन ! अपनी माँ के पकाए हुए फुलके खा
 लो । माहन का उत्तर है हे लागो मुझे मरने की अब थोडा समय शेष रह गया
 है भत मैं इन फुलको की नही खाऊगा । लोग प्रश्न करते हैं—मोहन तेरे रंगीन
 मकाना मे कौन रहगा ? मोहन उत्तर देता है मेरे मरने के बाद मेरे माई मेरे
 रंगीन मकाना मे रहनेगे । मोहन बेडो घाट के रेत में फांसी के लिए खम्बे गाड़
 दिये गए है तुम दु खी न हो और शीघ्र ही इन तरुना पर चढ जाओ । मोहन
 राजा की घडी ने बारह बजा दिये ●

फरंगु

फरगु बिलासपुर के गीतो मे एक बहुत पुराना मार्मिक गीत है ।
 फरगु शब्द हिन्दी के फिरगी शब्द से लिया गया है । फिरगी शब्द
 फिरे हुए अथवा बदले हुए रंग का अर्थात् अंग्रेजी के लिए प्रयुक्त
 किया जाता है । अंग्रेजो ने पहाडो की शान्ति को भंग कर दिया ।

बहुत से राजाओं के राज्य हड़प लिये बहुत से राज्य जीत लिये गए । उन्होंने नि सन्देह कई सुधार भी किये जिन्हे उम समय के लोगो ने पसन्द नहीं किया बरिक्त अपने पारम्पारिक जावन म हस्तक्षेप समझा । यह गीत उसी कथा को प्रदर्शित करता है ।

इस वे फरगुये कहर कमाया
 शिमले दी सडक सपाट्टये मलाई
 दश दाहाइयां दे रह लोको
 डाडड़ा राज फरगुये दा ।
 इस वे फरगुय कहर कमाया
 महला दी इट चबारे नू लाई
 देश दोहाइया
 इसा व। सस्तु कहर कमाया
 घाण रीया वेला नू चरखा डलाया
 देग दाहाइया
 इसा वो सौकणी कहर कमाया
 सोणे रीया वेला नू गो घूम मचाया
 देश दोहाइयां

हि दी अनुवाद

इन फिरगियो ने बहुत मुसीबत डाल दी । शिमला की सडक का सपाट्ट से मिला दिया । इस से भ्रब हमारी शांति भंग हो जाएगी । तभी सारे देश के लोग ऊचे स्वर से कह रहे है कि इन फिरगिया का राज बहुत ही सस्त है । इन फिर गियो ने बहुत मुसीबत डाल दी राजाओं के महलो को गिरा कर उनके महलो की ई टो को अपने चौबारे मे लगा दिया ।

(यह गीत थशपि तत्कालीन राजनैतिक दु ख को प्रकट करता है फिर भी साम बहू तथा सौत के पारस्परिक तनाव एवम् कलह जोकि प्रतिनि की त्रिपा व अभिन्न भ्र ग ये भी इस मे प्रकट हुए बिना न रह सक)

इस भास ने बहुत ही मुसीबत डाल दी
 जो खाना खाने के समय चरखा बिछा दिया है ।

भूस के समय मला चरखा कौन काते ?

इस सौत ने बहुत मुश्किल डाल दी

जो सोने क समय लड़ाई भगडा करती है । ●

भूली जायां दिलडुआ

प्राचीन लोक कवि की कलम तो सशक्त रही ही किंतु इस क्षेत्र में आधुनिक विलासपुर के लोकगीतों का कवि भी पीछे नहीं रहा है। उसने भी अपने जीवन की कसक को बहुत गम्भीरता से अनुभव करके अपने शब्दों में हमारे सम्मुख रखा है। गाबिन्दसागर ने विलासपुर के जीवन का बहुत ही प्रभावित किया है। इसने यद्यपि नया जीवन दिया है फिर भी पुराने नगर, घर बार तथा हंसने खेलने के स्थानों को हड़प करके लोगों को अनाथ सा बना दिया। अपनी पुरानी सम्पत्ति के खाने के दुःख को व्यक्त करना हुआ आधुनिक लोकगीतों का रवि फूट पड़ा है।

भूली जाया दिलडुआ हा टूटी रेआ फुलडुआ हो

हा मेरे दिलडुआ हो

अर सह पुराणे जित्थी हस्तिया रोया तू

हस्ती रोई कने जित्थी बडा होया तू

भूला जाया दिलडुआ हो मेरे दिलडुआ हो

गलिया च पाणी जित्थी खेला पाईया तै

बड त पुराणी जित्थी पीया पाईया तै

भूली जाया

साँडू रे मदाना भीला रा पाणी

असा सह नलवाडी हुए किथी नासी

दस्ती देआ दिलडुआ हो

सब कुछ दीता खातिर देशा रे

बदले च पाए कजे उमरा रे

भूली जाया

डूबी गये घर बार घाई गया पाणी

चल मेरी जि दे नधी दुनिया बमाणी

म्हारे बजुर्गा री रलिया नसाणिया
 म्हार ही साह्याणै बणिया कहणिया
 बणिया कहाणिया, भुली जाया
 खाड सवाडू मुके मुकेया खूहा रा पाणी
 मालडे रा डैम चडेभा, घाई गया पाणी
 चक मेरी जि-दे नवीं दुनिया बसाणी
 भूली जाया
 जि-हा जि-हां गलिया च बापुये फराये
 प्रम्मा री गोदा च सैर करी भाये
 सर करी भाये भूली जाया
 उ-हारे प्यारा री गल्ला याद किया भौणी
 दूधी गइया गलिया घाई गया पाणी
 चल मेरी जि-दे नवीं दुनिया बसाणी
 भूली जाया
 साहू री नलवाडो रगनावा रे भेले
 मुकी गए हुण वेडी घाटा रे फरे
 वेडी घाटा र फेरे, भूली जाया
 ल्हेटा रे बागा री लीची किति खाणी
 दूबी गए बाग घाई गया पाणी
 चल मेरी जि-दे नवीं दुनिया बसाणी
 भूली जाया दिसडुभा हो, टूटी रया फलरुभा है।

हिन्दी अनुवाद

हूँ टूटे हुए फूल के समान मेरे दिन उन पुराने घरों का जहाँ तुम हम थे राय थे
 और हस रो कर बड़े हुए थे अब भूल जाओ।
 जिन गलियों में तुम खेला करते थे अब वहाँ पानी भी गया है।
 जिन बट वृक्ष के नीचे तुमने भूले डाले थे अब वह जलमग्न हो गया है।
 हे टूटे हुए दिन! तुम उन सब बातों का भूल जाओ।
 साहू मैदान में अब गाँव-द सागर का पानी भी गया है।
 हे टूटे हुए दिल! बताओ वह नलवाडो का मना जो साहू मैदान में टूटा करता
 था अब उसे कहाँ लगाएँ ?
 हमने अपना सब कुछ देग की छतिर-पोछावर कर दिया इसके बदले हमें नये
 नकान बनाने के लिए उमर भर के लिए श्रृंखली होना पडा है।

हे दिल इन सब गमों का भूल जाओ । हमारे घर बार गाविन्द सागर का पानी आने पर डूब गए हैं । हे प्रिय ! चलो अब नई दुनिया बसायें । हमारे पूवजा की सारी निशानियां हमारे ही सम्मुख केवल कहानिया बन कर शेष रह गई है ।

हमारे आगन और आस पास के छाटे छाट बगीचे समाप्त हो गए कुए का शीतल जल भी समाप्त हो गया ।

भाखड़ा बाघ से अब पानी ही पानी हो गया है । हे प्रिय ! चलो अब नई दुनिया का निर्माण करें । जिन गलियों में बापू ने हाथ पकड़ कर फिराया था, मां ने गोपी में संर करवाई थी उनके प्यार की बातें अब कैसे याद आयेंगी ?

पानी के आने से ये सारी गलिया तो अब डूब गईं ह । इसलिए हे प्रिय ! चलो अब नई दुनिया का निर्माण करें । साहू के मदान में लगने वाले नलवाड़ी रगनाथ के मेले पेडी घाट का आनन्ददायक सामकालीन भ्रमण आदि सभी बातें तो अब समाप्त हो गई है । लहेड क बाग की स्वादिष्ट अलाची अब कहा लायें? पानी के आने से अब कुछ समाप्त हो गया । हे प्रिय ! चलो अब नई दुनिया का निर्माण करें ।

इस नोकीन में जहां अतीत के खो जाने पर वेदना प्रकट की गई है वहां नव निर्माण के लिए कटिबद्ध होना भी दर्शाया गया है ।

ऊपरलिखित बिलासपुर के इन लोकगीतों ने मानव वेदना का सूक्ष्म चित्रण किया है । चाहे मानव मृत्यु पर शोक हो ससुराल में बहू की तडपन हो पत्नी से बिछुडने का दुख हो विवाहित युवती की अपने मा बाप से मिलने की चाह हो राजनैतिक उथल पुथल पर क्षोभ हा अपने शहर का खो जाना हो सभी हृदय विदारक परिस्थितिया को इन लोकगीतों ने सहज ढंग से चिरजीव कर दिया है । ●

संग्रहण व अनुवाद
डॉ० पद्मनाभ गौतम

घटना प्रधान गीत

कागडा क्षेत्र

धोवण पाणिये जो गेई-ए

यह घटना प्रधान गीत राजा और धोवन के प्रेम सम्बन्धो पर प्रकाश डालता है । धोवन के सौंदर्य को देखकर राजा मोहित हो गया और महलो में ले आया किन्तु रानी ने साजिश करके धोवन को जहर देकर मार दिया । राजा के धोवन के प्रति कौमल भाव इस गीत में झलकते हैं । बाद में धोवन की बहती हुई लाश धोवी को नदी में मिलती है ।

काला घग्घरा सिला के हाय मिलाके
हा धोवण पाणिये जो गेई ए तेरी साह
हा धोवण पाणिये जो गेई ए
घावणी घडा रक्खेया हाय रक्खेया
हा राजा रक्खदिया आ गडबी में तेरी सोह
हा राजा रक्खदिया आ गडबी में तेरी सोह
काला घग्घरा सिला के, हाय सिला के
हा धोवण पाणिये जो गेई-ए तेरी सोह-
हा धोवण पाणिये-जो गेई ए ।
घावणी घडा भरेया, आ भरेया
हा राज भरी लेई-ए गडबी तेरी सोह
हा राज भरी लेई ए गडबी तेरी सोह
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हा धोवण पाणिये जो गेई ए, तेरी साह

हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।
 घोबणी घटा चुबकेया, हाय चुबकेया
 हो राजे बीणी तँ पकडी, तेरी सोह
 हो राजे बीणी तँ पकडी, तेरी साह
 काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके,
 हो घोबण पाणिये जो गेई ए तेरी सोह
 हो घोबण पाणिये जो गेई-ए ।
 छह रे राजेया बीणी हाय बीणी
 हो मेरी जात कमीणी, मैं तेरी सोह,
 हो मेरी जात कमीणी मैं तेरी साह,
 काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
 हो घोबण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह
 हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।
 खबर करा मैह ल राणिया हाय राणियो
 व राजे घोबण ल्योदी तेरी सोह
 वे राजे घोबण ल्योदी तेरी सोह,
 काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
 हो घोबण पाणिये जा गई ए मैं तेरी सोह,
 हो घोबण पाणिये जा गई ए ।
 ल्याण लगा ता ल्याण दे हाय ल्याण दे
 हो मैं-ता बसण नी देणी तेरी सो
 हो मैं ता बसण-नी देणी तेरी सा
 काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
 हो घोबण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह
 हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।
 पैहूली पिड्डी बणाई हाय बणाई
 ओ बिच सक्कर मिलाया मैं तेरी सोह,
 ओ बिच सक्कर मिलाया मैं तेरी सोह,
 काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
 हो घोबण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह,
 हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।
 दूजी पिड्डी बणाई, हाय बणाई
 ओ बिच जह र मलाया मैं तेरी साह
 ओ बिच जह र मलाया

काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो घोबण पाणिये जो गेई ए, मैं तेरी सोह
हा घोबण पाणिये जो गेई-ए ।

ना मेरी घोबण जो दब्बेयो, हाय दब्बयो
हो घोबण मैली बो-ना होए, मै तेरी साह,
हो घोबण मैली बो ना होए

काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
घोबण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी साह
हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।

ना मेरी घोबण जो फूजकेयो, हाय फूजकेयो
हो घोबण काली बी ना होए, मैं तेरी साह
हो घोबण काली बी ना हाए

काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हा घोबण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह
हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।

सोयन दा पिजरा बणाया हाय बणाया
हो किसी नदिया रुडाई मैं तेरी सोह
हा किसी नदिया रुडाई

काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हा घोबण पाणिये जो गेई- ए मैं तेरी सोह
हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।

घोबी कपडेया घोए, हाय घोए
हो किसी दी नार रुढदी आई ए मैं तेरी सोह,
हो किसी-दी नार रुढदी आई ए

काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हो घोबण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह,
हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।

घोबिय पिजरा सह फडेया फडेया
हो घोबण कड्डी बो हलाई ए मैं तेरी साह,
हो घोबण कड्डी बो हलाई ए

काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हो घोबण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह,
हो घोबण पाणिये जो गेई ए ।

घोबिय पिजरा सह, खोल्लया हाय खोल्लया
एह बच्चेया दी माई ए, मैं तेरी सोह,

एह बचोवा दी गई ए ।

काला घाघरा सिला के हाम सिलाके
घोबन पाणिमे जा गई ए, में तेरी सोह
घोबन पाणिमे जा गई ए ॥

हिंदी अनुवाद

हाम ! काला घाघरा सिलाकर बन ठन कर घोबन पानी भरने गई है तेरी
सौगंध घोबन पानी भरने गई है । घोबन ने घड़ा रस दिया, हाम रस लिया
हू राजा ने लोटा रस दिया मैं तेरी सौगंध ला कर कहूनी हू राजा ने लोटा
रस दिया मैं तेरी सौगंध ला कर कहूनी हू कि घोबन पानी भरने गई है ।
घोबन ने घड़ा भर लिया, हां भर लिया राजा ने लोटा भर लिया मैं तेरी
सौगंध ला कर कहूनी हू राजा ने लोटा भर लिया तेरी सौगंध है काला घाघरा
सिलाकर घोबन पानी भरने गई है । ज्यो ही घोबन ने घड़ा उठाया नि राजा
ने उसे कलाई से पकड़ लिया मैं सौगंध लाकर कहती हू राजा ने उसे कलाई
से पकड़ लिया काला घाघरा सिलाकर बनठन कर घोबन पानी भरने गई है ।
घोबन ने कहा धरे राजा मेरी कलाई छोड़ दे, हाम मेरी कलाई छोड़ दे तेरी
सौगंध है मैं नीच जाति की हू काला घाघरा सिलाकर घोबन पानी भरने
गई । धरे राजा के महल में खबर दो कि राजा अपने महल में घोबन ले आया
है काला घाघरा सिलाकर, बनठन कर घोबन पानी भरने गई है । महल में रानी
कहने लगी अगर राजा घोबन को महलो मे ले ही आया है तो से भ्रान दो मैं
भी उसे यहा बसने नही दूगी । राना ने पेडा बनाया। पहला पेडा बनाकर उस मे
शक्कर मिलाई तेरी सौगंध है उस मे शक्कर मिला दी, काला घाघरा सिलाकर
घोबन पानी भरने गई है । दूसरा पेडा बनाकर उस में विप मिला दिया तेरी
सौगंध है उस मे विप मिला दिया काला घाघरा सिलाकर घोबन पानी भरने गई
है । राजा कहता है—धरे ! मेरी घोबन को छूना मत, हां छूना मत तेरी
सौगंध है मेरी घोबन मैली न हो जाए हां मेरी घोबन कही मैली न हो जाए
काला घाघरा सिलाकर घोबन पानी भरने गई है । मेरी घोबन को जलाना मत
हां जलाना मत कही मेरी घोबन काली न हो जाए तेरी सौगंध यह वही काली
न हो जाए काला घाघरा सिलाकर घोबन पानी भरने गई है । राजा ने सोने का
पिजरा बनवाया, हाम बनवाया घोबन को किसी नदी से प्रवाहित कर दिया तेरी
सौगंध घोबन को प्रवाहित कर दिया, काला घाघरा सिलाकर घोबन पानी भरने
गई है । योबी बपडे धो रहा था कि उसे सनी किसी की नारी बहती हुई

आ रही है, तेरी सौगध किसी को घरवाली बहती हुई आ रही है काला घाघरा सिलाकर घोबन पानी भरने गई हैं । घोबी ने यह पिजरा पकड़ा हाय ! पकड़ा उसने उससे घोबन को निकाला और फिर नहलाया तेरी सौगध है उसने उसे नहलाया, काला घाघरा सिलाकर बन ठनकर घोबन पानी भरने गई । तेरी सौगध घोबन पानी भरने गई है । घोबी ने पिजरा खोला, हाय खोला । हाय ! यह ता उसके वचना की माता अर्थात् यह तो घोबी की ही पत्नी है, काला घाघरा मिलाक घोबन पानी भरने को गई है ॐ

काले महीने दियां न्हेरियां रात्ती

यह गीत उस समय की याद दिलाता है जबकि भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया । इस विशेष ऐतिहासिक घटना का सम्बन्ध अब भारत के लोक जीवन के साथ अयोध्याश्रित ढंग से सम्बद्ध है । जब भी किसी घर में बालक उत्पन्न होता है तो इस कृष्ण जन्म की घटना को याद करके बालक-जन्म को हर्ष मानकर उस पर कृष्ण के गुणों को आरोपित किया जाता है ।

काले महीने दिया हेरिया रात्ती जरमेया स्याम मुरारी
सेह इयो जरमेया स्याम मुरारी ।

पुच्छी ल मेरेयां सगगीया साधिया जान बचाई घरं प्राया
छिक्केयां तोडी भाण्डे जी म ने, बिनुमां ए दिस्ती र्ढाई
काले महीने दिया हेरिया रात्ती, जरमेया स्याम मुरारी
सेह इयो जरमेया स्याम मुरारी ।

पुच्छी ल मेरेयां सगगीया साधिया जान बचाई घरं प्राया
जा जम्मेया जां दीवक बलेया, चौही चक हा रेह इयां लोई
काले महीने दिया हेरियां रात्तीं, जरमेया स्याम मुरारी
सेह इयो जरमेया स्याम मुरारी ।

पुच्छी लै मेरेया सगगीया साधिया, जान बचाई घरै आया
 बाह मरोडी मेरी मटकी तोडी, विनुआ ता दिता रुढाई
 पुच्छी लै मेरेया सगगीया साधिया जान बचाई घरै आया
 काले महीने दिया हेरिया रात्ती जरमेया कृष्ण मुरारी
 सेहूइया जरमेया स्याम मुरारी ।

श्रौता रे घोता पाट पलेटेया, कुच्छड लेया ए दाइया
 पज रुपेइये मै दाइया जा देसा, पुतर प्यारा माइया
 जा जम्मेया जा दीवक बलेया चौउ चक हाई रेह इया लाई
 काले महीने दिया हेरिया रात्ती जरमेया कृष्ण मुरारी
 सेहूइयो जरमेया कृष्ण मुरारी ।

घोल पताशा मै गुडसस देदी सोयने दी लावा कटोरी
 बनण कट्टी मै भंगुणा घडावा रेशमी लावा डोरा
 जा जम्मेया जा दीवक बलेया चौही चक होई रह इया लोई
 काले महीने दिया हेरिया रात्ती जरमेया कृष्ण मुरारी
 सह इयो जरमेया कृष्ण मुरारी ।

अदि तां जावे वसुदेव भुटाके भुट्टेयां देन खलाइयां
 अदी तां जादी भाई वेवकी खलादी भूट्टेयां देन खलाइयां
 जा जम्मेया जा दीवक बलेया होई रेह इया चौहीचक लाई
 पुच्छी लै मेरे सगगीया साधिया जान बचाई घरै आया ।

हिंदी अनुवाद

धरी सखियो ! माद्रपद माह के कृष्णपक्ष में कृष्ण मुरारी का जन्म हुआ।
 कृष्ण कहता है तू मेरे सगी साधियो को पूछ ले आज मैं बड़ी बुरी तरह प्राण
 बचाकर घर लौटा हूँ। गापियां उसकी मां से शिकायत करती हैं। कह
 कृष्ण कहैया ने छोके ताह दिये हमारी मटकियां फाह दो और हमार सिर
 के बिन नदी में बहा दिये। माद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में धरी सखियो !
 मेरे घर श्याम मुरारी न जन्म लिया। कृष्ण मां से कहता है धरा मया !
 मले ही तू मेरे साधिया—मित्रों से मुनिदिषय कर ले। आज मैं बड़ी कठिनाई
 से घपने प्राणा को बचा कर घर लौटा हूँ।

जब मरा श्याम जन्मा तो घर में जैसे दीवक जल उठा और उस श्याम स्त्री
 कुसदीपक से मेरा घर जगमगा उठा। माद्रपद मास के कृष्णपक्ष में धरी
 सखियो ! श्याम मुरारी ने मेरे घर में जन्म लिया है। कृष्ण कहता है—घरे
 मिया तू मले ही मेरे सगी साधिया से पूछ कर निश्चय कर ले कि आज ता

पडी मुश्किल से प्राण बचा कर घर लौटा हूँ ।

इधर मापिया शिकायत करती हैं—भरे ब्याम की मैया इस तेरे श्याम न
हमारी बाह मरोड़ दी, हमारी मटकियां तोड़ दी और सिर के धिना को नदी
में प्रवाहित कर दिया है । उधर कृष्ण उत्तर देना है—मैया ! तू मेरे मित्रा से
पूछ कर निश्चय कर ले कि मैं तो आज बड़ी मुश्किल से अपने प्राणा की रक्षा
करके घर लौटा हूँ । माद्रपद के कृष्णपक्ष में भरी सखियों ! क हैया ने मेरे घर
ज म लिया है ।

महलाया घुलाया और वस्त्र में लपट दिया । दाईं ने बड़े चाव से उस नवजात
शिशु को अपनी गारी में ले लिया । पाच रुपये दाईं को उसका मोल देकर/
उसका लाग देकर यह प्यारा बेटा माता का मिला है । जब इस क हैय ने
ज म लिया तो यह दीपक की तरह अपने प्रकाश से मेरे घर को जगमगाने लगा
माद्रपद मास में भरी सखियां ! मेरे घर में कृष्ण का अवतार हुआ ।

मैं अपने इस सुन्दर बेटे का सोने का कटोरी में बताशा घोल कर 'गुंड सत'
(घडात—पहला भोजन) दनी हूँ । मैं इसके लिए घ-दन का भूला बनवाकर
उस भूले को रेशमी रस्मिया में बाधूगी । जब इसने ज म लिया था तो यह
दीपक की भाँति जलकर मेरे घर की चारा बूटा की ददीप्यमान करण लगा था ।
माद्रपद मास के कृष्णपक्ष में भरी सखियों ! कृष्ण ने मेरे घर में अवतार
ले लिया ।

मेरे घर में आते जाते पिता वामुदेव बच्च को भुलाते हैं । वैसे खिलाने वाला
स्त्रिया कृष्ण को भूल को भुलाती ही रहती है । घर के काम में व्यस्त आती जाती
हुई माता देवकी भी इस शिशु का खिलती है । वैसे खेलाने वाला स्त्रिया कृष्ण
को भूले को भुलाती ही रहती है । जब ही इस क हैय ने ज म लिया तब ऐसा
प्रतीत हुआ था कि मेरे घर में दीपक जल उठा है । इस शिशु रूपी दीपक के
जन्म-प्रकाश से मेरे घर का कोना कोना जगमगा उठा था । कृष्ण कहते हैं—
मैया ! तू मले ही तू मने सगी साधिया को पूछ ले । आज तो बस मैं बड़ी
कठिनाई से अपने प्राण बचाकर घर लौटा हूँ । ●

चुक्केया जी घड़ा

यह गीत कड़्डी क्षेत्र और पजल क्षेत्र की मनोभूमि को झनकाता है। कड़्डी क्षेत्र में शिकार खेलने आए राणा जाति के लोगो ने कड़्डी की नार को कहा कि वे उसके मायके की ओर के हैं और उनका कड़्डी के साथ 'साख' (सम्बन्ध) है। उन्होंने बताया कि उनका धन-दौलत चुरा लिया गया है और वे बेघर बेजर हो गए हैं। यहा तक कि उनके घोड़े आदि भी छिन गए हैं। अपना भाइयो को दे दिया और अपने सास ससुर से सौगध खाकर भूठ बोल दिया कि उसका नौलखिया हार कूप में गिर गया है। यह गीत ढोलरू के रूप में भी गाया जाता है। बहिन-भाइयो के चरम स्नेह का प्रतीक।

- सामा म परिचय चुक्केया घड़ा कड़्डी पाणीये जो चली जाणी नाऽ
 चुक्केया घड़ा कड़्डी पाणीये जो चली जाणी नाऽ
 नरेया-जी घड़ा कड़्डीये मिएणी पर घरेया
 हड़ा जा खेलदे आए कोई पाजले पजराणे नाऽ
 माई पाणी जा मरैलिये नारै घुट पाणिये दा प्याया नाऽ
 बहिन पाणी जा प्यांगी में माई जाति दे कुण होदे नाऽ
 माई आमा नाऽ टुंगे मैणे मिये पाजले पजराणे नाऽ पाजले पजराणे नाऽ
 कड़्डीये द साखले चार चार माई ना ।
 बहिन अगै ना होए तुसा मैलडे मैलडे भेसै नाऽ अज किहूया-करी आए तुसा
 मैलडे भेसै-नाऽ
 माई माल जा सजाना मैणे मिये सादा चुट्टीलेया साभकारा नाऽ

घाटा जाँ तवेला भँला गाढ़ा सुट्टी लेया सरकारा नाँऽ
 इत्तारो जाँ गलीदे भँण भाईयाँ देँ गलेँ सग्यी जादे नाँऽ
 गलेँ सग्यी भँण छम छम देई राऐ-नाँऽ
 नीमाँ सताँ दा हार भँला भाईयाँ देँ गलेँ साया- नाँऽ
 मद्धे दा सुताँ सँ-योँ माल जाँ भायेरा नाँऽ
 होर जा सँ-याँ महूसाँ जो राणियाँ नाँऽ
 चुक्केया जाँ पढ़ा कँडडी मुठी परेँ चली घीनी नाँऽ
 सोहूरा पुच्छेँ नूहें मियेँ कँह तू दूण मदूणी नाँऽ
 सस्त पुच्छेँ नूहें मियेँ कँह तू दूण मदूणी नाँऽ
 नीमाँ सताँ दा हार सीरेयाँ टुट्टी गूह इयाँ मंभू पेऽयाँ नाँऽ
 नीमाँ सताँ दा हार सस्तू टुट्टी गूह इयाँ मंभू पेऽयाँ नाँऽ

हिंदी अनुवाद

कड्डी क्षेत्र की गोरी ने घडा उठाया और पानी मरने को चली गई। हा
 कड्डी क्षेत्र की गोरी घडा उठा कर पानी मरने चली गई। घडा भर कर अभी
 कड्डी मऊचो डगी पर रता ही था कि उसे पजल क्षेत्र के कुछ लोग घाँवेट
 खलते हुए घाँते नजर आए। हाँ पाँच राँगे घाँधेँ खेलते हुए घाँते दिखाई दिय।
 परे पानी मरनी हुई हे नारी ! हमें एक घूट पानी तो विलाना।
 पानी तो तुम्हें विलाऊगी पर पहले यह बताओ कि तुम जाति के कौन हो ?
 हम पजल क्षेत्र के रहने वाले हे पाँच लाग हम राणा जाति से हे।
 हम कँडडी क्षेत्र के लोग के साथ सम्बन्धी भी हे। ये चार भेरे भाई हे।
 परे पजल क्षेत्र के राँगे कभी मले वेश मे दिखाई नहीं देत। पहले कभी इन
 मले वेश में दिखाई नहीं दिये। घाँज घाँप कैसे मँले वेश म हो मुझे बताओ।
 घरी बहिना ! हमारी घन दीलत साहूकारो ने सूट ली हे और घाँडे तवेले
 सरकार न छीन लिए हैं।
 शतना मुनते बहिन अपने भाइयो के गले लग गई। भाइयो के साथ भकमाल
 होकर छम छम रोने लगी।
 बहिन ने अपने गले का नीलखिया हार उतारा और भाइया को पहना दिया।
 परे भाइयो ! घाँधे हार से तुम जायदाद खरीदना और घाँधे से अपने महलो के
 लिए रानियाँ ले आना।
 फिर वह कड्डी की महिला अपना घडा उठा कर चर चोट घाँती हे।

समुर अपनी बहू से पूछने लगा —घरी बहू उदास मी क्या है ?
 सास पूछती है घरी बहू तू उदास क्यों है ?
 हे समुर जी ! मेरा नीलखिया हार टूट कर कुए में गिर गया है ।
 हे सास जी ! मेरा नीलखिया हार टूट कर कुए में गिर गया है ॐ

संग्रहण व अनुवाद
 डॉ० पीयूष गुलेरी

कागडा (पालमपुर) क्षेत्र

शिव गौरजा का विवाह

प्रस्तुत गीत में हिमालय पर्वत के घर पैदा हुई गौरजा के
 विवाह तथा सगाई का वर्णन है ।

हिचले राजे नै क या जे जाई
 मद्दे ब्राह्मण रास गण्डी
 एसा मेरीया क्या जो इसा मेरीया गौरजा जो
 खरा वर चाहिए ए छल वर चाहिए
 सुणा जो हमारया प्रोहता जी
 जोडी वर चाहिए—राम ।
 ना इत्यु रसदी ना इत्यु बसदी
 कुमा देहिया सेधा में जाणा जी ?
 काले काले बणे बिच धूए दी घट्टा
 एसा देहिया सेधा तुसा जाणा प्रोहता जी ।
 इत्ये सई घोती तें कच्छा मारी पाधी

पर पर दृढ़ण चलेया—राम ।
 इक वण हडेया दुभा वण हडेया,
 त्रिय वण साधुए दा डेरा राम ।
 तू कजो घाया मोलेया ग्राह्याणा,
 न मेरं छन ता न मेरं टपरी
 न मेर भोली ता न मेरं खपरी
 न मेरं खाणे जो दाणे—राम
 मै कियां व्याहणी गौरजां—राम ।
 तेरई छन ता तेरं है टपरी
 तेरई भोली ता तरई खपरी
 तेरई खाणे जो दाणे—राम
 तही व्याहणी गौरजा राणी गिवजी ।
 चिकडे-चिमडे सिव जी हीण सजोया
 काल कजल पीवल कीती—राम ।
 घणं बभूति गलं मुण्ड माला
 राहण ता केतूए डोल बजाए
 भूत प्रेत सह जानिया चलाए
 वलें चढ़ी सिव व्याहणा घाए—राम ।
 दिख दिख नहुले तू भपणे जुमाइये
 घारीयं कणसारीयं सस निखदी जुमाइये
 धीया सरूप जुमाई करूप
 फिट फिट धीये तू कजो जाई
 तिणजो सरेखा नी मिलेया जुमाई
 तै धीए लाज लुमाई—राम ।
 चिकडे-चिमडे गौरजा जो नहीण कराया
 काल कजल पीवल कीती—राम ।
 हत्या दे नहणें सह परं पुमाए
 ढाका दा घघरा सह सीसें लुभाया
 सिरे दा सासु सह ढाका ब हाया
 गौरजा दा रूप बदलाया—राम ।
 घारेया-घारेयां सिव जी भपणें सरूपे
 भम्मा दा दुखटा भटायां—राम ।
 गणां ता जमना दा हीण सजोया
 कुणुए केसरं पीवल कीती—राम ।

सूरज चन्द्रमा मुगटै जडाए
 म्याणु तारा बढी लाया—राम ।
 सौ सठ देवते जानिय चलाए
 सदा सिव व्याहणा आए —राम
 घारीयै कणसारीयै दिखदी नहुल्ल
 घीया कुरूप जुझाई सरूप
 एह कीया गल्ल बणानी — राम ।
 गगा जमना जलै गौरजा जो होए करामा
 कुगुए केसरै पीवल कीती — राम
 हत्था दे गहरो सह पैरै पुआए
 ढाका दा घघरा सह ढाका व हाथा
 सिरै दा सालुआ सह सिरै उढाया
 गौरजा दा रूप सजामा—स्याम ।
 सिव-गौरजा दा व्याह वो रचाया
 घीया जो दिदी घूप सह ससडा
 जुआइये जा अघ दुआई राम
 धन जी जुआइया धन धन सिवजी
 धन-धन वाकडा रूप— राम

हिन्दी अनुवाद

हिमालय के घर में जब गौरजा का जन्म हुआ तो उठने ब्राह्मणों का बुला कर कया की राशि गिनवाई और लगान लगवाया (फिर वे बोले) मेरी बेटी गौरजा को आप अच्छा सा घर बर दूँहिए हमारे पुरोहित जी! आप सुन लीजिए अच्छा और सुदूर बर चाहिए जिस से जोड़ी जच जाए। (ब्राह्मण वाले) यहाँ तो कोई भी बस्ती नगर नहीं मुझे बतलाइये कि मैं किस सीध (दिशा) में जाऊँ? (राजा बोला) काले काले (देवदार वाले) जगल में जहाँ से धूँआ उठ रहा होगा तुम उसी दिशा में चले जाना प्रोहित जी। हाथ में धोती उठा कर और बगल में पीथी लेकर प्रोहित गौरजा के लिए घर-बग की तलाश करन चल पडा। प्रोहित ने एक वन पार किया फिर दूसरा जब वह तीसरे वन में पहुँचा तो उसे एक साधु का डेरा दिखाई दिया। (ब्राह्मण को देख कर और उसका आशय भाप) शिव जी बोले धरे मोले ब्राह्मण तुम यहाँ क्या आए हो? मेरे पास न तो छन (छप्पर) है न

भौंपडी । न मेरे पास भोली है न भिक्षा मांगने के लिए खप्पर ही है और तो और मेरे पास तो खाने के लिए अन्न का दाना भी नहीं है । तुम्हीं बतलाओ मैं गौरजा को कैसे व्याह्र सकता हूँ ? (इस बात को सुन कर) ब्राह्मण बोला (भाप ऐसा मत कहिये) आपके पास छन भी है और भौंपडी भी । खाने के लिए अन्न की भी आपके यहाँ कोई कमी नहीं है । गौरजा से आपका विवाह होकर ही रहेगा । (इतना कहकर ब्राह्मण लौट आया । शिव जी अपने विवाह की तैयारियाँ करने लगे) शिव ने कीचड़ गारे में स्नान किया । मँहदी के स्थान पर काजल का प्रयोग किया । अगो में विभूति रमा ली और गले में मुण्डमाला पहन ली । राहू और केतु को ढाल बजाने के काय सौंपा गया । सभी प्रकार के भूत प्रेत बारात में चल पड़े और धरकर अगवान ने बैल पर चढ़ कर ससुराल की ओर प्रस्थान किया । (जब बारात सुसुराल के समीप पहुँची तब) सभी स्त्रियाँ नडुल (मयना) की कहने लगी कि तुम अपने जवाई को देख लो । (मयना) इधर उधर भाँक कर अपने जवाई को देखने लगी । उसने देखा कि जितनी सुन्दर उसकी बेटी है उतना ही कुल्ल उसका जवाई है । (मयना बोली) हे बेटी ! तुम्हारे वर म लेने को घिक्कार है जितनी तुम सुन्दर हो उसके अनुरूप तुम्हें वर नहीं मिला । तुमने तो हमें भी लाज लगवाई है । उहोने गारे और कीचड़ से गौरजा का स्नान करवाया । मेहनी की जगह काजल का प्रयोग किया । हाथों के गहने पैरो में पहनाए घाघरे का सिर पर छोटा दिया सिर का दुपट्टा कमर में बांध दिया । इस प्रकार उहोने भी पति के अनुरूप ही गौरजा का रूप बना दिया । (अब गौरजा शिव जी को मन ही मन कहती है शिव जी ! आप अपना असली स्वरूप बना लो मेरी माँ का दुखड़ा मिटा दो) । उहोने (शिवजी ने) गंगा जमना के जल से स्नान किया, बूंगू और कसर से शृंगार किया । सूर्य और चंद्रमा को मुकुट पर लगा लिया । भ्याणु तारे (श्रीर के तारे) को अपनी कमर में बाँधे कमर बाँध से लगा लिया । सोसाठ देवताओं को बारात में चलने को तैयार किया । इस प्रकार पूर्ण रूप से सुसज्जित होकर सदा शिव व्याह्र करने के लिए चले । (गौरा की माँ) छुपछुप कर अपने जवाई को देखने लगी । उसने देखा कि उसकी बेटी तो इस वर के आगे बहुत कुरूप दिखाई दे रही है शिव जी तो बहुत सुन्दर हैं । अब क्या होगा, यह बात बनती नहीं दीखती । उहोने भी गंगा जमना से जल मगवा कर गौरजा को स्नान करवाया । कुमकुम और क़ेसर से उनका शृंगार किया । हाथ के गहने हाथों में तथा पैरों के गहने पैरों में पहनाए । घाघरा कमर में और साँव (श्रीरानी) सिर पर छोटाया । इस प्रकार उहोने भी

दूल्हे के प्रनुरूप दुल्हन का रूप भी सवार दिया । प्रथम शिव गौरजा के विवाह की रसम पूरी होने लगी । सात गौरजा की पूज और शिव जी का प्रथम दक्ष उनका प्रतिमन दन करने लगी और प्रसन्ना करती हुई बोली भगवान सका तुम पय हो और तुम्हारा यह स्वरूप यय है ।

फागडा (पालमपुर) क्षेत्र

लंका दा दान

(प्रस्तुत गीत में लंका के निर्माण का वर्णन है)

चारेयो नदिषा ज चारेयो वणिषा जी
 चोही दे नीर सुहाए राम ।
 चारेयो नारी जी चारेयो पुरख
 चाही द जोड जहाये राम ।
 चारेया खूहीया जो चारेयो वेडिया जी
 चाटी दे नीर सुहाए राम ।
 गगा दे होणे जो चलो भोलेनाथ
 गगा होणे जो जाणा राम ।
 इस्की बखै हौणा लगे भोलेनाथ जी
 दूए बखै गौरजा राणी राम ।
 ठडेया छिट्टेया न लाया भोलेनाथ जी
 ठडेया छिट्टेया न लाया राम ।
 दो हथ टपरु नी बणेया भोलेनाथ जी
 कुथू वेई करनी है सध्या राम ।
 पले बिच खेल रचाई भोलेनाथे
 सुन दी लंका बणाई राम ।
 भत्तर काठे दो सो चवारे
 सो सठ लाए दरवाजे राम ।
 दिख मेरी गौरा में लंका बणाई
 इत्थू बैठी करनी है सध्या राम ।
 दारनी जो भेजणीया चिट्टिया ता पत्रिया

प्राहते जा 'यूदर देणी राम ।
 सब सब ब्राह्मण भाए भोले नाथ जी
 कुले दा प्रोहत नी भाया राम ।
 धन में देसा धन में देसा
 मुह मगी दछणा में देणी राम ।
 धन बही लैणा में धन बही लैणा
 दछणा च लैणी में लका राम ।
 हाथ लिया लोटा सकल्प जे कीता
 लका दीती दछणा राम ।

हिंदी अनुवाद

चार नदिया है चारो बह रही हैं और चारा का जल सुहावना (गमल) है ।
 चार नारिया है चार पुरुष है चारों का मेल कराने वाले श्रीराम हैं । चार
 वृक्ष हैं चार बावटिया हैं चारों का खल सच्छ है । (पावती भगवान शंकर को
 कहती है) हे भोले नाथ ! आप हमारे साथ गंगा में स्नान करने के लिए चलिए ।
 (मोलनाथ जी पावती को लेकर गंगा में स्नान करने चले) एक और शिव जी
 नहाने लगे दूसरी ओर पावती । (भगवान शंकर पावती पर ठंड जल के छीटे
 डाल कर उन से छेड़खानी बन लग) पावती कहती है मोलनाथ जी ! आप
 ठंडे पानी के छीटे मत लगाइय । (स्नान करते करते रूठने की मुद्रा में पावती
 भगवान शंकर को ताना 'ती है) आप में दो हाथ भापडी मी बनाई
 नहीं गई बताइये अब मैं कहा बठ कर स ध्या करू ? (शंकर से मा ताना नहीं
 कहा गया) उहोने अपनी माया के बल से पल भर में सान की लका बना कर
 तयार कर दी उस लका के बहनर कोठे और दा मी चौवार थे । सबको ही
 दरवाज उसम लगाए गए । अब शंकर उससे वाले देखा गौरज ! मैं
 तुम्हारे लिए लका का निर्माण किया है तुम थहा बैठ कर पूजा करा । (अब
 पावती शिव जी से कहती है) लका की प्रतिष्ठा करवाना है कुल पुरोहित को
 बुला लीजिए और तो बुलाने के लिए तो आप चाहे पत्र ही भेज दाजिए पर तु
 अपने पुरोहित को तो विधिवत निमंत्रण देना हागा ।' (शंकर भगवान ने भगी
 ब्राह्मणों की भाति पुरोहित का भी पत्र भेज दिया । सभी ब्राह्मण पहुंच गए
 पर तु कुल पुरोहित नहीं आया) पावती बोली भोलेनाथ जी सभी ब्राह्मण
 पहुंच गए हैं पर तु कुल पुरोहित नहीं आया । पुरोहित का बुलाने शंकर भगवान
 स्वयं गए और बोले, मैं तुम्हें बहुत सा धन धन दूंगा और इसके प्रतिरिक्त

मुह मांगी दक्षिणा भी दूंगा।

(कुन पुराहित गदुष गया। उगन नका की प्रतिष्ठा करवा दी शबर मगवान न उस घन घोर घन दिया) पुराहित न मन्त्र तथा धन बांध लिया। तब उससे मगवान गन्ध ने दक्षिणा मागन का बहाना पटिन ने दक्षिणा में लंका का हा मांग लिया।

गन्ध मगवान न हाथ में पातो का लाटा लिया घोर दक्षिणा कर रूप में नका का लक्षण कर दिया।

घटना प्रधान गीत

कागडा क्षेत्र

राजा गोपी चन्द

राजा गारी चन्द ने गरु मूमर के बहाने गाय पर बाणु चला लिया। गाय हत्या के प्राश्चित का वरदान इस गीत में है।

सूरे दे बहान गायी चन्द काना जो मारी
जी कपला जो मारी
हत्या लगी कुल्ले सारै राजा जी।
घरै जे आया गोपी चन्द माता जो पुच्छदा जी
माना जा पुच्छदा
किया जागी हया म्हारी माना जी ?
कन्ना ता छेदी पुत्रा मुन्ना जे पाया
जी मुदरा जे पाया
मागवा बदन लाया बेटा जी
दखरो भी जाया पुत्रा पछम भी जाया
जी पछमे भी जाया
माता दे बेहई मत छोदा बटा जी।

पहले दा हडगा वो माता माता दे बहूडे
 जो माता बेहडे
 देसो माता मिजो मिछिया माता जी ।
 दसरो भी जाया पुतरा पछमे भी जाया
 जी पछमे भी जाया
 भैया द देस न जाया गेटा जी ।
 दूजी ता अलख गापीचन्द नैणी द गण्डे
 जो नैणी दे बेहडे
 अमा माई असा जो मिछिया, रामा जी
 घाल ता मरी छोरी मिछिया लड भाई
 जी मिछिया लई भाई
 लिया जोगी तुसा मिछिया जी ।
 तेरी ता मिछिया छोरी असा भी नैणी
 जी असा भी लैणी
 राणी देवे तां लइये छारी जो ।
 कही न मजा राणी बाली न सका
 जी बोली न सकां
 इया लग भाई तुम्हारा राणी जी ।
 नकर कटासा आ छोरी जीमा बढासा
 जी जीमा बढासा
 महला ते बाहर नकाला छोरी जी ।
 घाल ता अरेया वो दणी मुगेया ता मातिया
 जी मुगेया ता मोतिया
 मिछिया देणा भाई राजा जी ।
 परा बखी दिखदी राणी मुखे बन्वी दिखदी
 मणा ता गई लटोई राजा जी ।
 तू ता था वो भाइया दिलिया दा राजा
 वो दिलिया दा राजा
 एह् कया भेस बणाया राजा जी ?
 बनए कटाया वो भाइया चिखा रचाया
 जी चिखा रचाया
 अणदागिया ठाहूरी दाग लाया राजा जी

राजा गोपीचंद (जय विहार मल रहे थे) ने सूअर समझ कर बाण चला दिया जा एक गाय का लगा जिसस गाद पर गई और यह गोहरया का पाप सर कुल का निरा कलफ बन गया ।

घर आकर गोपीचंद अपनी मां से पूछता है कि मां मुझे गऊ हत्या लग गई है इसके निर्वाण का उपाय बताइये ।

मां कहती है वेटा ! काना में छिद्र कर मुदरे डालो और भगवें रंग के वस्त्र पहन कर घर से निकल जाओ । तुम दक्षिण और पश्चिम दिशाओं में चले जाना कि तुम अपनी मां को ढूँढ लेंगे ।

(यस पर राजा गोपीचंद कहता है) मैं पहले तो तुम्हारे ही आगम में अलख जग उठा । मां तुम मुझे सबसे पहली भिक्षा अपने हाथ से ही देना ।

मां फिर कहती है तुम दक्षिण दिशा में भी जाना और पश्चिम में भी कि तुम अपनी बहन के देश में मत जाना ।

गोपीचंद मां से भिक्षा लेकर आगे निकल गया उसने बहन के आगम में जाकर अलख जगा दी और बोला माई भिक्षा दो

अलख सुनकर बहन की नौकरानी थाल भरकर भिक्षा ले आई और बोली लो जोगी जी ! भिक्षा ले लो ।

उसकी बात सुन कर राजा 'माला' रे लडकी ! तुम्हारे हाथ का भिक्षा हम नहीं लेते । रानी देगी तभी लेंगे ।

बात सुनकर नौकरानी ने राजा का पहचान लिया पर तुम वह हैरानी में पड़ गई कि क्या यह गोपीचंद ही है या कोई भ्रम ?

नौकरानी भीतर जा कर बोली रानी ना तो मैं कह सकती हूँ और न ही बोले बिना रह सकती हूँ मुझे तो वह साधु ऐसा लग रहा मानो आपका माई गोपीचंद हो ।

उसकी बात को सुनकर रानी बोली तू यह क्या कह रही है मैं तुम्हारी नाक कटवा कर जीम निकलवा कर तुम्हें अपने महला से बाहर निकाल दूंगी ।' इतना कहकर रानी ने मोतिया का थाल मरा घोड़ स्वयं भिक्षा देने के लिए बाहर निकली ।

रानी की दृष्टि उभो ही राजा के स्वरूप पर पड़ी वह उसके मुख की ओर देखने लगी । माई को देखते ही वह घडाम से जमीन पर गिर पड़ी और विलाप करने लगी माया ! तुम तो दिल्ली के राजा थे, तुमने यह क्या बेश बनाया है? (भच्छा अब

मुझ से नहीं महा जाता मेरे प्राण पखेरू उड़ने वाल है) च दन क पड को
 कटवा कर तुम चिता रचाना और ऐसे स्थान पर अग्नि लगा देना जहा कोई
 दाग न हो (अर्थात् तुम्हारी हत्या के कलक को सुनकर और तुम्हारे वेश का
 देखकर मेरा तन मन जल कर राख हा रहा है ●

घटना प्रधान गीत

कागडा क्षेत्र

सस्सू भगडा रचाया

प्रस्तुत लावगीत मे सास के दुव्यवहार स बहू की हत्या का वरण है ।

सभलीया बेला सस्सू भगडा रचाया जी

भगडा रचाया

दूरे दा भरना जलेया पाणी ए ।

टटू तरियाहे नूहँ बच्छू तरियाहे जा बच्छू तरियाहे

महए दी डाली कमलाई ए

पज सन गूहीया सस्सू पज सत वेडिया जी

पज सत वेडिया

चनए दीया चाई ठडा नीर ए ।

चुकेया घडालू नूहा मिणी पर रखेया जी

मिणी पर रखेया

वाल नी सांदा पापी कोई ए ।

पारलिया रिढीया सस्सू दो जणे उतरे जी, दो जणे उतर

मऊ धो नसाना दा वीर ए ।

सूई-सूई पगढी सस्सू कूजा दी कगली जी कूजा दी कगली

चलदे दी चाल पछैणी ए

नगणा दिया अक्ला सस्सू देरे दी नुहार जी, देरे दी नुहार

चलदे दी चाल पछैणी ए ।

दई निया सस्सू मेरे गैहणे ता कपडे जी, गैहणे ता कपडे

प्रीति जो करना सगार ए ।
 बत्ता दा धकेया नूहे धुप्पा दा मज्जेया जी धुप्पा दा मज्जेया
 नजर मरी मत दिखदी ए ।
 खाई लिया नूह लुधिया कचौरिया जी लुधिया कचौरिया
 मझले चवार चढी सोया ए ।
 पहल ता दि दी ससू रुखिया ता मुक्किण जा रुखिय ता मुक्किण
 अज कया पक्के पकवान ए ।
 गल बिच पई जादी चरमरी जी चरमरी जी
 पेटा च उठदा ऐ हील ए
 बत्राई तिया नूह अज ल्हफ तलाइया जी ल्हफ तलाइया
 मझले चवार नदी सोया ए ।
 अगै ता दिदी ससू दुट्टे सधालु जी, दुट्टे सधालु
 अज किया ल्हफ तलाइया ए ?
 बोहडी बध्याए नूहे ल्हफ तलाइया जी ल्हफ तलाइया
 मझले चवार सई गई ए ।
 अम्म मी सुभी मेरा बापू मी मिल्लेया जी बापू मी मिल्लेया
 नार मेरी नजरी नी आई ए ।
 चुकया घडोलू पुत्रा ढाका पर रखेया जी ढाका पर रखेया
 खूहीया कनारे चली गई ए ।
 खूहीया नी मिल्लो माए बोडिया नी मिल्ली जी रोडिया नी मिल्ली
 राती ब्रेला कुलू गई ए ।
 मिरे पैर कमली पुत्रा चन्दी के चवारे जी चढी के चवारे
 मझले चवार सई रही ए ।
 हकका भी पाइया माए बाही तहालिया जी बाही मी ल्होमिया
 डरक भी हकक नही सुणदी ए ।
 ग्याधे पकुमान पुत्रा तिरमिरी पैर जी तिरमिरी पैर
 मुह डकी सई गई ए ।
 फिट फिट माए तिर हल्या तै सई जी हत्या तै सई
 तै मेरी नार मुकाई ए ।
 पकडेया घोडू पुत्रे अड्डिया दा आई
 ह्य नही भादा तेर देस ए ।

सास हा रही है, सास अपनी बहू से झगड़ रही है, अभी उसे बहुत दूर से पानी भी लाना है।

सास बहू को पहती है कि कट्टू (भैस का बच्चा) और बच्छू (बछड़े) प्यास हैं। मरुण की मयारी भी सूख रही है तुम पानी लाओ।

बहू पूछती है मां जी ! पाच सात कुएँ है और पाच सात घावडिया है मुझे बतलाइये कि मैं कहां से पानी लाऊँ ?

सास कहती है पाच सात कुएँ और घावडियाँ तो हैं परंतु तुम चरण की बावडी से ठण्डा पानी ले आओ।

बहू न घड़ा भर कर मेढ पर रख दिया किंतु घड़ा बड़ा था उसे कोई भी व्यक्ति नहीं दीखता था जो उस घड़े को सिर पर उठाने में उसकी मद्दत करे। सभी समीप से गुजर जाते थे किसी का उस पर दया न आई।

(किसी प्रकार घड़ा उठाकर वह अपने घर पहुँच गई और प्रसन्नता पूर्वक साम से बोली) मां जी ! पार वाले टीले से दो व्यक्ति उतरे हैं उनमें से एक नंद का भाई (अर्थात् मेरा पति) है।

(सास ने बहू से प्रश्न किया) तूने कैसे जान लिया कि पार वाले टीले से उतरने वाले लोगों में तुम्हारा पति भी है।

(तब बहू बोली) मैंने देखा कि उनकी साल रंग की पगड़ी है, उस पर कूज का पत्तों की कलगी है और मैंने तो दूर से उनकी चाल भी पहचान ली है। नन्द की तरह उनकी आँखें हैं देवर जैसी गहरी हैं और चाल से तो पता ही चल जाता है।

अब आप जल्दी से मेरे गहने कपड़े निकाल दीजिए मैंने उनके आने से पहले-पहले श्रुति मार करना है।

तब सास बोली देखो वह धूप से कुम्हलाया हुआ और संफर करके पका माँगा घर आ रहा है। तुम आज उससे दूर ही रहना नजर भरकर उसकी ओर मत देखना।

सास ने बड़िया-बड़िया पकवान पकाए और उसे खाने के लिए परोस दिए। उन्हें देखकर वह बोली सास जी ! पहले तो आप रुखा सूखी रोटी दती थी आज पकवान किस लिए पकाए गए हैं ? खाना खाते ही उसके गले में जलन सी पड़ती है और पेट में हिल उठने लगता है।

(अब सास उसे कहनी है) बहू ! तुम लिहाफ और तलाइयों में बिस्तर लगा कर मम्ले चौबारे में उनके आने से पहले पहले सो जाओ।

सास के व्यवहार पर उसे आश्चर्य होने लगा कि पहले तो यह सास चौबडों में

सुलाती थी आज क्या बात है कि यह मुझे लिहाफ़ और तलाश्या म सुना रहा है। उसने लिहाफ़ तलाश्यों का ऊपरी चौबार में बिछाया और मास क बहन के धनु सार जाकर सो गई।

(जब लटका पर आया तो वह ग्रह लादित आंग्रा स इधर उधर अपनी प्यारा पत्नी का देखने लगा) वह बाता अम्मा न मिन इनया गानू स मिन सिया पर तु मेरी पत्नी दिव्याई नहीं द रहा है वह कहा हे

(तब मा बोली) बटा। वह घटा उटाकर पानी लेन के लिए कुए पर गई है। (पति भट कुए की ओर चल पडा पर-तु उसे यह वहां भी न मिली तो मा उ बोला) मा। मैंने उसे कुए पर भी बूटा बावटा पर भी देखा तुम मच सच बताओ कि वह रात्री के समय कहा गई है ?

तब मा बोली उसन सिर पर कम्बल ओढा है और बीच वाले चौबार में च कर सो गई है।'

(इतना सुन कर वह चौबारे पर आ गया)। उसन आवाजें लगाई बाहो में हिलाया कि-तु वह न उठी तब वह मा में बाला) मैंने उसे आवाजें लगाई हिलाया पर तु वह तो बोलती ही नहीं है। मरी एक भी आवाज नहीं सुनती।'

तब मा अपनी करतूत पर पदा डालती हुई ब ला बेटा। पक्वान नात हा उमरु गले म जलन सो पढ गई थी और इयालिए ता वह मुह टाप कर सा गई थी।

(बेटे का मा की काली करतूत समझने में देरी न लगी वह बाता) मा तुम्हारी इस काली करतूत का धिक्कार है तुमने मरी पत्नी की हत्या की है उसका हत्या का कलक तुम्हारे सिर पर है।

उसने घोडा खोला और उस पर सवार हाकर मा स बोला अब मैं तुम्हार देग में कमी भी नहीं आऊंगा। तना कट कर घाडे को छडी लगाई और वहा से चल दिमा ②

बली राजे दा जग

(राजा बली की दान परीक्षा का वणन)

राजे बलीन कोई जग रचाया,
सो मठ ब्राह्मण पू दरे राम ।
पञ सत ब्राह्मण बीहा जे बँटे
पञ सत परौली दुभारं राम ।
बालके दे रूप सुधामी जे आए
बठे घूणी रमाई राम ।
क्या बालका घोनी पोधी तँ लैणी ?
की मत्त खाणा रसोई स्याम ।
न जजमाना घोतो पोधी में लैणी
न मत्त खाणा रसोई राम ।
क्या बालका गजली घोडी तँ लैणी
क्या राणिया पर हाख स्याम ।
न वो राजा गजली घोडी में लैणी
राणी हमारी हे माता स्याम ।
डाई पैर ब्राह्मण घरती जे मगदा
दनणा की लणा में दान राम ।
भौलिया दे मुकुए सुक्कर जे बँठा
करना नी दिदा हे दान स्याम ।
द्रुमा दे जुहुए दी सुक्करे जो नाई
सुकरे दी हास फटाई स्याम

हिंदी अनुवाद

राजा बली ने यज्ञ रचाया जिसमें सैकड़ों ब्राह्मणों की 'योडा भेजा पांच मान ब्राह्मण तो घर के वारह व बीह (घटली) पर आकर बैठ गए और कुछ छयाडी के दरवाजे पर बालक के रूप में जगतपति भगवान स्वयं वहाँ पधार और घूनी जला बैठ गए

राजा ने बालक से पूछा 'हे बालक ! क्या तुम पहनने को घाती में पहने का पोषी सामे प्रयत्न रसोई घर में पका मात खाओगे ?' बालक बोला 'हे यजमान ! न तो मुझे घाती पोषी चाहिए और न रसोई में पका मात खाऊंगा'

(इस पर राजा हस कर) बोला 'क्या तुम्हें गजली (बटिया) घोड़ी लेनी है या फिर तुम्हारी दृष्टि मेरी रानी पर है ! तब बालक बोला 'नहीं राजा मुझे तुम्हारी घोड़ी नहीं चाहिए रानी तो हमारी माता तुल्य है। मुझे ता कवस घटाई हाथ भूमि चाहिए जिस पर मैं अपनी कुटिया बनाऊंगा।

इतनी बात जब ब्राह्मण ने की, राजा घरती दान करने की तैयार हो गया कि तु उसका गुरु शुक्र सारी बात समझ गया वह मसरवे के मुख पर जाकर बैठ गया जिससे सकल्प के लिए पानी ही नहीं निकल पाया। (भगवान उसकी चालाकी माप गए) उ हाने दूब से मसरवे की टूटी को छडा जिससे शुभ्र देवता की एक प्राख फूट गई (और राजा से वाचन से सकल्प करवाया और तीन डगा में तीनों लोको का माप लिया) ●

सप्रहण व अनुवाद
सुदेशन डोगरा

उभारे तैं आई राणी देवकी

यह लोकगीत उस समय की घटना को चित्रित करता है जब राजा कस अपनी बहन देवकी की कोप में उत्पन्न सात सन्तानों का वध कर चुका होता है और भगवान कृष्ण के जन्म के उपरान्त देवकी अपने नवजात शिशु कृष्ण को यशोदा की कन्या से बदल लेने की आपसी सहमति व्यक्त करती है। इस योजना से नवजात कृष्ण को कम के कोप से बचा लिया जाता है फिर भी यशोदा की कन्या को कस देवकी की सन्तान समझ कर बठोर शिला पर पछाड़ता है। कस द्वारा कन्या पछाड़े जाने में पहले आकशवाणी करती हुई कि मरने वाला तो यमुना पार है, बिजली बन कर चमक उठी

उभारे तैं आई राणी देवकी घञी घा
 पारे तैं आई जसादा भांभर बजदी
 घञी घो भांभर बजदी
 भरेया घडोभू देवकिया जगिया पर रक्खेया घञी घो
 नैण मरी मरी रोए भांभर बजदी
 घञी घो भांभर बजदी ।
 बू कह जो रादी मँहू रो देवकिए घञी घो
 क्या तेरे मने बिष बोह भांभर बजदी
 घञी घो भांभर बजदी ।
 सत बनमें राजे कसे पारे घञी घो
 घडुए नैण भवतार, भांभर बजदी

धत्री धो भाँकर बजदी ।
 ज तेरें जमेगा यातव धत्री धा
 गोठुल देगा पुनाई, भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 मानु म्होने दी घटमी धत्री धो
 जमेया कटणा गुरार भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 जागदे पह री छई गेए न धत्री धा
 सुत्ती गेए न घम दुघार भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी धा ।
 राह रिया पाया जी नी ह बसुदवेँ धत्री धा
 जाणा ऐ जमुना द पार, भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 धग्गे तँ जमुना उछसी धत्री
 पिच्छे त सीह परणाये भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 चरणा वदी जमुना थले धगे धत्री धो
 सीह लेया बणवास भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 उठ जसोदे सूतीए धत्री धो
 बसुधा खटा दरवार भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 बालक लीजो कया दीजो धत्री धा
 कया लणी बटाई, भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 छल छलंडी उठी ए धत्री धो
 बालक लेया गलें लाई, भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 धौदिया कया रोई सुणाया धत्री धा
 कया लेया धवतार, भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।
 सुत्तियो पह रा जागी खडोत्त धत्री धो
 चढ़ी ए घम दुघार भाँकर बजदी
 धत्री धो भाँकर बजदी ।

लखर करो राजे वसे जो धत्री धो
 कया सया धवतार, भोभर बजदी
 धत्री धा भोभर बजदी ।
 सही बुलायो पडेयो पडता धत्री धो
 कया दा सन पणुयो, भोभर बजदी
 धत्री धो भोभर बजदी ।
 वेदां दे धदर बासक धत्री धो
 कया विस विघ होई, भोभर बजदी
 धत्री धो भोभर बजदी ।
 सच गतायां भैहूँ देवकिए धत्री धा
 तू सतवती ए नार, भोभर बजदी
 धत्री धो भोभर बजदी ।
 जमेया धा बीरा बासक धत्री धो
 कया लेई ए बटाई भोभर बजदी
 धत्री धो भोभर बजदी ।
 सद् बुलायो नुसड घोविए धत्री धो
 वज सिला परछाडयो, भोभर बजदी
 धत्री धो भोभर बजदी ।
 मिहूजा कया माचना घोविया धत्री धो
 मरने वाला धमनापार, भोभर बजदी
 धत्री धो भोभर बजदी ।
 हत्यां तं छुडकी धो गेई ए धत्री धा
 बिजली लैया लछकारा, भोभर बजदी
 धत्री धा भोभर बजदी ।

हिग्बी अनुवाद

एक धार से रानी देवकी घाई
 धीर दूसरी धोष से यथोदा, पायल बजती है
 धत्री हां पायल बजती है ।
 वडा भरकर देवकी ने धगी पच रखा
 नयन भर भव कर रोती है, पायल बजती है
 धत्री हां पायल बजती है ।
 तू किस लिए बहन देवकी रो रही है

कौन सा क्रोध तेरे मन में है, पायल बजती है
 भजी हां पायल बजती ।
 मेरी कोख से पैदा हुए सातो को राजा कस ने मार डाला
 झाठवें ने भवतार लेना है, झांझर बजती है
 भजी हां झांझर बजती है ।
 भगर तेरे घर बालक जन्मा
 तो उसे गोकुल पहुँचा देना झांझर बजती है
 भजी हां झांझर बजती
 माद्र मास की घण्टी भजी हां
 जन्मेया कृष्ण मुरारी, झांझर बजती है
 भजी हां झांझर बजती ।
 जागते हुए पहरेदारा की आँख लग गई
 धम द्वारा खुन गए, झांझर बजती है
 भजी हां झांझर बजती है
 बासुदेव ने टोकरी में डाल
 उसे यमुना के पार पहुँचना है
 भजी हां झांझर बजती है
 धागे से यमुना उछल पडी
 पीछे से शेर गजने लगे झांझर बजती है
 भजी झांझर बजती है ।
 यमुना ने बालकृष्ण के चरण छूए धीरे नीचे से बह गई
 शेर ने बनवास लिया झांझर बजती है
 भजी हां झांझर बजती है ।
 सोई हुई जाग जा
 बासुदेव तेरे द्वार पे खड़ा है झांझर बजती है ।
 भजी हां झांझर बजती है ।
 बालक ले लो कया दे दो
 कया परिवर्तित कर लेनी है झांझर बजती है
 भजी हां झांझर बजती है ।
 सुन्दर खेल छबीली उठी
 धीरे बालक को गले लगा लिया झांझर बजती है
 भजी हां झांझर बजती है ।
 कया है धाते ही रोकर पुनाया

कया ने अश्वतार लिया, भांभर बजती है ।
 मोए हुए पहरेहार जान पडे
 पमद्वार पर यह चढाई गई, भांभर बजती है
 अजी हां भांभर बजती है ।
 राजा कस को खबर करो
 देवकी के यहां कया ने जन्म लिया है, भांभर बजती है
 अजी हां भांभर बजती है ।
 पडे लिखे पडितो को बुलवा भेजो
 कया का लग्न आदि गिनाओ भांभर बजती है
 अजी हां भांभर बजती है ।
 वेदा के आदर तो बालक है
 कया ने किस विधि जन्म लिया, भांभर बजती है
 अजी हा भांभर बजती है ।
 वहन देवकी सख बता
 तू सतवती नार है, भांभर बजती है
 अजी हा भांभर बजती है ।
 ज मा तो वीर बालक या
 उस कया से बदल लिया है, भांभर बजती है
 अजी हा भांभर बजती है ।
 घूस लेने वाले घोबी को बुलाओ
 इस कया को वह पत्थर शिला पर पटकाए भांभर बजती है
 अजी हां भांभर बजती है ।
 ह घोबी । तूने मूढे कया मारना
 मरने वाला तो बच कर सुमता पार पहुच गया है
 अजी हा भांभर बजती है ।
 वह न या हाथ से तत्काल निकल छूटी
 बिजली के रूप मे चमकी, भांभर बजती है ।
 अजी हा भांभर बजती है

धर्म सूरमा

लज (कांगडा) क्षेत्र के आसपास ही क्या संपूर्ण कांगडा में धमू डाकू (धमू धूरवीर भी) प्रसिद्ध था। कहते हैं इस सम्पूर्ण क्षेत्र में इस डाकू का आतंक व्याप्त था। बड़े भाई ने पुलिस को इसके द्युप होने की सूचना दी। पुलिस पहले ही इसका पीछा कर रही थी। इस डट कर पुलिस का मुकाबला किया। सिपाहियों और धानेदार ने उससे रिश्वत मागी कि उसे छोड़ दिया जाएगा। रिश्वत देकर बच निकलना उसे शान्ता नहीं दिया। अगली सुबह बड़ी चालाकी से उसने पांचों सिपाहियों और छठे धानेदार को तलवार से काट कर मौत के घाट उतार दिया। अन्त में मुकाबला करते मारा गया। उसका कलेजा सेर पथक का निकला ऐसी किंवदन्ती प्रचलित है।

ठड्डा ठड्डा हुवा वा धर्मू मा, बर्खा दी छणकार भो
भ दर पक्के फुलक धर्मू मा बहार रिज्जे दाल भो
बड्डे जे माऊए चुगली लाई सही बुलाई सरकार भो
हौलें हौलें पुलसा चलदिया कडियां दी छणकार भो
सो सो रुपया सपाही मगदे, दो सो ठाणेदार भो
में कुर्यां ते रेह या भो लोको देवे धर्मू जान लो
सुसा सुत्तेदा धमू उट्टिया हत्ये फडी तलवार भो
पज तां बड्डे पुलिस सपाही छेवां ठाणेदार भो
कीठें चदी कनै बन्व जी रोए धर्मू ए खाणी मार लो
तु कह जो रोदा भो मेरे बापू धर्मू नी खांदा मार लो
दैडियां बड्डी माता जी रोबे दर बिच तेरी नार भो

तू कह रोवे मेरी झमड़ी, धमू नी खादा मार ओ
 किसे दा नी मारेया धमू मरदा, बरमे दी ए हार लो
 चार धुकेरे धमू दौंटे, पेह्या मूहां दे मार लो
 पेह्ली गोली छातिया बज्जी दूबी कलेजे फाड लो
 सेर ता पक्का कालजा निकलेया चर्बी बेगुमार ओ
 गन्धिया मोटरा जांदा, उतरी नेया हरिदुभार ओ
 सहर बजारे डौंडी पिट्टी धमू दी गेई लाश लो

हिन्दी अनुवाद

धमू ठडी ठडी हवा चल रही है मीनी मीनी चपा की चौधार है
 झंझर चपातियां पक रही है धमू बाहिर दाल पक रही है
 बड़े माई ने गिकायत लगाई और सरकार का बुला लिया
 धीरे धीरे पुलिस चल रही है हथकड़ियों की छलकार की आवाजें है
 सौ सौ रुपये सिपाही मांगते हैं, दो सौ घानेदार
 मैं कहाँ से दू लोगो, दे धमू अपनी जान लो
 साया-साया धमू उठा हाथ में पक्की तलवार लो
 पांच तो उसने पुलिस के सिपाही काटे और छटा घानेदार
 कोठे पर चढ़ कर उसका बाप रोए धमू ने माद खानी हैं
 तू किस लिए रोता है मेरे पिता धमू मार नहीं खाता
 सीढियां चढ़ती माता रोए, दरवाजे के बीच में तार
 तू किस लिए रोए मेरी माता धमू मार नहीं खाता
 किसी का मारा धमू मरता नहीं, कम की ही हार है
 चारों तरफ धमू दौंटे, गिरा मुह के बल पर लो
 पहली गोली छाती में लगी दूबी ने कलेजा फाड डाला
 सर पक्का तो कलेजा निकला और चर्बी का कोई हिसाब नहीं
 गाड़ी मोटरों में धमू गया (धमू की प्रस्थियां) उतरा हरिद्वार ओ
 गहर बाजार प्रचार किया गया धमू की लाश खली गई ॐ

बुड्डियां जां माइयां

यह गीत 'ढोलक' के रूप में प्रचलित है। चाची न अपने दोनो भतीजो को किस तरह जहर देकर अपनी दुश्मनी का बदला लिया हृदय कपा देने वाता है। बड़े होने पर दोनो राणे अपनी चाची के पास श्रीनगर जाते हैं। उनके वहा पहुंचने पर चाची को पता चला तो उसने धाम रचा दी। धाम खाने के लिए दोनो राणे दुलाए गए पहले ग्राम म ही जहर की तिरमिगे दोनो को महसूस, हुई दूसरे ग्राम खाते ही दोनो के प्राण पखेरू उड जाते हैं। महलो के निकट ही चाची न उनका शवदाह किया और चैत्र मास में राजपूत पुत्रो की गवा भी गवा दो।

बुड्डिया जा माइया राणघो दोएघो बेटडे पर जायो ना

बुड्डिया जा माइया राणघो दोएघो बेटडे पर जायो ना

लोई नराणें लाइया ना

बरिया दे

हुई बरिया दे होए मेरे दोएघो राण श्रीनगरा जा जली जादे ना

हुई बरिया दे

श्री नगरा जो जादे मेरे दोएघो राणे होर क्या कमादे ना

अकुरें जा छाबूडघां दोएघो राणे फुलडूमा जां अगदे नां

फुल्ला जा घगए मेरे दाएघो राणे होर क्या कमादे ना

फुल्ला जां चगेए मेरे दोएघो राणे खिन्नुघां जा खलैदे ना

लटपटिया पगडिया ब हदे नेबेघो दोमाह रो ना

पगडियां ली ब ही दाएघो मेरे राणे हारा जा परोदे नां

हारा जा परागदे मोरे दोएघो राणे पगडियां पर परदे ना
 घोडे जा घोड़े दोएघो राणे होए रँहू-दे तयार ना
 लै जां घोड़े दोएघो राणे होए रँहू-द सुमार ना
 घो तेरिया जां परोली घो चाचिए दो परोह खे बणी घ्राए ना
 क्या-क्या सावर करिए परोह गेया दो क्या क्या घ्रादर करिए ना
 भिकरण जां गाड चाचिया लै घामा जो लगाया नां
 घो बजसत सुगा चाचिया जँह र मोह र पाया
 जादेयां जां सा राणेया चाचिया पग्दी दिस्तियां बछाई नां
 मला साटेयां जा गडबिया दाएघो राणे घामा सा गु मगाए नां
 पँहू-से जां प्राहँ दाएघा राणेयां जां तरोमिरी जां लग्गी ना
 दूए बी जां प्राहँ दोएघो राणे जांद ना घो समाई ना
 मला दरनी ना बैरनी चाचिया घँर लेया कमाई ना
 मला घनए जा कटाय ल चाचिया चिला दित्ती रचाई ना
 बैरनी जां कैतो चाचिया घँर लेया घो कमाई ना
 महला देघो कडे लै चाचिया दाग दित्ता घो दुमाई ना
 ममा चँत्र जा म्हीने राणेया दो गीति दिस्ती घो गुमाई ना

हिन्दी अनुवाद

बूढ़ी माई ने दो बेटों को जन्म दिया था
 नखर नारायण ने लगाई थी
 एक वर्ष के हुए दोनों राणे क्या-क्या कमाते हैं
 दो साल के हुए दोनों मेरे राणे श्रीनगर को चले जाते हैं
 श्रीनगर को जाते मेरे दोनों राणे क्या कुछ कमाते हैं
 धक्कू या छान्डी में दोनों राणे पूल चुनते हैं
 पूल चुनकर दोनों मेरे राणे और क्या कुछ कमाते हैं
 पूल चुन कर दोनों मेरे राणे गेंद खेलते हैं
 सुन्दर पगडियां तिहुँदे लपेटे दिए दो मनुष्य है
 पगडियां कस कर दोनों मेरे राणे हार पिरोते हैं
 हार पिरोकर मेरे दोनों राणे पगडियों पर उन्हें धारण करत हैं
 दानों राणे घोड़े कस कर तैयार रहते हैं
 दोनों राणे घोड़ों पर सवार रहते हैं
 घो चाची तेरे दरवाजे पर दो प्रतिधि घ्राए हैं
 क्या-क्या घ्रादर सरकार करें प्रतिधियों की

भिक्कण और गरुड से घाटा पितावर चाची ने घाम लगाई
 उस चाची ने पांच सात लूंगे (कुतरे) जहर भीहर डाला
 और उसी समय चाची ने उह हूँठो के लिए बिछोने बिछाए
 लोटे और गिलास पानी के देकर चाची ने घाम लगाई
 पहल घास में दोनो राणा का तिरमिर सी लगी
 दूसरे घास में दोनो राणो चित्त धरता पर गिरे
 मला बैरिन चाची ने बैर कमा लिया
 च दन बटा कर चाची ने चित्त रचा दी
 बैरिन चाचा ने बर कमा लिया
 महला के पास कितारे पर उन दोनो राणों का अन्तिम सस्कार किया गया
 चैत्र मास में दोनो राणो की गीति गवां ली

सप्रहण व अनुवाद
 डॉ प्रत्यूष गुलेरी

कीधर देसे दी आई णी धोवन

प्रस्तुत गीत मे एक धोबी जाति (जिसे अछूत माना जाता रहा है) की सुदरी एव चम्बा रियासत के राजा की प्रणय गाथा गूँथी पडी है। राजा धोबिन की सुदरता पर मोहित हो गया और उसने उसे अपनी रानी बनाने का निर्णय लिया, यद्यपि धोबिन ने उसे बार बार इस कृत्य से राजा को रोका। राजा की पहली रानिया यह सब सहन नहीं कर पाई परिणामतः जल मरी।

कीधर देसे णी आईणी धोवन
 कीधर देसे धो जाणा रा
 दाखन देसे दी आईणी धोवन
 प च्छम देसे धो जाणा रा
 कपलिया घोंदी नी धोवन
 छमां छमां दियां रोदी ना
 लोला ली ला पाणी ई नदिया,
 गहरा गहरा लिभदा ना
 सुरती दिखी भुल्ले ना वो राजा
 जाति दी मैं छीबी मां
 लबरी गइया धो राजा
 चम्बे दिया राणिया
 सुरती दिखी भुल्ले
 न धो राजा जाति
 री मैं छीबी मां

सहिष्णो मगा दा राजा
 जिन्हा इहा काहारा जो
 बुकिया ढाला वो काहारा
 लिस्ता इ हा महला जो
 सब्बा सौ मण चील वो राजा
 घामा जो लाए ना
 जहर खादा वो रागिया
 मरी ताँ गइयो ना
 बनएँ दा रुख कटाया
 चिक्खा च चिणाया ना
 चैत्तर महीने वा घोबनी दो
 गीत्त गाई ये ना

हिंदी अनुवाद

मेरी घोबिन ! तुम किस देश से आई है
 और किस देश को तुमने जाना है
 मैं घोबिन दक्षिण देश से आई हूँ
 और मुझे पश्चिम देश का जाना है
 घोबिन कपडे धा रहा है
 और छम-छम (धमसू बहा कर) रा रही है
 नदिया का पानी मटमैला है
 और गहरा गहरा दिखाई देता है
 मेरे राजा ! मेरी सूरत देख कर तुम अपना होश हवास
 मत छो दो (क्यों कि)
 मैं जाति की छोबी (पट्टन) हूँ
 (राजा छोबी पर मोहित हो गया है ये)
 खबरें बम्बा राज्य का
 रानिया व पास पहुँचा
 मेरे राजा ! मेरी (सु दर) सूरत देख कर तुम अपने
 होश हवास मत छो दो (क्यों कि)
 मैं जाति की छोबी (पट्टन) हूँ
 राजा ने कहार बुला भेजे
 कहारो के (घोबिन का) डोला छठाया

घोर महलों में पहुँचा दिया
 राजा ने सवा सौ मन चावल
 घाम (निलाने) पर लगाए
 राजा की रानियों ने जहर खा लिया
 और मर गईं
 (राजा ने) घड़न बुझा कटवाया और
 चिता की चिनवाया
 चत्र मास में घोबिन से सम्बन्धित
 यह गीतिका गाई जाती है

घटना प्रधान गीत
 कांगडा क्षेत्र

गज्जा लां वह, णे

प्रस्तुत गीत में कांगडा घाटी में बहती एक छोटी नदिया गज्ज के किनारे, एक मामा और भानजा, जो दोनों राजा थे के बीच लड़ी गई लड़ाई का वणन है। इस गीत को 'घोड़ी' कहते हैं और जाति विशेष के गायक चैत्र मास में घन-घर जाकर सुनाते हैं।

नीलिये नी घोड़िये लालिये हज्जी ना
 दूमसु रंगे तेरे मँहदिये हज्जी ना
 ओ जाई सभोती गड डी दे टयालें हज्जी ना
 गज्जा लां दे बड़ु सँ ओ लगिये
 लडाइया हज्जी ना
 मामा ते माणजे दिया लपिया
 लडाइया हज्जी ना
 मामें ता हूण माणजा मारी का निवा
 हज्जी ना

गरजा लो द बहुएँ
 मुहिमा दे टेहले हजो त
 ढाई घडिया तूने दी गजज बगो हजो त

हिंदी भजुवाव

घो साखे और मोले रग की घाही !
 तुम्हे पूरी तरह से लडाई के लिए सजाया गया है
 घोही बट बक्ष के चबूतरे के पास जा मही हुई
 'गजज' नभिया के किनारे
 सडाई मही गई
 ये लडाई मामे और मानजे के बीच सही गई
 मामा ने मानजा मार दिया
 'गजज' नभिया के किनारे
 सिरों के डेर लग गए
 घडाई घही तक गजज नभिया
 तून स बहुती रही ☺

चैत्र मास का गीत

प्रस्तुत गीत भी जाति विशेष के लोग चैत्र मास के आरम्भ में घर-घरजाकर सुनाते हैं। ऐसी परम्परा है कि इही मासको मुख से ही विक्रमी सवत् के आरम्भिक मास (चैत्र) का नाम सुनना (या सुणना) श्रेयस्कर होता है। गीत में अपेक्षित परिवर्तन गायक लोग आवश्यकतानुसार कर लेते हैं। गीत ढोलकी पर गाया जाता है और प्रत्येक पक्ति दोहराई जाती है।

पहला ता ना लैणा नागधरा दा
 जि ही दुनिया बसाई ए
 दुधा ता ना लैणा माई-बाप दा

जिहा दस्या सप्तर ए
 तिजा ता नां लेइए गुरु भापणा
 म्हुदे बाया दे पाप नां
 सब्बे ता ऋतु नें रामा फिरि रहिया
 वानरु फिरि ना भौए नां
 प्राया ता चंत बैशाख
 जे कोई सुणें भाग मान ना
 इदहा गया घर भप्पणे
 घाई सो दी बहार ना
 तुलसी डाली ता गोरिए ना लेइए
 तुलसी जाति दी बमनेटी
 मरुमा डाली ता गोरिए ना लेइए
 मरुमा जाति दा कदरेटा ए
 कोल्लेह दे फुल्ले ता गोरिए ना लेइए
 कील्ला फुल्ल ठौकरें प्यारा
 सीता चल्ली ए पाणिए
 हत्यें लिया सीस गढ़ोवु
 पुच्छणा लेई गजे राम चंद
 सीता रहियो बढदी बहार

हिंदो अनुवाद

सबसे पहले नारायण का नाम लेना है
 जिसने सारी दुनिया बसाई है
 दूसरा नाम मा बाप का लेना
 जि हो ने संसार दिखाया है
 तीसरा नाम गुरु का लेना है जिसके द्वारा शरीर के पाप म्हु जाते हैं
 सब ऋतुए घूम फिर कर फिर से प्रा जाती हैं
 पर एक बार गया (भरा) मनुष्य फिर नहीं लौटता
 अब हम चंद्र बैशाख का नाम लेते हैं
 जा इसे सुनें वह मायगाली होगा
 इन्द्र अपने घर गया
 इस कारण से सबत्र बहार हुई

धरी गरी ' हम तुलसी की टाली नहीं उगे
 क्या की तुलसी वृक्ष जानि म प्राज्ञानी मानी गई है
 मरुमा का डाला भी हम नहीं लेंगे
 क्या 'र मरुमा का बग जाति म शत्रिय जमा ?
 धरी गरी ' हम कपल का फूल भी नहीं लेंगे
 क्याकि कमल का फूल भगवान को प्यारा है
 सीता हाथ में दीने का घटा लेकर
 पानी मरग क लिए चली तब राजा
 रामचंद्र ने उस पूछा प्रोच कहा
 गीता तुम सदा बहार की
 तरह फलो फूलो

सप्रहण व अनुवाद
 गिरिधर योगेश्वर

बारें ता बरें माए ! मैं घरें आया,
 नूह तेरी नजरी नी आई ऐ !
 निद्रा दी बाहली पुतरा ! चिन्ता दी मारी,
 राजे दी बेटी नई सेई ऐ !
 उठदा कद जी बागा जो जादा,
 तूते दी छिगी ल्याया बढडी ऐ ।
 इक छिटी मारी क दें दूई छिटी गूरी,
 राजे दी बेटी म्यो ज गो ऐ ।
 दूई छिगी मारी क दें त्री छिटी गूरी,
 राजे दी बेटी यों जागी ऐ ।
 चुकेया ऐ हत्य कदे मुह पर फेरया
 राजे दी बेटी रेही ऐ मरी ऐ ।
 चनण कटाया क दें चिखिया घणाई,
 नारी जो दाग दुषाया ऐ ।
 हड्डिया बटालिया क दें बटुए च पाईया,
 गगा-जमना रढाईया ऐ ।
 क न ता छेदे क दें मुद्रा जे पाईया
 कीता ऐ जोगिया दा भस ऐ ।
 मरि-मरि जाया माए मुण्डा दिए वरनी,
 मूइया जो मार दुभाई ऐ ।
 जोगी मैं होया माए बैरागी मैं होया
 तेरे मैं देसे माए कदि बी नी आंगा,
 मूइया जो मार दुभाई ऐ ।

हिंदी अनुवाद

हे सास ! बारह वर्ष विवाह किए हो गए
 तरा बेटा नजर नहीं आया ?
 हे बहू ! शीघ्रता मत करो न ही अघाकुल हो
 मेरा बेटा बागो मे आ गया है ।
 हे सास ! मैं पति के लिए पलंग
 नया अपनी चारपाई को कहा बिछाऊ ?
 हे बहू ! बंद कमरे (प्रोबरी) मे पति के पलंग को बिछा दो
 और तेरी चारपाई दूसरी मजिल पर रहेगी ।

गुरमा गीत

लाहल के तोद साईट म गैमूर नामक स्थान पर एक वीद्ध-विहार है। जिसका नाम 'सम्तान छोलीग' तथा स्थायी भाषा मे 'गैमूर गोनपा' के नाम से जाना जाता है। एक वार उधर धमप्रचाराथ लददाख से प्रसिद्ध कलाकार एव महान दाशनिक लामा टशी तान पैल पधारे। वह 'आचाय पद्य सम्भव' का जीवन-चरित लकडी के ऊपर खुदाई परशीड' तैयार करवाना चाहते थे। तब मठ के लामा लोग तथा गाव के लोगो से सलाह मशवरा किया। अन्त मे 'परशीट' निमाण करने का निणय लिया गया।

आचाय जी की जीवनी की पुस्तक का नाम लेहु दुनमा' अथवा सप्त परिच्छेद है। गाव वालो ने उस शुभकाय के लिए दिल खोल कर दान और सहयोग दिया। उस परशीड' का काय पूरा हो जान के पश्चात एक दिन विशाल समारोह आयोजित किया गया। जिसमे गाव वाले तथा लामा लोग सम्मिलित हुए। इस काय मे लोगो की श्रद्धा एव उत्साह को देखकर प्रसिद्ध वैद्य भिक्षु जम्बा डो डुब ने भक्ति गीत की रचना की जो 'गुरमा' गीत अथवा 'छोतु' से प्रसिद्ध है। इस गुरमा- गीत को उस समारोह मे गाया गया था। आज भा यह भक्ति गीत लोगो की जुवान पर है और आचायपद्य सम्भव की जीवनी का 'परशीड' भी उसी गोनपा मे सुराक्षित है।

हिमलयी मुल जोड गरजा फाग प जिङ खाम
 दम छो डुब प ति नस छा खार सम्तान छा सीग ।
 ला लम खा ला म्बु वा ठी दुड ता दुन ग्यल मो
 लीग जि मुन पा सेल छीर के गुई पल दु थर ता ।
 दद दन खाला म्बु वे सोल देब लेह दुन मा
 छोबीन पर गो ठुल खोर गेग मेद छुल जिन डुब सोड ।
 टगी लु याड बुल लो तान पा छोग चुर पैल वे
 गा किद तेन डेल जाम साड दम छोीग चीग पे डा चुन ।
 लो सेम चिग दुक्ष डील नस तान दोन जा वा डुब पे
 गा किद जमक्ष ला जिगक्ष दड तान जिन टशी तान पैल ।
 छोद योन दम छोीग दन प डेल घोब दे छैन जिड मा
 जल वे तेन डेल जोम सोडा छाड छोद जम्वा डो डुब ।
 जमक्ष गा किद पे लु याड दाग नाग सोग नस बुल लो
 दिर बद गेवे थु ला गग छोीग दम स्त्रीद दुदु चाम ।
 छाद योन छब स्त्रीद ग्यस शीड कल ग्यार जब पद तान सीग
 स्त्री जि दम लेगक्ष गोड फील गे चुई यल ला चोद चीड ।
 थर थुग नम ग्येन घोब पे मोन दुन यीद जिन डुब सीग
 भला लाब सुम ठी तेड यो मेद तान पर जुग मोन ।

हिंदी अनुवाद

हिमालय की घाटी गरजा (लाहल) आर्यों की भूमि
 घर्मोपदेश तथा साधना को भूमि घमचक्र सम्तान लींग ।
 आकाश में चमकता हुआ सूर्य तथा चंद्रमा जिस प्रकार अघकार को मिटाता है
 उसी प्रकार चारा द्वीपों के लागे का (अज्ञानरूपी) अघकार गुरु मिटाता है ।
 श्रद्धालुओं ने दान देकर लेहु दुनमा नामक पुस्तक का
 घम शानाथ पर बिना विघ्न बाधा से निर्माण किया
 प्रथ (हम) ममल भक्ति गीत गायें बुद्ध शासन को दस दिशाओं में फैलायें
 भ्रान दमय घुम शकुन है एक गुरु शिष्य (लोग) सब इकट्ठे हुए ।
 (प्रथ) तन मन से एक होकर नित्य स्थाई (सुख) की खोज की जाय
 (अथ लोग) भ्रानद सुख ले (भोग) रहे हैं उनको देखो,
 शासनधर टशी तान पैल ।
 गुरु तथा दाता (दान) के गुण भावना से, यधुर सम्बन्ध से दानो क्षत्रों में
 दशन ह! ऐसा लक्षण दिखाई देता है मिथू जम्वा डो डुल ।

भाव दमय मधुर गीत हर्षाल्लास का वातावरण
 कुशल कार्यों के बल स कृष्णपक्ष रूपी भूत प्रेत (अ धकार) नष्ट हो ।
 गुरु शिष्य परम्परा अत कल्प तक अटूट रहे
 इस लाट तथा परलाक (दोनो) मे दश कुशल के नियमो का पालन कर
 अततोयत्वा बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए जय शिक्षा का अध्ययन जारी रखें
 इस प्रकार अटूट श्रद्धा प्रदर्शित करता हू और प्रणिधान करता हू ●

घटना प्रधान गीत

लाहुल क्षेत्र

बुस्तीग का गीत

लाहुल के तोद घाटी मे एक किंवदन्ति है कि प्राचीन काल म एक वार सभी लडकिया कुवारी रह गई । मा चाप परेशान हो गये, किसी की भी शादी व्याह का सम्बन्ध नही बन पा रहा था । लडकियो की माताओ का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था । लडकियो के ऊपर उन की माताओ ने एक गीत तैयार किया जिस दिन गाव मे मेला था उस दिन उस गाने को पेश किया गया । गीत ने लोगो का मन मोह लिया और वे लडकियो की ओर आकर्षित हो गए । उस के बाद लडकियो की अन्य गाव के लडको के साथ शादिया होने लगी । तब से लेकर आज तक इस गीत को 'बु स्तीग' के गीत से जाना जाता है । इस गीत मे ऊचाई निचाई मोटापन तथा पतलापन को तीन-तीन विशेषताओ का वर्णन किया गया है ।

था वा ला घो मुम घो वा ला घो मुम
 दे दे घो ना जंग मे दे दे वा ना जग ।
 यर बान चोग डे हर मा यर कोन चोग डे हर मो

कहते हैं। एक रस्ती में गाय पक्तिबद्ध बाध दी जाती है। गलिहान के बीच खवा गाढ दिया जाता और उस से गायों को बाधकर घुमाते हैं जिस गाय को खवे के साथ आगे बाधते हैं उसे 'मामा' तथा आखिर में बधी गाय को 'पयारपा' कहते हैं।

'होलो' कहकर पुकारते, गाय को घुमाते हैं। अंत में गाय छोड़ने से पूर्व उसका सिर से लेकर पाव तक वर्णन करके वर मागते हैं— जिसे 'होगबुर' कहते हैं।

मामे मल दु खोरो रो
लाड छैन था ना हीरो हीरो
हो लो हो लो
हुल ताग टकी गोर मो रु
सेर मो नस ला रिग पा छाग
हो लो हा ला
गो मो रि यि ग्यलमो रु होग मा बुर छाग मा बुर ।
मा मो होद कि ग्यलपा कोर सुम ।
सावा डूल कर मे लोग दु होग मा बुर छाग मा बुर ।
मा मो
मीग मा गाड सि नरा रु हाग मा बुर, छाग मा बुर ।
मा मो
मिग मा जिम छुड रयील डा रु हाग मा बुर, छाग मा बुर ।
मा मो
मम योग गो रयी थे बोड दु हाग मा बुर छाग मा बुर ।
मा मो
ना मो सड दाड बुस ड्रा रु होग मा बुर, छाग मा बुर ।
मा मो
चेमो दर लिङ्ग युग ड्रा रु होंग मा बुर, छाग मा बुर ।
मा मो
सोजा दुड ड्राड ठेंगवा ग्युस ड्रा रु हाग मा बुर छाग मा बुर ।
मा मो
यल गब छो की सग गीड ड्रा वा रु, होंग मा बुर छाग मा बुर ।

होंग चर थे

गेहूँ और जौ की गहाई के बाद, मिले जुले अनाज तथा भूसे को 'होंग' कहते हैं। अब गहाई का काम तो कर दिया गया है। मगर अनाज तथा भूसे को अलग करने के लिए हवा की जरूरत पड़ी है। इसमें हवा की प्रशंसा तथा मान बढ़ाते हुए हवा को बुलाते हैं। यह तो सोने चांदी सी हवा है। ग्राम देवता और कुबेर (हमें) अनाज का वर प्रदान करें।

'होंग' को दो सिरे वाली लकड़ी से हवा में उठाते हुए हवा से भूसे को अलग करते हैं। दो आदमी दाईं तरफ और दो बाईं तरफ बैठते हैं।

हवा आज हमारे खालिहान में शीघ्र तथा तेज होकर पधारे क्योंकि गहाई तो कर रखी है मगर आदमी कम हैं।

कु ह रु बान बान पा जिग वोन पा जिग
हुल ताग टशी मोर मो रु
डोन मो डु यो छर जिग वेवस
छर दाड ड्रा वे होंग जिग सल
जमभला होंग ला कयोद
जम सेर रा होंग ला कयोद।
यमि सेर लुड लुड पा ना
यमि सेर लुड लुड पा ना

सेर गि गोमो ठीग मे जुग
 सेर गि गोमा ठीग मे जुग
 सेर लुड वेद ला होग सा नयोद
 ययि डुल लुड लुड पा ना
 ययि डुल लुड लुड पा ना
 डुल गि गोमो ठीग मे जुग
 डुल गि गोमा ठीग मे जुग
 डुल लुड वेद ला होग सा नयोद ।
 ययि यु लुड लुड पा ना
 ययि यु लुड लुड पा ना
 यु यी गोमो ठीग मे जुग
 यु यी गोमा ठीग मे जुग
 यु लुड वेद ला होग सा नयोद ।
 नस दाड फुग मा ड्रान-ड्रा सल
 ख्यीम सेर लुड पो मि लाग सल । ●

हि वो अनुवाद

(कुछ र ह बोन बोन, चीन पा प्रिग बोन पा जिग —
 इन शब्दों का विशेषार्थ नहीं है भाकार प्रकार बोलने का ढंग ही है)
 गोलाकार मंगलमय खालिहान में
 भनाज रूपी हरिमाली की वर्षा कीजिए
 वर्षा की तरह भानाज रूपी वर प्रदान कीजिए
 हे जम्मला ! वर प्रदान करने हेतु (हमारे यहाँ) पधारें ।
 उस सोने की घाटी (नामा) में
 सोने के सिर वाले पवित्रबद्ध विराजमान हैं
 सोने की हवा बनकर वर प्रदान करने के लिए आईए ।
 उस चांदी की घाटी में
 चांदी के सिर वाले पवित्रबद्ध विराजमान हैं
 चांदी की वायु बनकर वर प्रदान के लिए आईए ।
 उस यु (फिरोजा) की घाटी में
 यु के सिर वाले पवित्रबद्ध विराजमान हैं

इत्त बो बठोरी भी में तेरी हे
 हाय बो मेरेया
 मोति रिया राया पेया थेला हे
 बस तो तेरा गीत बढा छैला हे
 हाय बो मेरेया बर्माभा छैला हे
 तेरे साही मण्हू मिनी हूणा हे
 हाय बो मेरेया बर्माभा छैला हे
 तेरा साही मण्हू मिनी हूणा हे

हिन्दी अनुवाद

कर्मों तुम कितने सुन्दर हो
 आप सरीखे कोई मनुष्य नहीं पागा
 त्रिकु भोड़ पर टाच जल रही है
 मामा मानज की जाड़ी भा रही है ।
 बिसु मामा ने तुम्हारी सगाई करवा दी
 दूसरे मामा ने दिल की बात कमाई
 बिसु मामा दूकान पर इ तजार करता
 तो दूसरा मामा तुम्ह जोत (ऊचे पहाड़) पर मारता
 जब ऊची ऊची पहाड़िया पर बर्फ गिर रही थी तो तुस गम से ब्याकुल शराब
 पीने लग (पडे अपने अतमन मे कहता कि) भाघी पीऊगा और भाघी जब म
 र खु गा और भाघी ठेके की (अ प्रेजी) मगवाऊगा (फिर अपने ही मन म विचार
 करता है कि) यदि ठेके जाऊगा तो सब जान जायेंगे और फिर ठेके की थोडा
 सी भी पीओ तो बड़ी लग जाती है तीसा के पांच सात लोग भाये और
 कर्मों को मार कर उसकी लाश नाले मे फेंक गए तीसा से टेलिफोन होता है
 कि मोती-की राख मे खून हुआ है । कर्मों के पांच भाई सिपाही थे फिर भी कर्मों
 की लाश कहा गई सारे चुराही पूछ रहे थे ।
 माता गाय दूह रही थी जब इस घटना का पता चला तो वह मूसला-
 धार भासू भी साथ बरसाती रही । जब गाय दूहकर दूध लेकर अ दर (घर)
 भाई तो चक्कर खाकर दूध सहित गिर पड़ी ।
 जब इसकी बहिन उमा को पता चला तो वह चिन्ताती हुई भाई और कहती
 कि तेरे बिन हम कैसे जीयेंगे
 रोती हुई हरदेई बहन कहती कि वह अब मिर्जर किसे बाधेगी ।
 रोता चिन्ताता पिता भाया और गले से कस कस कर लगाने लगा

द दे धो ना जग भे द दे धा ना जग ।
 थो वा ला थो सुम थो वा ला थो सुम
 द दे धा ना जग भे दे दे धा ना जग ।
 मा खांग डे केस ताग मा खांग डे केस ताग
 द दे धा ना जग भे दे दे धो ना जग ।
 था वा ला था सुम थो वाला था सुम
 दे द धो ना जग भे दे द थो ना जग ।
 मा जिग डे घुर गा मा जिग ट घुर गा
 द द धो ना जग भे दे द धा ना जग ।
 मा वा ला मा सुम मा वा ला मा सुम
 द दे मा ना जग भे दे द मा ना जग
 मा खांग ड थम पा मा खांग डे थम पा
 दे दे मा ना जग भे दे दे मा ना जग ।
 मा वाला मा सुम मा वाला मा सुम
 द द मा ना जग भे द द मा ना जग
 बु स्त्रीग ड धीन मा बु स्त्रीग ट मान मा
 दे द मा ना जग भे, द द मा ना जग ।
 मा वा ला मा सुम मा वा ला मा सुम
 द दे मा ना जग भे द द मा ना जग ।
 मा जिड डे नोन दव मा जिड डे लान दव
 दे दे मा ना जग भे दे दे मा ना जग ।
 वाम पा ला वाम सुम वाम पा ला वाम सुम
 दे दे वाम ना जग भे दे दे वाम ना जग ।
 मा खांग ड का वा पा खांग ड का वा
 दे दे वाम ना जग भे दे दे वाम ना जग ।
 वाम पा ला वाम सुम वाम पा ला वाम सुम
 दे दे वाम ना जग भे दे द वाम ना जग ।
 बु स्त्रीग ड पुग पा बु स्त्रीग डे पुग पा
 द दे वाम ना जग भे दे दे वाम ना जग ।
 वाम पा ला वाम सुम वाम पा ला वाम सुम
 दे दे वाम ना जग भे दे दे वाम ना जग ।
 गो रूपी डे छे वा गो रूपी ड छे वा
 दे दे वाम ना जग भे दे दे वाम ना जग
 ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम

दे दे ठा ना जग मे दे दे ठा ना जग ।
 ग्यलमा ड दर कुद ग्यलमो डे टर कुद
 दे दे ठा ना जग मे दे दे ठा ना जग ।
 ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम^१ १ ५
 दे दे ठा ना जग मे दे दे ठा ना जग ।
 वु स्नीड डे केद पा वु स्नीड डे केद पा
 दे दे ठा ना जग मे, दे दे ठा ना जग ।
 ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम
 दे दे ठा ना जग मे दे दे ठा ना जग ।
 जोमा डे रु चा जोमो डे रु चा
 दे दे ठा ना जग मे दे दे ठा ना जग २

हिन्दी अनुवाद

ऊ चाई तीन प्रकार से होनी चाहिये
 वह उसी मे शोभायमान होती है ।
 जानता हू उसी ऊ चाई मे सु-दरता है ।
 भगवान की महिमा ।
 वह उसी म शोभायमान हाती है ।
 जानता हू उसी ट चाई मे सु-दरता है ।
 ऊ चाई तान प्रकार की हानी चाहिये
 वह उसी म शोभायमान होती है ।
 जानता हू उसी ऊ चाई मे सु-दरता है ।
 (यदि घर बने तो) मकान के खम्बे क पाए का पत्थर ।
 शोभायमान हाता है ।
 जानता हू उसी ऊ चाई मे सु-दरता है ।
 ऊ चाई म तीन प्रकार से ऊ चा होना चाहिये
 वह उसी मे शोभायमान होता है
 जानता हू उसी ऊ चाई मे सु-दरता है ।
 (यदि खेत मे पानी की व्यवस्था करनी हा तो हमशा)
 नहर का सिरा ऊ चाई पर हाना चाहिये,
 वह उसी मे शोभायमान होता है,
 जानता हू उसी ऊ चाई मे सु-दरता है ।
 भुकाव तीन प्रकार का होना चाहिये
 वह उस म शोभायमान होता है

जानता हूँ उसी भुकाव में सुदरता है ।
 घर का सीढियों में कम ऊँचाई होनी चाहिये
 जानता हूँ उनका कम ऊँचा होने में सुदरता है ।
 तीन प्रकार का भुकाव होना चाहिये
 वह ताँ भुदा होने में ही शोभायमान है
 जानता हूँ उसी भुकाव में सुदरता है ।।
 लडकी का भवें

भुका होना शोभायमान है,
 जानता हूँ उसी भुकाव में सुदरता है
 तीन प्रकार का भुकाव होना चाहिये
 वह भुकाव तो शोभायमान होता है
 जानता हूँ, उसी भुकाव में सुदरता है ।

खेती की फसल की पत्तियाँ
 झुकी होनी शोभायमान हैं ।

मोटापा तीन प्रकार का होना चाहिये
 जानता हूँ, उसी मोटाप में सुदरता है ।
 (यदि घर बने तो) खूबा मोटा होना चाहिये,
 वह ताँ मोटेपन में शोभायमान है,
 जानता हूँ उसी मोटाप में सुदरता है ।

तीन प्रकार का मोटापा होना चाहिये
 वह मोटा होने में शोभायमान है,
 जानता हूँ उसी मोटापे में सुदरता है ।

लडकियाँ की भुजाँ मोटी होनी चाहिये
 वही मोटापा शोभायमान होता है
 जानता हूँ उसी मोटापे में सुदरता है ।

(यदि कुत्ता पालें तो) कुत्ते का दाँत मोटा होना चाहिये
 वही मोटापा शोभायमान है
 जानता हूँ उसी मोटापे में सुदरता है ।

तीन प्रकार का बारीक होना चाहिये,
 वह उसी बारीकी में शोभायमान है
 जानता हूँ, वह उसी बारीकी में सुदर है ।

(जो बत्ता हुआ) रेशम का पागा
 वह बारीकी में शोभायमान है
 जानता हूँ उसी बारीकी में सुदर है ।

तीन प्रकार का पतलापन होना चाहिये,
 उस पतले में ही शामा होती है,
 जानता हूँ, उसी पतलेपन में सुन्दरता है ।
 कया की कमर
 वह पतलेपन में ही शामायमान है,
 जानता हूँ उसी पतलेपन में सुन्दरता है ।
 तीन प्रकार का पतलापन होना चाहिये
 उसी पतलेपन में शोभा है
 जानता हूँ उसी पतलेपन में सुन्दरता है ।
 उसी बरीकी में शामा है ।
 जानता हूँ उसी बरीकी में सुन्दरता है ॐ

श्रम गीत
 लाहुल क्षेत्र

खुई कोर थे

काम को हल्का करने एवं थकान को दूर करने लिए काम करने वाले (श्रमिक) गीत गाते हैं । वे जो काम किया जाता है उस काम से सम्बन्धित जो गीत गाते हैं वह लोक गीत बन जाता है । ऐसा ही लाहुल के तोद घाटी एवं स्पीति-क्षेत्र में गहाई का काम करते समय गाए जाने वाले गीत में लगभग समानता और शब्दों में एकरूपता है । खलिहान, लगभग सभी अपने घर के सामने ही बनाते हैं क्योंकि एक तो अनाज एवं भूसा आदि अन्दर करने में आसानी हो जाती है व दूसरी बात पशुओं से रक्षा करने के लिए इसकी देखभाल भी सरल हो जाती है ।

गहाई के कामों को गाय से ही लिया जाता है । लाहुल स्पीति में भी गाय प्रयोग करते हैं । गहाई के काम को 'खुई' या 'युल लस'

डालकर देवता के निमित्त रखना) पाया जाए। उम की दशा और भी हृदय विदारक नजर आती है जब वह मिट्टी के घर्तन में दो जनों के लिए भोजन तैयार करती परंतु उसे अकेले ही खाना पड़ता है। उस दिन क्या बीतती होगी जब वह उस की प्रतीक्षा में दो के लिए सेज तैयार करती है पर बेचारी काफ़ी प्रतीक्षा के बाद अकेली सोती है

श्रम ही तो है जो दो हृदयों को तड़फावा है।

संग्रहण व अनुवाद

श्रमर सिंह रणपतिया

गा. उ. वि.

श्रम प्रधान गीत
हमीरपुर क्षेत्र

कालुआ मजूरा दूर तेरा डेरा

कालू नाम का एक मजूदर जो घर से दूर जंगलों में मजदूरी करता है, की पत्नी घर पर अपने पति को याद करती है कि बहुत समय हो गया तुम्हें गए अब घर आ भी जाओ।

कालुआ मजूरा ओ दूर तेरा डेरा ओ कदी घरओणा
परदेसी सज्जणा ओ बीती गया फौगणा ओ कदी घर ओणा
जगला तू फिरदा ओ कडया च रुलदा ओ
कून तेरे डुलदा बुरा हाल घर दा,
मेरया प्रेमिया बीती गया फौगणा कदी घरे ओणा।
काम्या मजूरा

धुप्पा तू जल्दा आ पालें तू ठरदा ओ
 बुरा हाल पर दा परदेसो सज्जना ओ बीती गया फौगणा आ
 बंदी घर ओणा, काम्या मजुरा
 दियालिया दे वक्त् ओ लाहडिया दी गिचडी
 सँ निजजो किया बिसरी
 परदम सज्जना बंदी घर ओणा— काम्या मजुरा
 राती न मौदी में दिहाडिया नी बौह, दी आ
 याद तरी जीदी
 मरया प्रेमिया दिला दआ मँहरमां ओ
 बीती गया फौगणा आ बंदी घर जीणा
 कालुआ मजुरा दूर तेरा डेरा आ बंदी घर ओणा ०

हि दी अनुवाद

मेरे मजदूर प्रेमी पता नहीं तू यहाँ से कितनी दूर रहता है। जंगल में
 मजदूरी के लिए दर दर घूमता है तू न पसीना एक करता है, अब तुम घर आ जाओ,
 घर का बुरा हाल है, तुम ने फागुन मास में आने का वचन दिया था वह भी बीत
 गया है, तुम कब घर आओगे ?

मेरे परदेस- गए साजनें तू घूप में काम करता हुआ जलना है ठण्ड में ठिठुरता
 है तुमने कब घर आओगे घर का बुरी हाल है फागुन बीत चुका है अब तो घर आ
 जाओ ।

मेरे प्रियतम दीवाली के अवसर पर बबक (विशेष खाना) खाती बार मुझे बार
 बार तुम्हारी याद मँताती रही इतने सुन्दर खाने को भी तू भूल गया और इत
 खौहारी पर तू नहीं ध्याया, अब तो आ जा ।

मेरे मन की बात जाननें और समझनें वाले मेरे प्रेमी मैं रात को भी नहीं सोती
 दिन भर काम बाज में लगी रहती हूँ । एक क्षण भी नहीं बैठती पर फिर भी जब
 तुम्हारी याद आती है मन को बड़ा दुःख होता है । मुझ से दूर रहने वाले मेरे प्रेमी
 अब तो फाल्गुन भी बीत गया है अब तो घर आ जाओ !

संपूर्ण व अनुवाद
 कमल हमीरपुरी

खेत छलिहान मे कार्य कर रही नवयौवना खेत के काम मे व्यस्त है । ऊपर से पडती सूर्य की तेज किरणों भी उनके श्रमो को निहार रही हैं । अन्य महिलाएँ उसके साथ काम करती हुई थकान को कम करने के लिए निम्न गीत गाती हैं -

घुप लगी सिरा सामणे मिरा सामणे, मालुआ डिगी आ रह ता
असा जाणा जिले बागडे जिले बागडे, डरा जमुए लाणा
घुप लगी भत्य सामणे बिदिया डिगी ओ रँह दी
असा जाणा जिले बागडे, जिले बागडे डरा जमुए लाणा
घुप लगी वाही सामणे चूडा डिगी ओ रँह, ते
असा जाणा जिले बागडे
घुप लगी पैरा सामणे पैरा सामणे पह्णिया डिगी ओ जादी
असा जाणा जिले बागडे
घुप लगी गले सामणे, गले सामणे हार डिगी ओ रह्दा
असा जाणा जिले बागडे, जिले बागडे डरा जमुए लाणा

हिंदी अनुवाद

मिर पर तेज घूप पड रही जिसके कारण मिर पर ओढे हुए दुपट्टे का गोटा ऐसा चमक रहा है जैसे उस मे आग सी लपटें हों । हम जिला बागडा जाएंग और फिर अपना डेरा जम्मू जाकर जमाएंगे ।

तेज घूप माथे पर पड रही जिस के कारण माथे की बिन्धिया ऐसे लग रही है जैसे

पित्तीराम पिराम फुआल

लोकगीत में चरवाहो की कडिनाइयो, देवी-देवता सम्बन्धी विश्वासो तथा उनकी मान्यताओ और प्रसन्ता तथा दुख के अनुभवो का शब्द-चित्र उकेरा गया है। सोनिगे (सावणी) देविया पर्वतशिखरो के देवता माने जाते हैं। पर्वतशिखरो (कण्डो) में पहुचते ही चरवाहे (फुआल) उनकी पूजा बलि देकर करते हैं। यदि विधिवत् पूजा न की जाए तो भेड गुम हो जाती हैं, ऐसा विश्वास किया जाता है।

गोले गो होना
हाया वे होना ।
घड सा पावड चो
इ विण्डो शालड् ।
इ विण्डो शालड् नो
हातो शालड् ?
नो शालड्, ता लोना
बोलो डोम्बोर शालड् ।
शालड्, ता डोम्बोर,
पुआन हात दुग्योश ?
पुआन ता लोमा,
माटुआ लो छाडा ।
माटुआ लो छाडा,
हुरोमुआ ता वानजाम ।
हुरमुआ वानजास
नामड ठ दुग्योश ?
नामड ता लोमा
पोती राम नेगी ।

हिंदी अनुवाद

टेक

ऊपर की ओर कण्डे में
भेड बकरियो का एक झुण्ड ।
एक झुण्ड, यह किसका
झुण्ड ?
यह झुण्ड कहे तो
देवता का झुण्ड ।
झुण्ड तो देवता का
पुआल (चरवाहा) कौन है ?
पुआल कहे तो
माट का लडका ।
माट का लडका
हुरम का मानजा ।
हुरम के मानजा का
नाम क्या है ?
नाम कहे तो,
पोतिराम नेगी ।

ओमसा ओमसी अड
 फालोरया कारा ।
 अड ती तरया खाडो,
 घण्ठडी वाज्यो ।
 पितीराम लीतो-या
 पचो वाईयार ।
 या पञ्चो वड्यार
 वर कयोची शेस मिग ।
 वर कयोची शेसमिग
 ज्ञोनमिग्या मोडगी ।
 ज्ञोनमिग्या मोडगी,
 शुआलो चीमे ।
 शुआलो चीमे
 छोटास छोटेम
 ओमरड ।

पहले ही पहले मेरा
 फलोरेया (नाम वाला) मेमना-
 मेरा चितकबरे मुह
 वाला खडडू (मेमना), घण्टी
 बजाते हुए ।
 पितीराम ने कहा-
 ऐ साथी भाइयो !
 ऐ पचो भाइया, दूर
 से ही पहचानने का-
 दूर से पहचानने का,
 पसंद की साथी-
 पसंद की साथिन (प्रेमिका)
 शुआल की लडकी ।
 शुआल की लडकी,
 छोटे छोटे कद की ।

सग्रह व अनुवाद
 डा० बशीराम शर्मा

